सं॰ कुलक्षण (कु=बुरा, लक्षण=चिह्न) पु॰ बुरा चलन, कुस्वभाव कुचाल ।

प्रा॰ कुलाच स्त्री॰ कूद, फांद, उछाल, लपक, छलांग ।

प्रा॰ कुलांचमारना–बोल॰ छलांग मारना, फांदना ।

प्रा॰ कुम्हलाना–क्रि॰ अ॰ मुरझाना, सूखना ।

फ़ा॰ कुलह, कुलाह } टोपी, ऊंचीटोपी ।

सं॰ कुलाचार (कुल=घराना, आचार =चलन, वा धर्म) पु॰ कुलधर्म्म, कुलव्यवहार, खानदानी रस्म ।

सं॰ कुलाल (कुल्=इकट्ठा करना) पु॰ कुम्हार, मिट्टी के बरतन बनाने वाला, कुम्भकार ।

प्रा॰ कुल्हिया–स्त्री॰ कुलहड़ी, मिट्टी का एक छोटा गोलबरतन ।

प्रा॰ कुल्हियामें गुड़ फोड़ना–बोल॰ किसी कामको छुपे २ करना, जो काम बहुतों से होता है उसको थोड़े आदमियों के साथ करने के लिये परिश्रम करना ।

प्रा॰ कुल्हाड़ी (सं॰कुठारी) स्त्री॰ बसूला, कुलहाड़ी ।

सं॰ कुलिश (कु=बुरी तरह से लिश =थोड़ा करना, वा कुलित्=पहाड़, शी=नाशकरना, वा कुलि=हाथ, शी =सोना) पु॰ वज्र, इन्द्रका शस्त्र ।

सं॰ कुलीन (कुल) गु॰ कुलवान्, अच्छे घराने का, श्रेष्ठ, शरीफ़ ।

सं॰ कुवलय (कु=धरती, वलय=कंकण) पु॰ कमल, कोई सफ़ेद या नीला कमल, नीलोफर ।

सं॰ कुवलिया (कु=बुरा, बल=ज़ोर) पु॰ कंस के हाथी का नाम जिसमें १०००० हाथियों का बल था जिसको श्रीकृष्ण ने मारा ।

सं॰ कुविहङ्ग (कु=बुरा, विहस्=आकाश, गम्=जाना) पु॰ बाज़, जुर्रा, शाहीन ।

सं॰ कुबेर (कुब्=फैलाना अपने धन को, वा कु=पृथ्वी, वृ=ढकना, अपने धन से, वा कु=बुरा, बेर=शरीर) पु॰ धन का देवता, यक्षोंका राजा, उत्तर दिशाका दिक्पाल ।

सं॰ कुश (कु=पृथ्वी, शी=सोना, वा कु=पाप, शो=नाशकरना, वा कुश्=मिलना) पु॰ एक प्रकारकी घास, दर्भ, डाभ, कुशा, २ रामचन्द्र का बेटा ।

सं॰ कुशल (कुश=मिलना, वा कु =पृथ्वी, शल=जाना) पु॰ कल्याण, मंगल, चैन चान, गु॰ चतुर ।

सं॰ कुशलक्षेम (कुशल + क्षेम) पु॰ कुशल मंगल, चैनचान ।

प्रा०कुशलात } (सं०कुशल) स्त्री०
कुसरात } कुशल क्षेम, चैन चान, अमन अमान ।

सं० कुशाग्रबुद्धि (कुश+अग्र+बुद्धि) स्त्री० तेजअक़्ल, पैनीबुद्धि, तीव्र बुद्धि ।

सं०कुशूला-पु० डिहरी, कुठिली ।

सं० कुष्ठ (कुष्=निकालना)पु०कोढ़, एक प्रकार का रोग जो अठारह प्रकार का है, उन में से सात तरह का तो बड़ा कठोर और दुःखदायी होताहै, और ११ तरह का हलका और थोड़ा दुःख देताहै ।

सं० कुष्ठनाशिनी (कुष्ठ=कोढ़, नाशिनी=नाश करनेवाली) स्त्री० एक बेली का नाम, सोमराज बेली ।

सं० कुष्ठी (कुष्ठ) गु० कोढ़ी ।

सं० कुष्माण्ड } (कु=थोड़ी, उष्मा
कूष्माण्ड } =गरमी, अण्ड=बीज, अर्थात् जिसके बीज में थोड़ी गरमी है) पु० कोहड़े का फल ।

सं० कुसंग (कु=बुरा, सङ्ग=साथ) पु० बुरी संगति, बुरों का साथ, बद सोहबत ।

सं० कुसुम (कुस्=मिलना, वा कु=पृथ्वी, स्मि=खिलना) पु० फूल, २ लाल फूल जिससे कपड़े लाल रँगे जाते हैं ।

सं० कुसुमशर (कुसुम=फूल, शर=बाण) पु० कामदेव ।

सं० कुसुमित (कुसुम) गु० खिला हुआ, फूलाहुआ, प्रफुल्लित ।

सं० कुसुम्भ (कुस्=मिलना, वा कु=पृथ्वी, शुम्भ्=चमकता) पु०कुसुम, लाल फूल जिससे कपड़े लालरँगे जातेहैं, स्वर्ण, सोना ।

प्रा० कुसुम्भा (सं० कुसुम्भ) पु० कुसुम का रंग, २ छानी हुई भंग ।

सं० कुस्वप्न (कु=बुरा,स्वप्न=सपना) पु० बुरा सपना ।

सं० कुहक (कुह+अक,कुह=आश्चर्य) क० पु० कुटिल, फ़रेबी, छली, मायावी, इन्द्रजाली, बाज़ीगर ।

प्रा० कुहड़ } (सं० कूष्मांड) पु०
कुम्हड़ } कोहड़े का फल ।

प्रा० कुहराम-पु० विलाप, रोना, कलपना । [जाना ।

प्रा० कुहाव-भा० स्त्री० रूठना, रूठ

प्रा० कुहासा (सं० कुहेलिका, कु=धरती, हेड्=घेरना) पु० कुहर, कोहर, धूंध ।

प्रा० कुहुक } (कुह=अचंभा करता)
सं० कुहू } स्त्री० कोयलकीबोली ।

प्रा०कुआं } (सं० कूप) पु० कुवा,
कुआ } इन्दारा ।

प्रा० कूंची (सं० कूची, कु=शब्द

करना) स्त्री० झाड़ने की चीज, पोचारा देनेकी बढ़नी ।

प्रा० कूंडी-स्त्री० भांग आदि पीसने का बरतन, लोहे की टोपी ।

प्रा० कूंतना } कूतना } क्रि० स० मोल ठहरना, मोल जाँचना, मोल अटकलना ।

प्रा० कूकना (सं०कू=शब्दकरना) क्रि० अ० चिल्लाना, बोलना, कुहू-कुहू करना ।

प्रा० कूकर (सं०कुक्कुर) पु०कुत्ता ।

प्रा० कूजना (सं०कूजन,कूज्=शब्द करना)क्रि०अ०शब्दकरना, बोलना ।

सं०कूट (कूट्=गलना, वा ढकना) पु० पहाड़ की चोटी, २ ढेर, ३ छल, कपट, झूंठ ।

प्रा० कूट-पु० गला हुआ कागज जो दफ़्ती बनाने के काम में आता है, २ स्त्री० नकल, भड़ैती, बंदरबाजी ।

प्रा० कूटना (सं० कुट्टन, कुट्ट=काटना) क्रि० स० टुकड़े २ करना, चूरना, कुचलना, तोड़ना, २पीटना, मारना, लठियाना ।

प्रा० कूड़ा-पु० झाड़न, बुहारन, कुर्कुट, घास पात, अगड़ बगड़, घास फूस, कचरा ।

प्रा० कूडि-स्त्री० लोहे की टोपी ।

प्रा० कूढ़-गु० मूर्ख, मूढ, भोंदू, गँवार ।

प्रा० कूदना } कुदकना } (सं०कूर्दन,कूर्द्=खेलना) क्रि० अ० उछलना, फांदना, २ प्रसन्न होना, खुश होना ।

सं० कूप-कू=शब्द करना, जिसमें मेढ़क शब्द करते हैं, वा कु=थोड़ा, आप=पानी (जिसमें) पु० कूवा, कूआं, इंदारा ।

प्रा० कूर (सं० क्रूर) गु० निठुर, निर्दयी,कठोर,२मूर्ख,भोंदू,गँवार,कूढ़ ।

सं०कूर्म्म (कु=बुरा वा थोड़ा,ऊर्मि बेग जिसका) पु० कछुवा,कच्छप,कमठ ।

सं० कूल (कूल्=घेरना, ढकना वा रोकना) पु० तीर, तट, किनारा ।

सं० कूलद्रुम, पु० तटस्थवृक्ष, नदी के किनारे के वृक्ष ।

प्रा०कूला, पु० पूठ, चूतड़, नितम्ब ।

अ० कूली } कुली } पु० मजदूर, बोझा ढोने वाला,पोठिया,मोटिया ।

सं०कृच्छ्र-भा०पु० कठिनता,सख़्ती ।

सं०कृत(कृ=करना) र्म० कियाहुआ, बनाया हुआ, रचित, पु० सतयुग २ फल ।

सं० कृतकार्य्य (कृत=किया, कार्य्य =काम) र्म० पु० फलीभूत, कामयाब, कामपूराहुआ ।

सं० कृतकार्य्यता-भा० स्त्री० कामयाबी, काम की पूर्णता ।

सं० कृतकृत्य (कृत=किया, कृत्य= करने योग्य, कृ=करना) र्म्म० पु० योग्य काम को जिसने किया हो, कृतार्थ, कृतकार्य्य, धन्य।

सं० कृतघ्न } (कृत=किया हुआ,
प्रा०कृतघ्नी } हन्=मारना) क० पु० जो उपकार को नहीं माने, गुण नहीं माननेवाला, नमकहराम, ना-शुक्रा, इहसान फ़रामोश।

सं० कृतघ्नता—भा० स्त्री० इहसान फ़रामोशी, उपकारहन।

सं०कृतज्ञ (कृत=कियाहुआ, ज्ञा= जानना) क० पु० जो उपकार को माने, गुण माननेवाला, उपकार माननेवाला, नमकहलाल।

सं० कृतविद्य (कृत=किया हुआ, विद्=जानना) र्म्म० पु० मशकूर, धन्यवादित, शास्त्रज्ञ, अधीतविद्या।

सं० कृतवीर्य्य-पु०पिता, नृपविशेष।

सं० कृतान्त (कृत=किया, अन्त अर्थात् नाश करनेवाला) पु० यम, काल, मौत।

सं० कृतार्थ (कृत=किया, अर्थ= प्रयोजन) र्म्म० पु० जिसने अपना प्रयोजनपूराकियाहो, जिसकी इच्छा पूरी होगई हो, कामयाब, संतुष्ट।

सं० कृति (कृ=करना) स्त्री० कार्य्य, काम, हिंसा, आचरण, उपकार, कारण।

सं० कृत्ति-स्त्री० चर्म्म, चमड़ा, भोज-पत्र, कृत्तिका नक्षत्र, चमड़ेकी रस्सी।

सं० कृत्तिकर (कृत्ति=काम, कृ= करना) क० पु० सेवक, किंकर, उपकारी।

सं० कृत्तिका (कृत्=काटना) स्त्री० तीसरे नक्षत्र का नाम।

सं० कृतिन } क० स्त्री० पण्डित,
कृती } योग्य, लायक़, पुण्य-वान्, निपुण, साधु, कृतार्थ।

सं० कृत्य (कृ=करना) पु० काम करने योग्य काम, कर्त्तव्य कर्म, र्म्म० करने योग्य, कर्त्तव्य।

सं० कृत्रिम (कृ=करना) र्म्म०पु० किया हुआ, बनाया हुआ, बना-वट का, कल्पित, जो असली न हो, मसनुई।

सं० कृत्रिमपुत्र (कृत्रिम=कियाहुआ पुत्र=बेटा) पु० गोद लिया हुआ लड़का, धर्मशास्त्र में बारह प्रकार के पुत्र गिनाये हैं उनमें से एक प्रकार का बेटा।

सं० कृत्स—गु० मध्यगत, आवृत, ढकाहुआ, जलान्तर्गत, डूबाहुआ, पु०संपूर्ण, जल, गंडूष अर्थात् कुल्ला।

सं०कृत्स्न—पु० सम्पूर्ण, सब, जल, कुक्षि, पुट्ठा, कूला, समग्र।

सं० कृपण (कृप्=दुबलाहोना) पु० कंजूस, सूम, दुष्ट, बखील।

सं० कृपणता—भा० स्त्री० क्षुद्रता, कंजूसी, बखीली।

सं० कृपा (कृप्=कृपा करना) स्त्री० दया, अनुग्रह, मिहरबानी।

सं० कृपाण (कृप्=समर्थ होना, वा कृपा=दया, नुद्=जाना) स्त्री० तलवार, खड्ग, खांड़ा, शमशेर।

सं० कृपानिधान (कृपा=दया, निधान=जगह) वि० पु० कृपा के घर, दयालु, कृपालु, कृपा करने वाला, जायमिहरबानी।

सं० कृमि, क्रिमि (क्रम्=जाना) पु० कीड़ा, पतंगा, मकोड़ा, परवाना।

अं० क्रिमिनल=फ़ौजदारी।

सं० कृश (कृश्=पतला होना) गु० दुबला, पतला, दुर्बल, क्षीण, लागर, नक़ीह।

सं० कृशाक्षी (कृश=मन्द, अक्षि=आंख) गु० मन्ददृष्टि, कोताहनज़र।

सं० कृशानु (कृश्=पतलाकरना) पु० आग, अग्नि, आगी, अनल।

सं० कृषक, कृषाण (कृष्=हलजोतना) पु० किसान, हल जोतने वाला।

सं० कृषि (कृष्=हलजोतना) स्त्री० खेती २. धरती।

सं० कृषिकर्म्म-पु० खेती, काश्तकारी।

सं० कृषिकारक (कृषि+कारक) क० पु० किसान, काश्तकार।

सं० कृष्ण (कृष्=खेंचना, वा काला रंग होना) गु० काला, अंधेरा, पु० विष्णुकाआठवां अवतार, वासुदेव, देवकीनंदन। "कृषिर्भूवाचकःशब्दः णश्चनिर्वृत्तिवाचकः। तयोरैक्यंपरब्रह्म, कृष्णइत्यभिधीयते" वायस, कौवा, कलियुग, कोकिल।

सं० कृष्णपक्ष (कृष्ण=अँधेरा वा काला, पक्ष=पख) पु० अन्धेरा पख, बदि।

सं० कृष्णमय (कृष्ण=श्रीकृष्ण, मय=रूप वा मिलाहुआ) गु० कृष्ण के ध्यानमेंलगाहुआ, श्रीकृष्णरूप।

सं० क्लृप्त (कृप्=कल्पना करना) पु० नियमित, बाक़ायदा।

सं० कृष्णसार-पु० कालामृग।

प्रा० केंचुवा (सं० किंचुलुक, किम्=कुछ, चुलुम्प्=हिलाना, वा काटना) पु० ज़मीन का कीड़ा, एक प्रकार का कीड़ा।

प्रा० केकड़ा (सं० कर्कट) पु० गेंगटा, एकजानवर का नाम।

सं० केकयी, कैकयी, कैकेयी (केकय एकराजा का नाम) स्त्री० केकयराजा की बेटी, राजादशरथ की स्त्री, और भरत की मा।

सं० केकी (केका=मोर की बोली) पु० मोर, मयूर।

प्रा० केतकी (सं० केतक, किन्=

रहना) स्त्री० एक फूल का नाम।

प्रा० केता (सं० कति) क्रि० वि० कितना, किचा।

प्रा० केतिक (सं०कति)गु०थोड़े, दोचार, अल्प, कितना, कितनाही।

सं० केतन—धि०पु० गृह, २ ध्वजा, ३ निमंत्रण, ४ आलस, ५ क्रीड़ा, ६ कोड़ा, ७ काम, ८ चिह्न।

सं० केतु (चाय्=पूजना, वा कित्= जानना) पु० नवां ग्रह, २ झंडा, ध्वजा, पताका, ३ पूंछल तारा, धूमकेतु।

सं० केन्द्र—पु० जहां से पृथ्वी का नाप होताहै और वे दो हैं १ उत्तर केन्द्र, दक्षिण केंद्र, २ वृत्त का बीच, मर्कज़। [जायठ।

सं० केयूर—पु० अंगद, बहूंटा, बि-

सं० केरल—पु० मालवादेश, २ ग्रंथ, स्त्री०३ नवीनविद्या, देशविद्या, देश का इल्म।

प्रा० केला (सं० कदली)पु०एकपेड़ का अथवा उसके फल का नाम।

सं० केलि (केल्=हिलना, वा किल्= खेलना) स्त्री० खेल, क्रीड़ा, विहार।

प्रा० केवड़ा / केओड़ा (सं० केतक) पु०एक फूल का नाम।

प्रा० केवट (सं०कैवर्त्त) पु० धीवर, मछवा, मल्लाह, नाव चलानेवाला।

सं० केवल (केव्=सेवाकरना) गु० एकही, निराला, अकेला, मुख्य, खास।

प्रा० केवाड़ / किंवाड़ (सं० कपाट) पु० किंवाड़ी, दरवाज़ा।

प्रा० केवान—पु० कँवल, कमल।

सं० क्लेश-(क्लिश्=दुःखदेना वा रोकना, वा का=शिर, ईश=मालिक, वा क=शिर, शी=सोना) पु० बाल, रोम, लोम, कच।

सं० केशर (के=पानी में, अथवा शिर पर, शृ=फूटना, वा विकसना, वा फैलना) पु० कुंकुम, जाफ़रान, एक सुगंधित चीज़ २ सिंह की गरदन पर के बाल।

सं० केशरी (केशर) पु० सिंह, मृगराज, शेर, हनुमान् के बापका नाम।

केशव (के=पानी में, शी=सोना, वा केश, बाल, वन्त=वाला) पु० श्रीकृष्ण, विष्णु।

सं० केशी (केश) पु० एकराक्षस का नाम जिसको कंसने श्रीकृष्ण के मारने के लिये भेजा था उसको श्रीकृष्ण ने मारा, गु० अच्छे बालों वाला, जिसके अच्छे और बहुत बाल हों।

सं० केसर (के=पानी, सृ=जाना) स्त्री० केशर, कुंकुम, नागकेशर, जाफ़रान।

प्रा० केसरिया (सं० केसर) गु० केसर में रँगाहुआ, पीला।

प्रा० केहरी (सं० केशरी) पु० सिंह, मृगराज, शेर, एक बंदर का नाम।

प्रा० केंचली (सं० कंचुक, कचि= बांधना, वा चमकना) स्त्री० सांप की खाल, सांप की खोल।

सं० कैटभ (कीट=कीड़ा, भा=चमकना जो कीड़े के बराबर चमकता हो) पु० एक राक्षस का नाम।

सं० कैतव-पु० कपट, २ द्यूत, जुआं, ३ वैडूर्य्य मणि, ४ धतूर का फूल।

प्रा० कैथी (सं० कायस्थ) स्त्री० हिंदी अक्षर जो कायथ लोग लिखते हैं, कायथी हिंदी अक्षर जो सूबै बिहार के पटना, गया आदि ज़िलों में लिखे जाते हैं।

सं० कैरव (के=पानी में, रु=शब्द करना) पु० कुमुदिनी, कँवलनी, कमोदनी, सफ़ेद कँवल। [आम।

प्रा० कैरी-स्त्री० बिन पकाहुआ छोटा

सं० कैलास (कैल=खेल, वा आनंद, आस्=रहना, या बैठना, अर्थात् जहां आनंद से रहते हैं) पु० एक पहाड़ हिमालयकी श्रेणीमें है जो महादेव और कुबेर के रहने की जगह है।

सं० कैवर्त } (के=पानीमें, वृत्=रहना) पु० केवट, धीवर,
कैवर्तक } मछवा, मल्लाह, नावचलानेवाला।

सं० कैवल्य (केवल एकही) पु० मुक्ति, मोक्ष, परमगति, निर्वाण।

प्रा० कैसा (किस+सा, सं० कीदृश) क्रि० वि० किस प्रकार का, किस तरह का।

प्रा० कैसाही-बोल० चाहे जैसाही, कितनाही, किसी ही तरह का।

प्रा० को (सं० कः; कौन) सर्वना० कौन, २ कर्म और संप्रदानकारकका चिह्न।

प्रा० कोई } (सं० कोपि, कः=कौन,
कोऊ } अपि=भी) सर्वना० अनिश्चयवाचक। [कोई चीज़।

प्रा० कोईसा-बोल० कोई आदमी,

प्रा० कोईनकोई-बोल० यह अथवा वह, कोई एक।

प्रा० कोईदममें-बोल० तुरन्त, अभी, थोड़ी देरमें, बहुत जल्द।

प्रा० कोएड़ी } पु० एक जाति जिसका
कोएरी } धंधा खेती करनेका है।

प्रा० कोपल (सं० कोरक, कुर=शब्द करना) स्त्री० अंकुर, मंजरी, कली।

सं० कोक (कुक्=लेना) पु० चकवा, चक्रवाक, —कोकी=चकवी।

प्रा० कोका-पु० दूधभाई, धायभाई, कटिया, कमल। [कोयल।

सं० कोकिल (कुक्=लेना) स्त्री०

प्रा० कोख (सं० कुक्षि) स्त्री० गर्भ, पेट।

प्रा० कोखबंध (सं० कुक्षि=बन्ध्या) गु० बांझ, बंध्या, जिस स्त्री के लड़का बाला न हो।

प्रा० कोट (सं० कोट्ट, कुट्ट=काटना) पु० गढ़, क़िला, दुर्ग।

सं० कोटर (कोट=टेढ़ापन, कुट्=टेढ़ा होना, और रा=लेना) स्त्री० पेड़में खोखली जगह, खोंड़कल, खोदरा।

सं० कोटि (कुट्=टेढ़ा होना, वा हिस्सा करना) स्त्री० त्रिभुजकी एक भुजा, २ धनुष का अगला भाग, गु० करोड़, सौलाख।

प्रा० कोठरी (सं० कोष्ठ, कुष्=निकालना) स्त्री० छोटाघर, कमरा।

प्रा० कोठा (सं० कोष्ठ) पु० घर, पटा हुआ घर, पक्काघर, ऊपरका मकान।

प्रा० कोठी (सं० कोष्ठ) स्त्री० छोटा, पक्काघर, २ भंडार, अम्बार, गोदाम, चीज वस्तु रखने की जगह, गोला, अनाज रखनेकी जगह, ३ हुंडीवाल की दूकान, महाजनी घर, ४ बड़ा मकान, बंगला, ५ कारखाना, ६ कोख, गर्भ—कोठीवाल=हुंडीवाल, बड़ासेठ, बड़ासौदागर, बड़ाब्योपारी, साहूकार, महाजन।

प्रा० कोड़ना-क्रि० स० खोदना, खोरना, खोखला करना, गढ़ाकरना, खुरचना।

प्रा० कोड़ा-पु० चाबुक।

प्रा० कोड़ाकरना—बोल० कोड़ा मारना, चाबुक लगाना, २ वश में करना, ३ कोड़ा मार के घोड़े को तेज़ करना।

प्रा० कोड़ामारना=चाबुकलगाना।

प्रा० कोड़ी-स्त्री० बीसी, बीस २०।

प्रा० कोढ़ (सं० कुष्ठ) पु० एकप्रकार का रोग, महारोग।

प्रा० कोढ़ में खाज निकलाना-बोल० एक दुख में दूसरे दुख का आना, दुख पर दुख गिरना।

प्रा० कोढ़ी (सं० कुष्ठी) गु० जिसके कोढ़ निकला हो, कुष्ठी, महारोगी।

सं० कोण (कुण्=बुलाना) पु० कोना-दो लकीरों का झुकाव।

प्रा० कोतल-पु० खाली घोड़ा।

प्रा० कोथमीर-पु० कच्ची धनियां, धनियां की हरीपत्ती।

प्रा० कोतली-स्त्री० थैली, बटुआ।

प्रा० कोदो } कोदों } (सं० कोद्रव, कु=धरती, द्रु=जाना) स्त्री० एक तरह का धान।

सं० कोदण्ड (को=बांस, कु=शब्द करना, दंड=डंडा) पु० धनुष, कमान।

प्रा० कोना (सं० कोण) पु० खूंट,

कोन, दो लकीरों का झुकाव ।

प्रा० कोनाकुथरा-बोल० कोई कोना किधररहो, किसी जगह, कहीं ।

सं० कोप (कुप्=क्रोध करना) पु० क्रोध, गुस्सा, रोस, खिसियाहट ।

प्रा० कोपना (सं० कुप्=कोपकरना) क्रि० अ० क्रोध करना, गुस्साहोना ।

प्रा० कोपर-पु० कटोरा, कटोरी, पियाला ।

सं० कोपि (कः + अपि) सर्वना० कौन ।

सं० कोपित (कोप् + इत) क० पु० क्रुद्ध, कोपयुक्त ।

सं० कोपी (कोप) गु० क्रोधी, तामसी ।

प्रा० कोपीन (सं० कौपीन) स्त्री० लंगोटी ।

प्रा० कोबी } गोबी } स्त्री० एक तरकारी का नाम ।

सं० कोमल (कम्=चाहना, वा कु=शब्दकरना) गु० नर्म, नम्र मृदु, मुलायम, मृदुल, मनोहर, पु० पानी, जल ।

सं० कोमलता (कोमल) भा० स्त्री० नरमाई, मृदुलता, कोमलताई ।

प्रा० कोयण } कोये } (सं० कोन) पु० आंखका सपेद ढेला, आंखका कोना ।

प्रा० कोयल (सं० कोकिला) स्त्री० एक पखेरूका नाम, कोकिला, पिक, २ एक फूल का नाम ।

प्रा० कोर-स्त्री० किनारा, छोर, कगर ।

प्रा० कोरा-गु० नया, टटका, नहीं बरता हुआ, जो काम में नहीं आया हो (यह शब्द मिट्टी के बरतन, और कपड़ा और काग़ज़ के लिये बहुत बार बोला जाता है) ।

प्रा० कोरेरहना-बोल० निराशहोना, योंही रहजाना, कुछ नहींमिलना ।

अं० कोर्ट आफ़्इन्काइरी=पूंछ जांचकीसभा, तहक़ीक़ात का दरबार ।

प्रा० कोल-पु० खाड़ी, खाल, २ सकड़ी गली, ३ जंगली मनुष्यों की जाति, पर्वतनिवासी, म्लेच्छ भेद ।

सं० कोलाहल (कोल्=ढेर, हल्=करना) पु० कलकल, कलाहल, बहुत मनुष्यों का शब्द, रौला, कलमल, धूपधाम, गुलगपाड़ ।

प्रा० कोल्हू-पु० तेल निकालने की कल, धानी ।

सं० कोविद (क=ब्रह्म, अथवा वेद, विद्=जानना) पु० पण्डित, बुद्धिमान् ।

प्रा० कोशना } कोसना } (सं० क्रोशन, कुश=रोना) क्रि० स० सरापना ।

सं० कोशला } कोषला } (कोश वा कोष=भंडार ला=लेना) पु० स्त्री० अयोध्यापुरी, अवध ।

सं० कोष (कुष्=निकालना) पु० भंडार, खज़ाना २ डिक्शनरी, अने-

कार्थ, अभिधान, ऐसी पुस्तक जि, समें शब्दों के अर्थ मिलें, ३ अंड-कोष, ४ मियान, नियाम, खाप, तलवार का घर ।

सं० कोषलाधीश / कोशलाधीश (कोषला वा कोशला=अ-योध्या, अधीश=राजा) पु० श्री-रामचन्द्र, २ अयोध्याके राजा ।

सं० कोषाध्यक्ष (कोष=खज़ाना, अ-ध्यक्ष=मालिक) पु० खजांची, भंडारी।

सं० कोष्ठ (कुष=निकालना) पु० कोठा, खत्ता, कोठरी, जगह ।

प्रा० कोस (सं० क्रोश, क्रुश=बुलाना) पु० आठ हज़ार हाथ का रस्ता, दो मील, कोई कोई चार हज़ार हाथका भी कोस मानते हैं ।

प्रा० कोह (सं० कोप) पु० क्रोध, ग़ुस्सा।

प्रा० कुहवर / कोहबर पु० ब्याह का घर, कौतुकघर, देवताघर।

प्रा० कोहाना (सं० कोप) क्रि० अ० रूठना, कोप करना, क्रोधकरना, रिसियाना ।

प्रा० कोही (सं० कोपी) गु० क्रोधी।

प्रा० कौंधना-क्रि० अ० चमकना, प्रकाश होना ।

प्रा० कौंधा (कौंधना) स्त्री० बिजली।

प्रा० कौला-पु० शन्तरा एक फल का नाम ।

प्रा० कौड़ा (सं० कपर्द) पु० बड़ी कौड़ी, नारंगी ।

प्रा० कौड़ियाला-पु० एक प्रकार का सांप ।

प्रा० कौड़ी (सं० कपर्दिका, क=पानी, वा मुख, परा=पूर्णता, दा=देना) स्त्री० छोटा शंख जो व्यवहार में लेन देन में चलताहै, २ धन, दौलत, ३ कमाई ।

प्रा० फूटीकौड़ी / कानीकौड़ी बोल० कुछनहीं, कौड़ी नहीं ।

सं० कौतुक (कुतुक) पु० कुतूहल, हँसी खुशी, आनंद, हर्ष, खेल, मन बहलाना ।

सं० कौतुकी (कौतुक) गु० खेल खिलाड़ी, हँसमुख, कौतुककरनेवाला।

सं० कौतुकशाला-स्त्री० तमाशाघर ।

प्रा० कौन (सं० कः) प्रश्नवाचक सर्वनाम ।

प्रा० कौनसा-बोल० कैसा, किस तरह का ।

अं० कौंसिल=सभा, दरबार ।

सं० कौमार (कुमार=बालक) पु० बालकपन, लड़कपन, युवावस्था, जवानी ।

सं० कौमुदी (कुमुद=चांद, अथवा कुमुद=कमोदनी अर्थात् जिसमें क-मोदनी खिलती है, कु=पृथ्वी, मुद्=प्रसन्न करना) स्त्री० चांदनी चंद्रिका २ एक व्याकरण का ग्रंथ ।

प्रा० कौर (सं० कवल) पु० ग्रास, कवा, लुक़मा, नवाला।

सं० कौरव (कुरु=एक राजा का नाम) पु० कुरुवंशी, धृतराष्ट्र और पांडु दोनोंके बेटेपोतों को कुरुवंशी कहसक्ते हैं पर विशेष करके धृतराष्ट्र के बेटोंको कौरव, और पांडुके बेटों को पांडव कहते हैं।

सं० कौलिक (कुल) गु० कुलका, अपने कुल के धर्म में चलानेवाला, २ शक्तिक(१), ३ वाममार्गी।

प्रा० कौवा (सं० काक) पु० काग, कागा, वायस।

सं० कौशल्या (कोशल) स्त्री० कोशल देशके राजाकी बेटी, और राजा दशरथ की पत्नी और श्री रामचन्द्र की मा।

सं० कौशिक (कुशिक=विश्वामित्र का बाप, गाधि) पु० विश्वामित्र मुनि का नाम उल्लू, गीध, इन्द्र, नेवला।

सं० कौशिकी (कुशिक) स्त्री० एक नदी का नाम जो विश्वामित्र की बहिन कौशिकीके नाम से प्रसिद्ध है।

सं० कौस्तुभ (कुस्तुभ=विष्णु, वा समन्दर, कु=पृथ्वी, स्तु वा स्तुभ्=सराहना, वा स्तुम्भ=रोकना) पु० विष्णु की मणि जो समन्दरमेंसे निकली।

प्रा० क्या (सं० किम्) प्रश्नवाचक अव्यय।

प्रा० क्यों (सं० किम्) क्रि० वि० किस लिये, काहेको।

प्रा० क्योंकर-क्रि० वि० किसप्रकार से, कैसे।

प्रा० क्योंकि-क्रि० वि० किसलियेकि।

प्रा० क्योंनहीं-बोल० किसलिये नहीं, निश्चयही।

सं० क्रतु (कृ=करना) पु० यज्ञ, याग।

सं० क्रम (क्रम्=जाना) पु० रीति, परिपाटी, राह, सिल्सिला।

सं० क्रमशः-क्रि० वि० क्रमसे, सिलसिलेवार, तरतीब से।

सं० क्रमुकी-स्त्री० सुपारी, डली, पूंगीफल।

सं० क्रय (क्री=मोल लेना) पु० मोल लेना, खरीदना, वस्तु।

सं० क्रयविक्रय (क्रय+विक्रय, क्री=मोल लेना) भा० पु० लेनदेन, वणिज्, व्यौपार, खरीद फ़रोख़्त, जिन्स।

सं० क्रयणीय (क्री+अनीय) कर्म० खरीदने लायक़।

सं० क्रयिक } क्रयी } (क्री+इक) क० पु० क्रेता, खरीददार।

सं० क्रय्य-भा० वस्तु, जिन्स बाज़ारी वस्तु जो दूकान में धरी है।

सं० क्रव्य-पु० मांस, गोश्त।

सं० क्रव्याद-क० पु० राक्षस, मांसभक्षक।

(१) अन्तःशाक्ताःबहिःशैवाःसभामध्ये तु वैष्णवाः। नानारूपधराःकौला विचरन्तिमहीतले॥

प्रा० क्रान्ति (सं० कान्ति) स्त्री० चमक, प्रकाश दीप्ति।

सं० क्रान्ति (क्रम्=जाना) स्त्री० जाना, चढ़ना, २ खगोल में सूर्य का रस्ता, खगोलके गोले में टेढ़ी गोल रेखा।

सं० क्रान्तिमण्डल (क्रांति+मण्डल) पु० खगोलमें उस वृत्त का नाम जो सूर्यका मार्ग जतलाताहै।

सं० क्रामक / क्रायक } क० क्रेता, खरीददार।

सं० क्रियमाण-कर्म० करने योग्य।

सं० क्रिया (कृ=करना) स्त्री० काम, काज, व्योहार, २ क्रिया कर्म, ३ धर्मसंबंधी काम, ४ व्याकरण में ऐसा शब्द जो धातु से बनाहो और उसमें कोई समय पाया जाय, ५ सौगन्द, शपथ।

सं० क्रियादक्ष-पु० काममें निपुण।

सं० क्रीडा / क्रीडन } (क्रीड्=खेलना) भा० स्त्री० खेल, हँसीखुशी, मन बहलाना, कौतुक।

सं० क्रीडक / क्रीडित } क० पु० खिलाड़ी।

सं० क्रुद्ध (कुध्=क्रोध करना) क० पु० क्रोध किये हुए, क्रोधित।

सं० क्रूर (कृव्=काटना) गु० निठुर, निर्दयी, कठोर, कड़ा।

सं० क्रूरता-भा० निठुराई, कठोरपना।

सं० क्रोडपत्र (कुड्=जोड़ना) चपकाना, जम करना) पु० संयोजित, जमीमा, पीछे से लगाया गया।

सं० क्रोध (कुध्=क्रोध करना) पु० कोप, रिस, गुस्सा।

सं० क्रोधवान् / क्रोधवन्त } (क्रोध=कोप, वान् =वाला) गु० क्रोधी कोप करनेवाला।

सं० क्रोधावेश (क्रोध=कोप, आवेश =घुसना, आ, विश्=घुसना) गु० क्रोधयुक्त, क्रोधके वश।

सं० क्रोधी (क्रोध) गु० कोप करने वाला, गुस्सा करनेवाला, रिसहा।

सं० क्रोधना-क० स्त्री० कोपवती, कोप करनेवाली।

सं० क्रोश (कुश्=बुलाना) पु० कोस, कोई ८००० हाथ और कोई ४००० हाथ का कोस मानते हैं।

सं० क्रोष्टा (कुश्=बोलना, चिल्लाना) क० पु० शृगाल, सियार, २ गधा।

सं० क्रौञ्च (कुञ्च=जाना) पु० बगुला, २ एक द्वीपका नाम।

सं० क्लान्त (क्लम्=थकना) क० पु० थका, मांदा, थकित, थका हुआ।

सं० क्लान्ति (क्लम्=थकना) भा० स्त्री० थकावट, कलेश, परिश्रम।

सं० क्लिन्न (क्लिद्=भीगना, रोना) क० पु० आर्द्र, ओदा, सजल, तर, दुखी

सं० क्लिष्ट (क्लिश्=दुखपाना) क०पु० कड़ा, सख्त, कठिन।

सं० क्लीब (क्लीब्=नपुंसक होना) पु० नपुंसक, नामर्द, खोजा, हिजड़ा, गु० डरपोक, कायर।

सं० क्लेद (क्लिद्=बसाना) ग० पु० पूय, पीब, मवाद।

सं० क्लेश (क्लिश्=दुख पाना) पु० दुख, कष्ट, पीड़ा।

सं० क्लेशक–क०पु० क्लेशयुक्त, क्लेशदाता, दुःखदाता।

सं० क्लेशन–भा० पीड़ा, दुःख।

सं० क्लेशित–र्म्म० पु० दुखी, पीड़ित, कष्टित

सं० क्वचित् (क=कहां) क्रि० वि० [कहीं, कहीं २।

सं० क्वणन (क्वण्=बोलना) भा० पु० शब्द, आवाज।

सं० क्वाथ–पु० निर्यास, गोंद, काढ़ा।

सं० क्वाथित (क्वथ्=पचाना) र्म्म० पु० पचाया हुआ।

प्रा० क्षई (सं० क्षय) स्त्री० क्षय रोग, राजरोग, दम की बीमारी।

सं० क्षण (क्षण्=नाश करना) स्त्री० पल, दम, दश पल का समय चार मिनट का समय।

सं० क्षणिक–क० पु० थोड़ी देरका।

सं० क्षत (क्षण्=नाश करना) पु० घाव, चोट, चीरा, जख्म, व्रण।

सं० क्षत–पु० व्रण घाव, जख्म, चोट, र्म्म० नष्ट, घातित, विदीर्ण, भग्न।

सं० क्षत्ता–पु० शूद्र, दासीपुत्र।

सं० क्षति (क्षण्=नाशकरना) स्त्री० हानि, घटी, नुकसान, बिगाड़, अपकार।

सं० क्षत्र–पु० शरीर, जिस्म।

सं० क्षत्रिय } क्षत्री } (क्षत=घाव, त्रै=बचाना) पु० राजपूत, दूसरा वर्ण, राजन्य।

सं० क्षत्रीकुलद्रोही–क० पु० क्षत्री कुल का वैरी, परशुराम।

सं० क्षयण (क्षय्+अण, क्षय=फेंकना) क० पु० निर्लज्ज, बेशरम बेहया, मेरण, गैंड़ा, गिरगिट।

सं० क्षमता (क्षम्=सहना) स्त्री० सहनशीलता, सहना, योग्यता, सामर्थ्य।

प्रा० क्षमना } क्षमाकरना } (सं० क्षम्=सहना) क्रि० स० माफ करना, सहना, छोड़ना।

सं० क्षमा (क्षम्=सहना) भा० स्त्री० माफी, माफकरना, संतोष, माफ, शान्ति २ रहम, ग़म, बरदाश्त।

सं० क्षमित } क्षमी } क०पु० शान्त, क्षमाशील, ग़मख़्वार।

सं० क्षय (क्षि=नाश करना) भा० पु० नाश, २ हानि, नुकसान, घटी, ३ क्षयरोग, क्षयी।

सं० क्षरण (क्षर्+अण, क्षर्=बहना, टपकना) भा० पु० च्युत होना, गिरना ।

सं० क्षान्त (क्षम्=सहना) गु० सहनेवाला, धीरजवान्, क्षमावान्, सन्तोषी ।

सं० क्षान्ति (क्षम्=सहना) स्त्री० क्षमा, धीरज, संतोष ।

सं० क्षाम — पु० क्षीण, दुर्बल, झूरा ।

सं० क्षार (क्षर्=गिरना, नाशहोना) स्त्री० खार, २ राख, भस्म ।

सं० क्षालन (क्षल्=शुद्ध करना) पु० धोना, पोंछना, साफ़ करना, खँगालना ।

सं० क्षालक (क्षल्+अक) क० पु० धोनेवाला ।

सं० क्षालित (क्षल्+इत) र्म० पु० धोया हुआ, धौत ।

सं० क्षिति (क्षि=रहना, बसना) स्त्री० धरती, पृथ्वी, जमीन, धरणी ।

सं० क्षितिधर (क्षिति=धरती, धर=रखनेवाला, धृ=रखना) पु० पहाड़, पर्वत ।

सं० क्षितिप } (क्षिति=धरती, पा
क्षितिपति } =बचाना) पु० राजा ।

सं० क्षितिपाल (क्षिति=पृथ्वी, पाल्=बचाना) पु० राजा, महाराज ।

सं० क्षिपक (क्षिप्+अक) क० पु० योद्धा, बहादुर ।

[तुरंत, शीघ्र ।

सं० क्षिप्र (क्षिप्=फेंकना) गु० जल्द,

सं० क्षीण (क्षि=नाश करना) गु० दुबला, निर्बल, दुर्बल, ग़रीब ।

सं० क्षीर (घस्=खाना) पु० दूध, २ पानी ।

सं० क्षुण्ण (क्षुद्+त, क्षुद्=पीसना) र्म० पु० पीसा हुआ, चूर्णीकृत ।

सं० क्षुद्र (क्षुद्=चूर, चूर=होना) गु० छोटा, नीच, अल्प, सूक्ष्म ।

सं० क्षुद्रा — स्त्री० वेश्या, नटी, मधुमक्षिका, भटकटैया ।

सं० क्षुधा (क्षुध्=भूखाहोना) भा० स्त्री० भूख, खाने की चाह ।

सं० क्षुधातुर — क० पु० भूख से व्याकुल, भूखा ।

सं० क्षुधार्त्त (क्षुधा=भूखा, आर्त्त=घबराया हुआ) गु० भूखा, बहुत ही भूखा ।

सं० क्षुधावन्त (क्षुधा=भूख, वत्=वाला) गु० भूखा ।

सं० क्षुधित (क्षुधा=भूख) क० पु० भूखा ।

सं० क्षुभित } (क्षुभ=काँपना) क०
क्षुब्ध } पु० डरा हुआ, घबरायाहुआ, व्याकुल ।

सं० क्षुर (क्षुर्=काटना) भा० पु० उस्तरा, छुरा, २ खुर ।

सं० क्षुरभाण्ड (क्षुर=छुरा, भाण्ड

=पिटारी) धि० पु० किस्वत, नाइयों की किस्वत।

सं० क्षेत्र (क्षि=बसना, रहना) पु० खेत, २ पवित्रधरती, पुण्यभूमि, ३ देह, शरीर, ४ स्त्री, पत्नी, भार्या।

सं० क्षेत्रज (क्षेत्र=स्त्रीउदर, जन्=पैदा करना) क० पु० अपनी स्त्री में दूसरे से पुत्र जन्माना, जारपुत्र, पाण्डवा।

सं० क्षेपक (क्षिप्=फेंकना) क० पु० फेंका हुआ, २ फेंकनेवाला।

सं० क्षेपण (क्षिप्=फेंकना) भा० पु० फेंकना, प्रेरण।

सं० क्षेपणी (क्षिप्+अन+ई) क० स्त्री० गुफनी, ढिलवासी।

सं० क्षेम (क्षि=रहना) पु० कुशल, कल्याण, चैन, बचाव, चैनचान।

सं० क्षेमकरी=स्त्री० सफ़ेद मूड़की चील।

सं० क्षोणि } (क्षु=शब्दकरना) स्त्री०
क्षौणि } पृथ्वी, धरती, ज़मीन।

सं० क्षोभक (क्षुभ्+अक) क० पु० भयकर्त्ता, डरवानेवाला।

सं० क्षोभ (क्षुभ्=कांपना, डरना) पु० डर, मोह, क्षोह, घबराहट, हड़बड़ाहट, हिलाव डुलाव।

सं० क्षोभित—र्म० पु० डराहुआ, खौफ़ खायाहुआ।

सं० क्षौर (क्षुर=उस्तरा) स्त्री० हजामत, मुण्डन, नाई का काम।

सं० क्ष्मा (क्षम्=सहना) स्त्री० पृथ्वी, धरती, ज़मीन।

ख

सं० ख—पु० आकाश, आस्मान, स्वर्ग, शून्य, २ इन्द्रिय, ३ गृह, खेट।

प्रा० खंगालना (सं० प्रक्षालन) क्रि० स० धोना, साफ़ करना।

प्रा० खंगार } स्त्री० थूक, कफ,
खखार } श्लेष्मा, जुकाम।

प्रा० खागे—गु० कमपढ़े, कमहुये।

प्रा० खंजर—पु० कटार, कटारी।

प्रा० खंजरी—स्त्री० एकबाजेकानाम।

प्रा० खंडर } (सं० खंड=टुकड़ा) पु०
खंडहर } टूटे फूटे मकान।

प्रा० खखोरना—क्रि० स० कोड़ना, खुरचना।

सं० खग (ख=आकाश, गम्=जाना) पु० पक्षी, पखेरू, २ ग्रह, ३ हवा, ४ तीर, ५ मन।

सं० खगपति (खग=पखेरू, पति=राजा) पु० गरुड़।

सं० खगान्तक (खग=पखेरू, अंतक=नाश करनेवाला) पु० बाज़ पक्षी।

सं० खगेन्द्र (खग=पखेरू, इंद्र=राजा) पु० गरुड़। [पु० गरुड़।

सं० खगेश (खग=पखेरू, ईश=राजा)

सं० खगोल (ख=आकाश, गोल=गोला) पु० आकाशमण्डल।

सं० खगोलविद्या (खगोल+विद्या) स्त्री० तारा नक्षत्र आदि की चाल जानने की विद्या।

प्रा० खग्ग (सं० खड्ग) पु० तलवार, खड्ग।

प्रा० खचना (सं० खच्=बांधना, दृढ़ करना) क्रि० स० जड़ना, मिलाना, साटना।

प्रा० खचित (खच्=बांधना, दृढ़ करना) मर्म० पु० जड़ित, जड़ा हुआ।

प्रा० खचर—पु० घोड़े और गधे की जात का जानवर।

प्रा० खजूर (सं० खर्जूर) पु० छुहारा, छुहारे या खजूर का वृक्ष।

सं० खञ्ज—पु० लंगड़ा, लूला, पंगु।

सं० खञ्जन (खञ्ज्=लँगड़ाके चलना) पु० एक पखेरू का नाम।

सं० खञ्जरी—स्त्री० वाद्यविशेष, खञ्जरी, डफुली।

प्रा० खटकना—क्रि० अ० लगना, चुभना, गड़ना, खुभना, सालना, २ बाजना, आहट होना।

प्रा० खटका, पु० } (खटकना) संदेह, डर, शंका,
खटक, स्त्री० } धोखा, दुबिधा, मीन मेख, २ पैरका आहट, खड़का।

प्रा० खटखटाना—क्रि० स० ठकठकाना, ठोंकना, खट खट करना, थपथपाना।

प्रा० खटछप्पर (सं० खट्वा=खाट, छप्पर) पु० छप्परखट, सेज, मसहरी समेत पलंग।

प्रा० खटना } क्रि० अ० टिकना,
खटाना } रहना, ठहरना।

प्रा० खटपट—स्त्री० झगड़ा, लड़ाई, तकरार, झंझट, बिगाड़, रगड़ा, झगड़ा, अनरस, खैंचातानी, खटराग, खटापटी।

प्रा० खटमल (सं० खट्वामल्ल, खट्वा=खाट, मल्ल=पहलवान) माकड़, खटकीड़ा, उड़ीस।

प्रा० खटमीठा—पु० खट्टा और मीठा मिला हुआ स्वाद, गु० खट्टा और मीठा, मनभावन, मनमान्ता, सुस्वाद, मजेदार।

प्रा० खटराग (सं० षट्राग, षट्=छः, राग=काम क्रोध आदि) पु० फूट, अनबनत, अनमेल, झगड़ा, रगड़ा, झंझट, जंजाल।

प्रा० खटापटी—स्त्री० लड़ाई, झगड़ा, तकरार, झंझट, बिगाड़, खटपट।

प्रा० खटास—भा० स्त्री० खट्टापन, खटाई, तुर्शी।

प्रा० खटिया (सं० खट्वा) स्त्री० खाट, चारपाई, २ रथी।

प्रा० खटीक (सं० खट्टिक, खट्=ढकना) पु० अहेरी जिसका काम जानवरों के मारने और बेचने का है।

प्रा० खटोला (सं० खट्वा) पु० छोटी खाट, २ पालना, झूलना।

प्रा० खट्टा—गु० तुर्श, चूक, अम्ल, जैसे इम्ली आदि।

सं० खट्वा (खट्=चाहना, वा खट्=ढकना) खाट, पलँग, चारपाई।

प्रा० खड़ंख—गु० सूखा, सूखाहुआ।

प्रा० खड़क—स्त्री० गोशाला, गौखाना, २ आहट।

प्रा० खड़कना—क्रि० अ० खड़खड़ाना। झंझनाना, बाजना।

प्रा० खड़कजाना—बोल० सावधान होजाना, खबर पाना, संदेशापाना।

प्रा० खड़खड़ाना—क्रि० अ० ठक ठकाना, झंझनाना, बाजना, २ दांत पीसना, ३ खर्राटा मारना, घुरघुराना।

प्रा० खड़ा—गु० सीधा, उठा, ऊंचा।

प्रा० खड़ाकरना—बोल० उठाना, ठहराना, ऊंचा करना।

प्रा० खड़ाहोना—बोल० उठना, सीधा होना।

प्रा० खड़ेखड़े—बोल० अभी, तुरन्त, झटपट, इसीदम।

प्रा० खड़ाऊं—स्त्री० पादुका।

प्रा० खड़िया (सं० खटिका, खट्=चाहना, वा खड़िका, खड्=टुकड़े २ करना) स्त्री० खड़ी, खल्ली, चाक।

सं० खड़ी (खड्=टुकड़े २ करना) स्त्री० खड़िया, खड़ीमिट्टी, खल्ली, चाक।

सं० खड्ग (खड्=फाड़ना, चीरना) स्त्री० तलवार, तरवार।

सं० खण्ड (खड्=तोड़ना) पु० टुकड़ा भाग, हिस्सा, २ खन, मकान का कोई हिस्सा, ३ ज़मीन का कोई टुकड़ा, देश, ४ पुस्तक का एक भाग, ५ खांड़।

सं० खण्ड खण्ड—पु० टुकड़ाटुकड़ा।

सं० खण्डक (खड्+अक) कं० पु० तोड़नेवाला।

सं० खण्डन (खड्=तोड़ना) भा० पु० तोड़ना, टुकड़ेकरना, छिन्न भिन्न करना, २ किसीकी बातको रद्द करना, झुठलाना, बात में हराना, मात करना, भंजन करना, तरदीद करना।

प्रा० खण्डन करना (सं० खण्डन) क्रि० स० तोड़ना, टुकड़े २ करना, २ मात करना, झुठलाना।

सं० खण्डना—भा० स्त्री० आपत्ति, आफ़त।

सं० खण्डित (खड्=टुकड़े २ करना) कर्म० पु० टूटा हुआ, टुकड़े २ किया हुआ, कटा हुआ, छिन्न भिन्न, तित्तर बित्तर, बिखरा हुआ, २ मात किया हुआ, शिकस्त।

प्रा० खत्ता (सं० खात, खन्=खोदना) पु० कोठा, नाज रखनेका खड्डा गड्ढा।

प्रा० खत्री (सं० क्षत्रिय) पु० राजत, २ एक जाति।

प्रा० खदबदाना–क्रि० अ० सनसनाना, सीजना, छनछनाना ।

प्रा० खदेड़ना–क्रि० स० पीछाकरना, रगेदना ।

सं० खद्योत (ख=आकाश, द्युत्=चमकना) पु० जुगुनू, अगिया, चमकनेवाला कीड़ा ।

प्रा० खन (सं० खण्ड) पु० घर का हिस्सा, कोठड़ी, कमरा, महला ।

सं० खनक (खन्+अक, खन्=खोदना) क० पु० मूषक, मूश, चूहा ।

प्रा० खनकना-क्रि० अ० ठनठनाना, शब्द करना, बाजना ।

सं० खनन (खन्+अन, खन्=खोदना) भा० पु० खोदना ।

सं० खनि (खन्=खोदना) कर्म० स्त्री० खानि, आकर ।

सं० खनित्र (खन्=खोदना) पु० कुदाल, कुदाली, खोदनेकाऔज़ार ।

सं० खनित्री खन्=खोदना) स्त्री० कुदाली, कसी, फावड़ा, पडुहा, खंती ।

प्रा० खपत (खपना) स्त्री० बिक्री, बिकाव, खर्च, उठान ।

सं० खपना–क्रि० अ० सोख जाना, सूखना, २ मरना, ३ बिकना, खर्च होना, उठना ।

प्रा० खपरा–पु० नरिया, पटरी, चौका जिस से मकान छाया जाता है ।

प्रा० खपरैल (खपरा) स्त्री० खपरे का घर ।

प्रा० खपाच–स्त्री० फांस, किर्च, बांस का टुकड़ा ।

प्रा० खपाना–क्रि० स० नाशकरना, पूरा करना, मार डालना ।

प्रा० खप्पर (सं० खर्प्पर, कृप्=सामर्थ्य रखना) पु० खोपरी, २ योगी लोगों का मिट्टी का बरतन, योगियों का पात्र ।

प्रा० खम (सं० स्तम्भ) पु० ताल, भुजा, खम्भ ।

प्रा० खमठोकना–बोल० तालठोकना, कुश्ती करनेके समय अपने हाथों से बाहु को ठोकना ।

सं० खमणि (ख=आकाश, मणि=रत्न) पु० सूर्य ।

प्रा० खम्बा } सं० स्तम्भ पु० थंभा,
खम्भ } थूनी, खंभा, लाठ मीनार ।

सं० खर (खड्=तोड़ना) पु० तीखा, [कठोर ।

सं० खर (ख=शून्य, रा=लेना) पु० गधा, खच्चर, २ एक राक्षस का नाम ३ तीक्ष्ण, चतुर, ४ तृण ।

प्रा० खर } सं० खड्=टुकड़े करना
खढ़ } पु० तिनका, तृण, घास ।

सं० खरतर } गु० अतितीक्ष्ण, बहुत
खरतल } तेज, कड़ा मिज़ाज ।

सं० खरधार } गु० तेजधार=बड़ी
खरधारा } धार ।

प्रा० खरबर, स्त्री० | खरभर, स्त्री० | खलबल, स्त्री० | खभार, पु० } हलबल, खड़बड़, खलबली, हलचल, खड़बड़ी।

प्रा० खरल (सं० खल्ल, खल्=गिरना) स्त्री० औषध पीसने के लिये पत्थर का बरतन।

प्रा० खरहा-पु० खरगोश, शशा।

प्रा० खरा-गु० सच्चा, सीधा, सरल, उत्तम, श्रेष्ठ, चोखा, प्रमाणिक।

सं० खरी-स्त्री०=गधी, खली।

प्रा० खर्ज्जुर-पु० खजूर, छुहारा, २ जुकाम, श्लेष्मा।

सं० खर्व्व (खर्ब्=जाना) पु० सौअरब, गु० बामना, नाटा, छोटा, २ नीच।

सं० खर्व्वित-गु० अल्पीकृत, संक्षिप्त, मुख्तसर।

सं० खल (ख=शून्य, ला=लेना, वा, खल्=चलना, वा गिरना) गु० दुष्ट, नीच, कठोर, निर्दयी, क्रूर, बेरहम।

प्रा० खल (सं० खलि, खल्=जाना वा गिरना) स्त्री० खरी, तिल की सीठी।

सं० खल—गु० दुष्ट, अधम, नीच, निंदक, क्रूर, पु० कल्क, खली।

सं० खलन (खल + अन) भा० पु० खालीकरना, रीता करना।

प्रा० खलबलाना—क्रि० अ० उबलना, खौलना।

सं० खलित (खल्+इत) कृ० पु० पतित, गिरा, खाली हुआ।

प्रा० खलियान (सं० खलया, खल्=जाना, वा गिरना) पु० उस जगह का नाम जहां भूसे में से अनाज निकाल कर ढेर लगाते हैं, खलिहान।

सं० खलु—अव्य० निश्चय, हेतु, यक़ीन, विश्वास, वीप्सामान, निषेध, प्रश्न।

सं० खल्वाट—गु० गंजा, चंदुला, जिस के शिर में बाल न हों।

प्रा० खवा | खंवा } पु० कंधा।

प्रा० खसकाना—क्रि० स० दूरकरना, सरकाना, हटाना, पीछे खेंचना, २ ले भागना।

प्रा० खसखस (सं० खस्=खस) पु० पोस्त का दाना, खशखाश।

प्रा० खसना—क्रि० अ० गिरना गिरपड़ना।

प्रा० खसरा—पु० बही, खेतके हिसाब की क़िताब, खर्रा, क़िसी हिसाब का खर्रा, २ खुजली।

प्रा० खांड़ (सं० खण्ड) स्त्री० शक्कर।

सं० खाण्डव—पु० इन्द्रप्रस्थनगर के निकट का वन।

प्रा० खांडा (सं० खड्ग) पु० एक तरह की तलवार, तेग़ा।

प्रा० खांड़े की धार पर चलना-बोल० न्यायपरचलना, न्यायकरना।

प्रा० खांसी (सं० काश, कश्=शब्द करना) स्त्री० खोखी, धांसी।

प्रा० खाई (सं० खात, खन्=खोदना) स्त्री० खंदक, नाला, गड़हा गढ़ के बाहर का नाला।

प्रा० खाऊ (खाना) गु० पेटू, पेटार्थी, बहुत खानेवाला।

प्रा० खाग (सं० खड्ग) पु० गैंड़ेका सींग।

प्रा० खाज (सं० खर्जू, खर्ज्=दुख देना) स्त्री० खुजली।

प्रा० खाजा (सं० खाद्य=खानेयोग्य) पु० एक तरह की मिठाई।

प्रा० खाट (सं० खट्वा) स्त्री० चारपाई, खटिया।

सं० खात (खन्=खोदना) र्म० पु० खाई, खेय, परिखा, दुर्गवेष्टन, खन्दक।

प्रा० खाता-पु० लेखाबही, रोजके हिसाब की बही, खसरा, हिसाब।

प्रा० खाती-पु० बढ़ई, मिस्तरी।

सं० खादक (खाद्+अक) क० पु० ऋणी, क़र्जदार, खवैया।

सं० खादन (खाद्+अन) भा० पु० भक्षण, भोजन, ख़ुराक,

सं० खाद्य (खाद्=खाना) र्म० खाने योग्य, पु० खाना, खाने की चीज़।

प्रा० खान, खानी (सं० खानि, वा खनि, खन्=खोदना) स्त्री० खानि, आकर, पादन, २ ढेर, ३ घर।

प्रा० खाना (सं० खादन, खाद्=खाना) क्रि० स० भोजन करना, २ खाजाना, उड़ाना, चोरीकरना, मारखाना, चाटजाना, निगलना, डकार जाना, हज़म करजाना, चट करना, हाथ मारना, पु० खाने की चीज़, भोजन, आहार।

प्रा० खाजाना-बोल० खालेना, डकारना, चट करना, हज़म करना, मारखाना, निगलना, उड़ाना।

प्रा० खानापीना-बोल० भोजन, खुराक, खाना।

सं० खानिक (खन्=खोदना) क० जो खानिमें पैदा हो, स्त्री० खानि।

प्रा० खार (सं० क्षार) पु० लोना, एक सफ़ेद खारीचीज़ जिससे बहुत बार धोबी कपड़े साफ़ करते हैं।

प्रा० खारा (सं० क्षार) गु० लोना, नमकीन।

प्रा० खारुआ, खारुवा पु० एकतरहका गोटा, लाल कपड़ा।

प्रा० खाल (सं० खल्ल) स्त्री० चमड़ा, २ धौंकनी, ३ खाड़ी, कोल।

प्रा० खालखैंचना-बोल० मनुष्य की देह से चमड़ा उतारलेना, बहुत

दुखदेकर मारडालना, चमड़ालेना, चमड़ा उधेड़ना, खलियाना ।

प्रा० खिंचना-क्रि० अ० तनना, ऐंठना ।

प्रा० खिजलाना, खिजाना (सं० खिद्=दुख देना) क्रि० स० सताना, चिढ़ाना, छेड़ना, दुखदेना, तकलीफदेना, क्रोधितकरना ।

प्रा० खिड़की-स्त्री० झरोखा, दरीची ।

सं० खिन्न (खिद्=दुखदेना वा दुख पाना) वि० पु० दुखी, दुखित, थका हुआ, थकित, सतायाहुआ ।

प्रा० खिरनी (सं० क्षीरिणी, क्षीर =दूध) स्त्री० एक फल और उसके पेड़ का नाम ।

प्रा० खिलखिलाना (सं० किलकिला) क्रि० अ० बहुत जोरसे हँसना ।

प्रा० खिलना-क्रि० अ० फूलना, २ हर्षित होना, प्रसन्न होना, हँसना ।

प्रा० खिलाड़, खिलाड़ी (खेल) गु० चंचल, चपल ।

प्रा० खिलौना (खेल) पु० खेलने की चीज ।

प्रा० खिसलना-क्रि० अ० फिसलना, खिसकना, सरकजाना ।

प्रा० खिसियाना (सं० क्लिश्=दुख पाना) क्रि० अ० चिड़चिड़ाना, क्रोध करना, खीसना ।

प्रा० खीजना (सं० खिद्=दुखदेना, वा दुखपाना) क्रि० अ० क्रोधित होना, क्रोध करना, दुखित होना, दुखी होना ।

प्रा० खीर (सं० क्षीर) पु० दूध और चांवल से बनी हुई एक खाने की चीज जाउर, पायस ।

प्रा० खीरा स्त्री० एक प्रकार की ककड़ी ।

प्रा० खील-स्त्री० भूनाहुआचांवल, लावा ।

प्रा० खीली-स्त्री० पान की बीड़ी ।

प्रा० खीसना-क्रि० स० नाशकरना, उजाड़ना, बिगाड़ना, २ खिसियाना ।

प्रा० खीस-भा० स्त्री० खराब हुई, २ दांत निकालना ।

प्रा० खीसा (फा० खीसह) पु० जेब, खलीता ।

प्रा० खुजलाना (सं० खर्ज्=दुखदेना) क्रि० अ० कलकलाना, चुलचुलाना, सहलाना, खरोंटना, खरोंचना ।

प्रा० खुजलाहट, खजलाहट (सं० खर्ज्, खर्ज् =दुख देना) स्त्री० खुजलाना, खुजली, सुरसुरी, गुदगुदी ।

प्रा० खुजली (सं० खर्ज्, खर्ज्=दुख देना) स्त्री० खाज, पामा, खारिश ।

प्रा० खुटाना-क्रि० अ० कम होना, घटजाना ।

प्रा० खुटानी-स्त्री० क्षीण हुई, कम हुई, नाश हुई ।

प्रा० खुदवाना (सं० खन्=खोदना

वा क्षुद्=चूर २ करना) क्रि० स० खुदाना।

प्रा० खुनस-स्त्री० रोस, बैर, क्रोध, कोप, लाग, रिस।

प्रा० खुनसाना-क्रि० अ० क्रोधित होना, खिसियाना, क्रोध करना, कोप करना, रिसाना।

प्रा० खुबना } क्रि० अ० चुभना,
खुभना } बिंधना, पैठना, असर करना, मन में जिच जाना।

सं० खुर (खुर=काटना) पु० सुम, घोड़े गाय आदि के पैरका नख।

प्रा० खुरपा (सं० खुर=काटना) पु० घास खोदने का औज़ार।

प्रा० खुरमा (फा० खुर्मह) पु०एक तरह की मिठाई।

प्रा० खुलना-क्रि० अ० खुलजाना, प्रकट होना, नहीं ढकना, बिखरना, (जैसे बादल) साफ़ हो जाना, स्वच्छ होजाना (जैसे आकाश) टूटना, छूटजाना (जैसे ध्यान)

प्रा० खूंट-पु० कोना, कोन, २ कान का मैल।

प्रा० खूंदना (सं०क्षुद्=चूर२करना) क्रि० स० पैरों से धरती को खोदना, टाप मारना।

सं० खेचर (खे=आकाश में चर=चलनेवाला, चर=चलना) पु० ग्रह, वायु, तारागण, पक्षी, प्रेत, २ विद्याधर देवता, गु० आकाश में चलनेवाला।

सं० खेट (खिट्=सताना) पु० ग्रह २पक्षी ३अधम४भय५खेत६शिकार।

सं०खेटक (खिट्=डराना, सताना) क०पु०शिकार,अहेर,२ढाल,३भय, ४ कुत्सित, ५ ग्राम,६ कफ़,७अधम।

प्रा०खेड़ा सं०खेट,खेट्=खाना) पु० पुरवा, गाँव।

प्रा० खेड़ी—स्त्री० अच्छा लोहा, फ़ौलाद, ईस्पात।

प्रा० खेत (सं०क्षेत्र) पु० जगह जहां अनाज तरकारी आदि बोते हैं, २ पवित्रधरती, ३ धरती, जमीन, ४ लड़ाई का मैदान।

प्रा० खेतछोड़ना—बोल०लड़ाई से भागजाना।

प्रा० खेतरहना—बोल० लड़ाई में रहजाना, माराजाना।

प्रा० खेती (खेत) स्त्री० किसनई, काश्तकारी, ज़िराअत, फ़सल।

प्रा० खेतीबाड़ी-बोल० खेतीकाधंधा, किसनई, काश्तकारी, ज़िराअत।

सं० खेद (खिद्=दुखपाना)पु०दुख, शोच, शोक, पछतावा, कष्ट, तकलीफ़, पीड़ा, व्यथा।

सं० खेदित (खिद्=दुखपाना) कर्म० दुखित, दुखी, पीड़ित।

प्रा० खेप (सं० क्षेप, क्षिप्=फेंकना,

भेजना) स्त्री० सफ़र, समंदरकीयात्रा, २ जहाज का बोझा।

प्रा० खेपहारना—बोल० नुक़सान उठाना, हानि होना।

प्रा० खेल (सं० खेला, खेल्=हिलना चलना) पु० क्रीड़ा, बिहार।

प्रा० खेवट } (सं० कैवर्त्त) पु० नाव
खेवटिया } चलानेवाला, मांझी, मल्लाह, डांडी, खेवक।

प्रा० खेवना (सं० क्षेपण) क्रि० स० डांडमारना, नावचलाना।

प्रा० खेवा (सं० क्षेप्य) पु० उतराई, नाव की उतराई का भाड़ा, २ नदी पार होना।

प्रा० खेस—पु० एक कपड़ेका नाम।

प्रा० खैंचना—क्रि० स० तानना, कसना, ऐंचना, २ तसवीरमें रंगभरना, तसवीर उतारना, तसवीर बनाना।

प्रा० खैंचाखैंची-बोल० खैंचातानी, लड़ाई, मारामारी।

प्रा० खैर (सं० खादिर) पु० एक वृक्ष का नाम, खदिर पेड़ का गूदा।

प्रा० खोंता-पु० घोंसला, पखेरूकाघर।

प्रा० खोंसना—क्रि० स० ठांसना, ठोंसना, भरना।

प्रा० खोंखला (सं० कोटर) गु० खाली, छूछा, थोथा, पोला।

प्रा० खोखा-पु० वह हुंडी जिसके रुपये दिये जा चुके हों।

प्रा० खोज—पु० पता, निशान, ठिकाना, चिह्न। [अवगुण।

प्रा० खोट-स्त्री० चूक, भूल, दोष,

प्रा० खोटा-गु० झूठा, नमकहराम, खराब।

प्रा० खोदना (सं० खन्=खोदना वा क्षुद्=चूर चूर करना) क्रि० स० खनना, गोड़ना, कुरेदना।

प्रा० खोना (सं० क्षय) क्रि० स० गँवाना, उड़ाना, नाशकरना, हारना।

प्रा० खोपरा (सं० खर्पर) पु० नारियल की गरी।

प्रा० खोपरी (सं० खर्पर) स्त्री० कपाल की हड्डी, शिर की हड्डी, खोपड़ी।

प्रा० खोह-स्त्री० गुफा, गुहा, गड़हा।

प्रा० खोरि } (सं० खोड्=टेढ़ी
खोरी } चाल) भा० स्त्री० खुटाई, दोष, क़सूर।

प्रा० खोल-स्त्री० खोखला, २ मियान।

प्रा० खोह-स्त्री० गुफा, कंदला।

प्रा० खौड़-स्त्री० तिलक, त्रिपुंड्र।

प्रा० खौलना-क्रि० अ० उबालना, उफलना, बहुत गर्म होना।

सं० ख्यात (ख्या=प्रसिद्धहोना) कर्म० नामवर, प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित, विदित, मशहूर, उजागर।

सं० ख्याति (ख्या=प्रसिद्धहोना)

भा० स्त्री० यश,नाम,कीर्त्ति,सराह, नामवरी।
अं० ख्रीष्ट=ईसवी।
प्रा० ख्याल (खेल) पु० तमाशा, कौतुक, नक़ल, स्वांग, खेल।
फ़ा० ख़्वाहिश=कामना, चाह।

ग

सं० ग (गै=गाना) पु० गंधर्व,२ गणेशजी, ३ यात्री, ४ गीत।
प्रा० गंग (सं० गङ्गा) स्त्री० गंगानदी।
प्रा० गंज-स्त्री० चाईचूई, बादखोरा।
प्रा० गंजा (गंज) गु० जिसके शिर में गंज हो, चंदला।
प्रा० गंजना-क्रि० स० नाशकरना।
प्रा० गँठजोरा (सं० ग्रन्थि जोड़, ग्रंथि=गांठ,जुड़्=बांधना) पु० गांठ बांधना।
प्रा० गंठजोड़ाबांधना-बोल० ब्याह में दुलहा दुलहिन के आंचल से गांठ बांधना।
प्रा० गंठकटा } गठकटा } (सं० ग्रन्थि=गांठ, कृत्=काटना) पु० जेब कतरा।
प्रा० गंडा (सं० गण्डक) पु० घेरा, २ चार कौड़ी, चार, ३ गंठीला तागा जो बालकों के गलेमें बांधा जाताहै, तावीज।
प्रा० गंडासा-पु० फरसा, तबल।
प्रा० गंडेरी (सं० ग्रन्थि) स्त्री० ऊख का टुकड़ा।
प्रा० गंधी (सं० गान्धिक) पु० अतर गुलाबजल आदि बेचनेवाला।
प्रा० गँव } गौं } पु० अवसर, दांव, सुभीता, अवकाश, मौका।
प्रा० गंवाना (सं० गम्=जाना) क्रि० स० खोना, उड़ाना, फेंकना, खर्च करना।
प्रा० गवांर (सं० ग्राम्य) गु० गांवमें रहनेवाला, २ अनाड़, मूर्ख।
प्रा० गंवी० } गँवई } (ग्राम्य) गु० गांव का गंवेला, दिहाती, पु० गांव, दिहात।
सं० गगण } गगन } (गम्=जाना) पु० आकाश, आसमान।
प्रा० गगरी } गागरी } सं० गर्गरी, गर्ग ऐसा शब्द, रा=लेना) स्त्री० मटकी, कलसी, छोटाघड़ा, ठिलिया।
सं० गङ्गा (गम्=जाना) स्त्री० एक नदी का नाम, भागीरथी, जाह्नवी, सुरसरी।
प्रा० गङ्गाजमुनी (सं० गङ्गा+यमुना) स्त्री० कानका गहना, बाली, २ घोड़े अथवा बैलों की धौली और काली भूल, ३ धौला और काला मिलाहुआ रंग।
सं० गङ्गाजल (गङ्गा=नदी का नाम जल=पानी) पु० गङ्गाका पानी।
सं० गङ्गाद्वार (गङ्गा=नदीकानाम, द्वार=दरवाजा) पु० गंगोत्तरी, हरि-

द्वार वह जगह जहां गङ्गा निकल कर बहती हैं ।

सं० गङ्गाधर (गङ्गा=नदी का नाम, धर=रखनेवाला, धृ=रखना) पु० शिव, महादेव, जिन्होंने पहले गङ्गा को अपनी जटा में रखलियाथा ।

सं० गङ्गासागर (गङ्गा, सागर=समुद्र) पु० वह जगह जहां गङ्गा समुद्र से मिलती हैं ।

प्रा० गचपच-बोल० भीड़भाड़, घना, गहरा, कशमकश ।

सं० गज (गज्=मस्त होना, शब्द करना) पु० हाथी ।

फ़ा० गज़-पु०दो हाथका नाप, ३३ इंच वा ३६ इंच का नाप ।

सं० गजगामिनी (गज=हाथी, गम्=जाना) स्त्री० जिस स्त्री की चाल हाथी कैसी हो ।

प्रा० गजगाह (सं० गज्=हाथी, गाह=गहना) पु० हाथी, घोड़ों का गहना ।

सं० गजपति (गज=हाथी, पति =मालिक)पु० राजा, २ हाथी का मालिक अथवा हाथीपर चढ़नेवाला, ३ बड़ा हाथी ।

सं० गजपाल (गज=हाथी, पाल=पालनेवाला, पाल्=पालना) पु० महावत, हाथीवान ।

प्रा० गजमोती (सं०गजमुक्ता) पु० हाथी के शिर का मोती, गजमणि ।

सं० गजयूथ (गज=हाथी, यूथ=टोला, झुण्ड) पु० हाथियों का टोला, हाथियों का झुण्ड ।

प्रा० गजरा (सं० गर्जर) पु० गाजर का पत्ता, २ हाथमें पहननेका गहना ।

सं० गजराज (गज=हाथी, राजन्=राजा) पु० बड़ा, हाथी, गजेन्द्र ।

सं० गजवदन (गज=हाथी, वदन=मुंह) पु० गणेशजी ।

सं० गजानन (गज=हाथी, आनन =मुंह) पु० गणेशजी ।

सं० गजारि (गज=हाथी, अरि=वैरी) सिंह, शेर ।

सं० गजेन्द्र (गज=हाथी, इन्द्र=राजा) पु० हाथियों का राजा, गजराज, २ इन्द्र का हाथी ।

सं० गञ्ज (गज्=मस्त होना, वा शब्द=करना) पु० ढेर, खज़ाना, भंडार, २ हाट, बाज़ार ।

सं० गञ्जना-भा० स्त्री० यातना, पीड़ा, तकलीफ, जाँकन्दनी ।

सं० गञ्जित (गञ्ज्+इत) कर्म० लांछित, दूषित । [गड़बड़ ।

प्रा० गटपट-क्रि०वि० उलटपुलट,

सं० गठक (गठ्+अक, गठ=निर्माणकरना, बनाना) क०पु० बनाने वाला, मुसन्निफ ।

सं० गठन (गठ्+अन) भा० पु० निर्माण करना, तसनीफ करना ।

सं० गठित (गठ्+इत) स्त्री० निर्मित, बनी हुई ।

प्रा० गट्ठा (सं० ग्रन्थि) पु० गठड़ी, बस्ता, २ लहसुन, प्याज़ आदि की गांठ अथवा जड़, ३ जरीब का बीसवां हिस्सा, गट्ठा ।

प्रा० गठड़ी } गठरी } (सं० ग्रन्थि) स्त्री० गांठ, मोट, मोटरी ।

प्रा० गठिया (सं० ग्रन्थि) स्त्री० गठड़ी, गांठ, एक प्रकार का वातरोग, फुलाव ।

प्रा० गठीला (गांठ) क० गांठदार, गांठवाला, २ हरमुस्टा, संडमुसंड ।

प्रा० गड़गड़ाना-क्रि० अ० गर्जना, गुड़गुड़ाना ।

प्रा० गड़गूदड़-पु० चिथड़ा, फटा पुराना कपड़ा । [ट पुलट ।

प्रा० गड़बड़-क्रि० वि० गटपट, उलट-

प्रा० गड़रिया (गाडर=भेड़ी) पु० भेड़ी बकरी को चरानेवाला, रखवाला, चरवाहा, मेषपाल ।

प्रा० गड़हा } गढ़ा } (सं० गर्त) पु० गढेला, खड्डा ।

प्रा० गड्डी-स्त्री० कागज़के दशदस्ते ।

प्रा० गढ़-पु० कोट, दुर्ग, गढ़ा ।

प्रा० गढ़ना-क्रि० स० ठोंकना, बनाना, सुधारना । [गाढ़ा ।

प्रा० गढ़वार (सं० गाढ) पु० मोटा,

सं० गण (गण्=गिनना) पु० समूह, थोक, झुंड, २ शिव के दूत, ३ सेना जिसमें २९ रथ ८१ घोड़े और १३५ पैदल हों ४ गण आठ हैं जिनका काम वर्णरूप छंद में पड़ता है भगण २ जगण ३ सगण ४ यगण ५ रगण ६ तगण ७ मगण ८ नगण इनके जानने के वास्ते, दोहा-आदिमध्य अवसानमें, भजसहोहिं गुरुजान। यरतहोहिं लघुक्रमहिं सो, मन गुरु लघु सबजान ॥

सं० गणक (गण्=गिनना) क० पु० गिननेवाला, गणितज्ञ, ज्योतिषी, नजूमी ।

सं० गणता-भा० समूहत्व, जमअत ।

सं० गणना (गण्=गिनना) स्त्री० गिन्ती, संख्या ।

सं० गणनाथ (गण=शिव के दूत, नाथ=स्वामी) पु० गणेशजी ।

सं० गणनायक (गण, नायक=मालिक) पु० गणेशजी ।

सं० गणपति (गण, पति=मालिक) पु० गणेशजी, गजानन ।

प्रा० गणराऊ (सं० गणराज) पु० गणेशजी ।

सं० गणाधिप (गण+अधिप=मा-

लिक) पु० गणेशजी, गणराज।

सं० गणिका (गण=समूह, अर्थात् जिसके बहुत से पति हों) स्त्री० वेश्या, पतुरिया, कंचनी।

सं० गणित (गण्=गिनना) पु० हिसाब, अङ्कविद्या।

सं० गणितज्ञ (गणित=हिसाब, ज्ञा=जानना) पु० हिसाब जाननेवाला।

सं० गणेश (गण=महादेव के दूत, ईश=स्वामी) पु० गजानन, गणपति, महादेव का बेटा।

सं० गण्ड (गडि, मुंह का एक भाग होना) पु० गाल, २ हाथीका गाल।

सं० गण्डकी (गडि=सींचना) स्त्री० एक नदी का नाम।

सं० गण्य (गण्=गिनना) त्रि० गिनने योग्य।

सं० गत (गम्=जाना) क० गयाहुआ, २ पायाहुआ, प्राप्त, ३ जानाहुआ।

प्रा० गत / सं० गति (गम्=जाना) स्त्री० चाल चलन, २ दशा, हाल, ३ रीति, राह, रस्ता, ४ ज्ञान, ५ उपाय, ६ क्रिया कर्म, ७ मोक्ष, मुक्ति।

सं० गतागत (गत+आगत) भा० पु० जाना आना, आमदरफ़्त।

सं० गताक्ष (गत=गई अक्ष=आंख) गु० वह मनुष्य जिसकी आंख की रोशनी जाती रही, अंधा।

सं० गतानुगतिक (गत=गया, अनुगतिक=पीछे चलनेवाला) क० एक के पीछे चलनेवाला, अनुयायी, अनुगामी, उमर खतम होगई।

सं० गतायुः (गत=गई, आयुस्=उमर) गु० वह मनुष्य जिसकी उमर पूरी होगई।

सं० गतिपरिपाटी-स्त्री० फ़ौजी क़वायद।

सं० गद-पु० रोग, बीमारी, मर्ज़।

प्रा० गदका (सं० गदा) पु० पटा।

प्रा० गदहा / गधा (सं० गर्दभ, गर्द=शब्द करना) पु० एक जानवर का नाम, खर।

सं० गदहा (गद=रोग, हन्=नाश करना) क० पु० वैद्य, हकीम, डाक्टर।

सं० गदा (गद्=शब्दकरना) स्त्री० सोंटा, लाठी, चोब।

सं० गदाधर (गदा=सोंटा, धर=रखनेवाला, धृ=रखना) पु० विष्णुकानाम।

सं० गदित (गद्+इत, गद्=कहना) त्रि० कहाहुआ।

सं० गदी (गद्+इ) क० पु० विष्णु २ रोगी, मरीज।

प्रा० गदेला-पु० मोटा बिछौना, बिछौना जिसमें रूई बहुतभरी हुईहो।

सं० गद्गद (गद्=स्पष्ट, और गद=बोलना, वा गद्गद पूराबोल नहीं निकलना) पु० मारेखुशी के पूराबोल नहीं निकलना, गु० आनन्दित, प्रसन्न, प्रफुल्ल, बागबाग, खुश।

प्रा० गद्दी } स्त्री० बिछौना, २
गादी } आसन, ३ राजा का सिंहासन, तख़्त ।

सं० गद्य (गद्=बोलना) पु० छन्द रहित वाक्य, बिना छंद का वाक्य, वार्तिक, नसर ।

प्रा० गनना (सं० गणना, गण्=गिनना) क्रि० स० गिनना, शुमार करना, गिन्ती करना ।

सं० गन्ता (गम्+ता, गम्=जाना) क० पु० गमनकर्ता, जानेवाला ।

सं० गन्तु—क० पु० पथिक, मुसाफ़िर ।

सं० गन्ध (गन्ध=चूमना) स्त्री० बास, महक, सुगन्ध, सौरभ ।

सं० गन्धक (गन्ध) पु० एक पीले रंग की धातु ।

सं० गन्धमादन (गन्ध=महक, मादन =मस्त करनेवाला, मद्=मस्त करना) पु० एक पहाड़ का नाम, २ बंदरों के एक सरदार का नाम, ३ गन्धक ।

सं० गन्धराज (गन्ध=महक, राज= शोभना) पु० चन्दन, २ सुगन्धित फूल ।

सं० गन्धर्व (गन्ध=सुगन्ध, अर्व्= जाना) पु० स्वर्ग का गवैया ।

सं० गन्धवह } (गन्ध=सुगंध, वह=
गन्धवाह } लेजाना) पु० हवा, पवन, वायु, २ कस्तूरिया हरिन, ३ नाक, नासिका ।

सं० गन्धसार (गन्ध=सुगंध, सार= तत्त्व) पु० चन्दन, श्रीखण्ड ।

सं० गन्धार (गन्ध=सुगंध, ऋ=जाना) पु० एक राग का नाम, २ कन्धार देश ।

प्रा० गन्धारी (सं० गान्धारी, गान्धार, कंधार देश) स्त्री० कंधार देश के राजा की बेटी, धृतराष्ट्र की पत्नी और दुर्योधन की मा ।

प्रा० गप—स्त्री० इधर उधर की झूठ सच बात, बक बक, झक २ ।

प्रा० गपमारना—बोल० झूठी सच्ची बातें करना । [बात, गप ।

प्रा० गपशप—बोल० झूठी सच्ची

सं० गभीर } (गम्=जाना) गु० गहरा,
गम्भीर } अथाह, अवगाह, २ धीर, धीमा, सोची, भारी, गरुवा, निगूढ़, अमीक़, हलीम ।

सं० गमन (गम्=जाना) भा० पु० चलना, जाना, चलन, यात्रा ।

सं० गमनागमन (गमन+आगमन) भा० पु० आना जाना, आमदरफ़्त ।

सं० गमी—क० पु० जानेवाला ।

प्रा० गमी—क० पु० ग़म करनेवाला, रंज करनेवाला ।

सं० गम्य (गम्=जाना) कर्म० जाने योग्य, पाने योग्य, जानने योग्य ।

प्रा० गयन्द } (सं० गजेन्द्र) पु० बड़ा
गेंद } हाथी, गजेन्द्र ।

सं० गया (गै=गाना वा गय एकराक्षस का नाम) स्त्री० सूबै बिहारमें एकनगर है जो हिंदुओंका बड़ातीर्थ स्थानहै।

प्रा० गयाली } (सं० गयालय,गया
गयावाल } नगरकानाम,आलय=घर) पु० गयाके ब्राह्मण जो यात्रियों को पिंड श्राद्ध आदि कराते हैं।

सं० गर (गृ=निगलना,वा निकाल देना) पु० विष,ज़हर,२रोग,गला।

प्रा० गरजना (सं० गर्जन) क्रि० अ० गूंजना, घड़घड़ाना, बादलों का अथवा सिंह का शब्द करना।

सं० गरल (गृ=निगलनावानिकालदेना) पु० विष,ज़हर,माहुर,हलाहल।

प्रा० गरवा (सं० गौरव) गु० भारी, गंभीर, धीर, मुतहम्मिल, बुर्दबार, २ बड़ा, प्रतिष्ठित।

सं० गरिमा (गुरु बड़ा) स्त्री० गुरुता, बड़ाई, गरुआई, बोझ, अहंकार।

सं० गरिष्ठ }
गरीय } गु० भारी, गरुआ।
गरीयान् }

प्रा० गरी—स्त्री० नारियल का गूदा, खोपरा।

प्रा० गरुआई } (सं० गुरुता) भा०
गुरुआई } स्त्री० भार,बोझ।

सं० गरुड़ (गरुत्=पंख,डी=उड़ना) पु० पक्षियोंका राजा,विष्णुका वाहन—एक तरह के पखेरू का नाम।

सं० गरुड़ध्वज (गरुड़=पखेरुओं का राजा, ध्वजा, पताका, अर्थात् जिसकी ध्वजामें गरुड़ का चिह्न है) पु० विष्णु, भगवान्।

सं० गरुत् (गृ= शब्द करना, वा गृ= निकालना) पु० पंख, पाख, पर।

सं० गर्ग (गृ=बोलना, वा गृ=जानना वा जतलाना) पु० एकमुनि का नाम जो ब्रह्मा का बेटा और वसुदेव जीका कुलगुरु था।

सं० गर्ज } (गर्ज=गर्जना) पु० बा-
गर्जन } दलोंका शब्द, सिंहका शब्द, गाजना।

सं० गर्त्त (गृ=निकालना, वा निगलना) पु० गढ़ा, गड़हा, खड्डा।

सं० गर्दभ (गर्द्=शब्द करना) पु० गधा।

सं० गर्ब } (गर्ब् वा गर्व्, घमंड कर-
गर्व } ना) पु० घमंड, अहंकार, दर्प, अभिमान, ग़रूर।

सं० गर्भ (गृ=शब्द करना) पु० गाभ, पेट, कोख,हमल सन्धि,कटहर,कंटक

सं० गर्भवती } (गर्भ) स्त्री० पेट
गर्भिणी } से, गाभिन, दोजीवां, दो जीव से।

सं० गर्भश्राव } (गर्भ=गाभ, श्रु, वा
गर्भस्राव } स्रु=गिरना) पु० गर्भ का गिरना, गाभ गिरना, गर्भपात।

सं० गर्व—भा० घमंड, गरूर ।

सं० गर्वित (गर्व्=घमंड करना) गु० घमंडी, अहंकारी, अभिमानी, मगरूर ।

सं० गर्हक (गर्ह + अक, गर्ह्=निन्दा करना) क० पु० निन्दक, चुगुल ।

सं० गर्हण (गर्ह् + अण) भा० पु० निन्दा, मज़म्मत । [मजमूम ।

सं० गर्हित (गर्ह् + इत) कर्म० निन्दित,

सं० गल (गल्=खाना, वा गॄ=निगलना) पु० गला, गरदन ।

प्रा० गलदेना—बोल० फांसी देना ।

प्रा० गलबहियां (सं० गलबाहु, गल=गला, बाहु=भुजा) स्त्री० गलबांह, गले में हाथ डालना ।

प्रा० गलबहियां डालना—बोल० किसी के गले में हाथ डालना ।

प्रा० गलना (सं० गलन, गल्=गिरना) क्रि० अ० पिघलना, नर्म होना—२ सड़ना, बिगड़ना ।

प्रा० गला (सं० गल) पु० कण्ठ, गरदन, ग्रीवा, नरेटी, २ स्वर, आवाज़, गु० सड़ाहुआ, पिघलाहुआ ।

प्रा० गलाबैठना } बोल० आवाज़
गलापड़ना } बैठना, भारी शब्द होना, गला घनघनाना, गला खर्खराना ।

प्रा० गलाफांसना—बोल० फांसी देना, गल देना, गला दबाना, दम बंद करना ।

प्रा० गलादबाना—बोल० गला घोंटना, नरेटी दबाना, फांसी देना ।

प्रा० गलाघोंटना—बोल० नरेटी दबाना, गला दबाना, दम बंद करना ।

प्रा० गलेपड़ना—बोल० खुशामद करना, जो मनुष्य प्रीति नहीं करना चाहता उससे प्रीति किया चाहना ।

प्रा० गलेपड़ीबजायेसिद्ध—बोल० जो काम आपड़े उसको करनाही चाहिये ।

प्रा० गले का हार होना—बोल० किसी से बड़ी लगन के साथ प्यार करना, मन हर लेना, सदा मन में बसना ।

प्रा० गलेलगना—बोल० मिलना, छाती से लगाना ।

प्रा० गलाना (गलना) क्रि० स० पिघलाना, २ सड़ाना ।

सं० गलित (गल्=गिरना) क० गला हुआ, पड़ाहुआ, सड़ाहुआ, गिरा हुआ, जो गिर पड़ा हो ।

प्रा० गली—स्त्री० छोटारस्ता, तंगरस्ता ।

प्रा० गलीगली—बोल० एकगली से दूसरी गली तक, हरगली ।

प्रा० गवन (सं० गमन) भा० पु० जाना, चलना, कूच, जाना ।

सं० गवय (गो=गाय) पु० गाय के

जैसा जानवर, बनकी गाय, २एक वानर का नाम ।

अं० गवर्नमेएट=राजकीय नियम जो पार्लीमेएट और लेजिसलेटिव कौंसिल या सभा में बनते हैं उन्हीं नियमों के अनुसार राजकाज किये जाते हैं ।

प्रा० गवहि (सं० गमन) भा० मौका से जाना, गौं से जाना ।

सं० गवाक्ष (गो=गाय, वा किरण, अक्षि=आंख,वा छेद) पु० झरोखा, मोखा, झंझरी, जाली, २ गाय की आंख, ३ एक वानर का नाम ।

प्रा० गवासा (सं०गवाश,गो=गाय, अश=खाना) पु० गाय को खाने वाला, कसाई । [गानेवाला ।

प्रा० गवैया (सं०गायक) क० पु०

सं० गव्य (गो=गाय) पु० दूध आदि गु० गाय का ।

प्रा० गहगहाना (सं० गह्=गहरा होना) क्रि० अ० बाजना, नक्कारोंका बाजना, २ हिलोरना, लहकना ।

प्रा० गहण (सं० ग्रहण) भा० पु० ग्रहण, लेना ।

सं० गहन (गह्=घना होना वा गाह् =मथना) पु० वन,कुंज,झाड़ी, गु० गहरा, सघन, विकट ।

प्रा० गहना (सं० ग्रहण, ग्रह्=लेना) क्रि० स० पकड़ना, लेना, ग्रहण करना ।

प्रा० गहना-पु० जेवर, भूषण, २ गिरो, गिरवी, बंधक ।

प्रा० गहनेधरना } बोल० गिरो
गहनीधरना } रखना, गिरवी
रखना, बंधक रखना ।

प्रा० गहरा (सं० गम्भीर) गु० गंभीर, अथाह ।

प्रा० गहरु-स्त्री० देरी, देर, विलम्ब ।

प्रा० गहवा (गहना पकड़ना) पु० संड़सी, चिमटा ।

प्रा० गहवर (सं० गह्वर, गाह्=मथना वा पैठना) स्त्री० गुफा, गुहा, कंदरा, गु० सघन, कुंज ।

प्रा० गांजा (सं० गञ्जिका, गज्= मस्त होना) पु० एक नशेकी चीज ।

प्रा० गांठ (सं० ग्रन्थि) स्त्री० गिरह, जोड़, बंध, २ गिलटी, फुसड़ी, फुनसी, ३ गठड़ी, मोटड़ी ।

प्रा० गाँठ उखड़ना—बोल० जोड़का सरकजाना, जोड़का उतरना, जोड़का खुलजाना, गांठ या हड्डी या नस का बिचलना ।

प्रा० गांठ पड़ना—बोल० किसी के मन में किसी के साथ दुशमनी अथवा वैर अथवा विरोधका जमना ।

प्रा० गांठका पूरा—बोल० धनवान, दौलतमन्द, धनवन्त, धनी, मालदार ।

प्रा० गांठकाखोना—बोल० अपनी हानि करना, अपना नुक़सान आप करना ।

प्रा० गांठखोलना—बोल० बहुत खर्च करना, थैलीखोलना, २ पक्षपात का छोड़ना।

प्रा० गांठगँठीला—बोल० गांठदार, (जैसे लकड़ी) ठोस, गाढ़ा।

प्रा० गांठना (सं० ग्रन्थन, ग्रन्थ्=जोड़ना) क्रि० स० बांधना, जकड़ना, मिलाना, जोड़ना, जुटाना, लगाना, साटना, २ वश में करना, वश में लाना, अपना करना, लुभाना, मोहलेना।

प्रा० गांडर-पु० कांस, एकतरहकीघास।

प्रा० गांड़ा—पु० गन्ना, ईष, ऊख।

प्रा० गांव } गाम } (सं० ग्राम) पु० बस्ती, खेड़ा।

प्रा० गाई (सं० गौ) स्त्री० गाय, गैया।

प्रा० गागर } गागरी } (सं० गर्गरी) स्त्री० गगरी, मटकी, कलशी।

प्रा० गाछ (सं० गच्छ, गम्=जाना) पु० पेड़, वृक्ष।

प्रा० गाजना (सं० गर्जन) क्रि० अ० गर्जना, बादलों का अथवा सिंह का शब्द करना, २ प्रसन्न होना, हर्षित होना।

प्रा० गाजर (सं० गर्जर) स्त्री० एक तरह का कन्द अथवा मूल जिसकी तरकारी होतीहै और ऐसे भी खातेहैं।

प्रा० गाजाबाजा (गाजनाबाजना) बोल० कई एक बाजों का शब्द, आनन्द।

प्रा० गाड़ना (सं० गर्त्तन, गृ=निकालना, या निगलना) क्रि० स० तोपना, मिट्टी देना, समाध देना, २ जमाना, खड़ाकरना, पक्काकरना, दृढ़ करना, लगाना।

प्रा० गाड़ (सं० गर्त्त) गड़हा, खत्ता, खौं।

प्रा० गाडर—स्त्री० भेड़ी, भेड़।

प्रा० गारुड (गारुड़, गरुड़ अर्थात् जिसका देवता गरुड़ है) पु० सांप के विष उतारने का मंत्र, विष झाड़ने का मंत्र।

प्रा० गाड़ा (सं० गन्त्री) पु० छकड़ा, लहड़ू, शकट २ (गर्त्त) खाई, गड़हा, ३ घात, दांव।

प्रा० गाड़ी (सं० गन्त्री, गम्=जाना) स्त्री० मंझोली, शकटी, रथ, बहल।

प्रा० गाड़ीवान (गन्त्रीवाह) पु० गाड़ीवाला, कोचवान, सारथि।

प्रा० गाढ़ा (सं० गाढ, गाह्=मथना) गु० मोटा, पोढ़ा, २ मजबूत, दृढ़, ३ पक्का, चतुर, होशियार।

सं० गाण्डिव (गाण्डि=गांठ, अर्थात् जिसमें गांठहो) पु० अर्जुनकाधनुष, २ कोई धनुष, चाहै जैसा धनुष।

प्रा० गात (सं० गात्र) पु० शरीर, देह, अंग, तन, २ कपड़ा, वसन, वस्त्र।

प्रा० गाता—पु० पुट्ठा, पिठौता गत्ता, जिल्द। [देह, तन, अंग।

सं० गात्र (गा=जाना) पु० शरीर,

सं० गाथक (गै=गाना) क० पु० गानेवाला, गवैया, गायक, कथक ।

सं० गाथा (गै=गाना) स्त्री० गीत, गाना, कथा, २ श्लोक, पद्य, छंद ।

प्रा० गाद—स्त्री० तलछट,मैल, झाग ।

प्रा० गाथना } गांथना } (सं० ग्रन्थन, ग्रन्थ्=जोड़ना) क्रि० स० गूंथना, बनाना ।

सं०गाधि (गाध्=ठहरना, वा चाहना) पु० विश्वामित्र ऋषि का बाप ।

सं० गाधितनय (गाधि+तनय=बेटा) पु० विश्वामित्र ऋषि ।

प्रा० गाधिसुवन (सं० गाधिसूनु, गाधि+सूनु=बेटा,सू=पैदा होना) पु० विश्वामित्र ऋषि ।

सं० गान (गै=गाना) भा० पु० गीत, नग़मा, गाना ।

प्रा० गाना (सं० गान) क्रि० स० अलापना,रागउच्चारना, २ कहना ।

सं० गान्धर्व (गन्धर्व) गु० गन्धर्वका पु० गाना, गीत, २ एक तरह का ब्याह जो केवल दुलहा और दुलहिन की मर्जी से हो जाताहै ।

सं०गान्धार (गन्ध=सुगंध,ऋ=जाना) पु० एक रागका नाम२ कंधारदेश।

सं० गान्धारी—स्त्री० गान्धार राजा की बेटी, धृतराष्ट्र की स्त्री ।

प्रा० गाभ (गर्भ) पु० गर्भ, पेट।

प्रा० गाभा (गर्भ) पु० केले के पेड़ का नया पत्ता ।

प्रा० गाभिन (सं० गर्भिणी) स्त्री० गर्भवती (जैसे गाय भैंस आदि)

सं० गामी } गामुक } (गम्=जाना) क० पु० जानेवाला, चलनेवाला, गामिनी=चलनेवाली । [धेनु ।

प्रा० गाय (सं० गौ) पु० गैया,गाय,

प्रा० गायगोठ } गाइगोठ } (सं० गो+गोष्ठ गो=गाय, स्था=ठहरना) स्त्री० गोशाला ।

सं० गायक (गै=गाना) पु० गानेवाला, गवैया ।

सं० गायत्री (गायन=गानेवाले को, त्रै=बचाना) स्त्री० एक प्रकार का मंत्र, वेदमाता, सूर्य्य की वंदना,२ एक छन्द का नाम जिसके हरएक पाद में छः अक्षर होते हैं ।

सं० गायन (गै=गाना) पु० गानेवाला, गवैया ।

अ० गारत—बरबाद, नष्ट, तबाह ।

प्रा०गार } गारी } (सं० गालि, गल्=गिरना) स्त्री० बुरी बात, बुरावचन, गाली ।

प्रा० गारि—पु० तावा, तवा ।

प्रा० गारुड़ी (सं० गारुड़िक, गरुड़ पु० विष उतारनेवाला, विष झाड़नेवाला ।

प्रा० गाल (सं०गल,गल्=खाना) पु० कपोल, आंखों के नीचे का भाग, २ चोचला।

प्रा०गालकरना } गालबजाना } बोल० चोचला करना, बकबाद करना।

सं० गालव-पु० एकऋषि का नाम।

प्रा० गाली (सं०गालि, गल्=गिरना) स्त्री० गार, गारी, बुरी बात, बुरा वचन।

प्रा० गालीगलौज-बोल० आपस में गालीदेना, झगड़ा, लड़ाई, तकरार।

प्रा० गालीदेना-बोल० गालीबकना, बुराभला कहना, झिड़कना, बुरा कहना, थुथकारना।

प्रा० गावदी-गु० भोला, मूर्ख, बेवकूफ, अज्ञानी। [का घी।

प्रा० गावाघी (सं०गोघृत) पु०गाय

प्रा० गाह (सं०ग्राह)पु०मगर,ग्राह।

प्रा० गाहक (सं०ग्राहक,ग्रह्=लेना) पु० मोल लेनेवाला, सौदाखरीदने वाला, खरीददार, लेनेवाला।

प्रा० गाहना (सं० गाह्=मथना) क्रि०स०ढूंढना,खोजना,तलाशकरना,२ कुचलना, मलना, दबाना।

प्रा० गाहा (सं० गाथा) स्त्री०कथा, २ समूह।

प्रा०गिड़गिड़ाना-क्रि०अ० घिघियाना, बिनती करना, चिरौरी करना।

प्रा० गिणती } गिन्ती } (सं० गणित, गण्=गिनना) स्त्री० संख्या, गिनना, हिसाब।

प्रा०गिणना } गिनना } (सं० गणन) क्रि० स० गिन्ती करना, हिसाबकरना, शुमार करना।

प्रा०गिद्ध (सं०गृध्र) पु० गीध, एक पखेरू का नाम, शकुनी।

प्रा० गिरगिट-पु०एक कीड़ा, छिपकली, टिकटिकी। [पड़ना।

प्रा०गिरना-क्रि० अ० पड़ना, गिर-

प्रा० गिरतेपड़ते-बोल० बहुत कठिनता से।

सं०गिरा (गृ=निगलना, वा निकालना) स्त्री० वाणी, वचन, २ सरस्वती, शारदा, ३ कवितांई।

सं०गिरि (गृ=निगलना वा निकालना)पु० पहाड़,पर्वत, २ संन्यासी गु० पूज्य,पूजनीय, प्रतिष्ठित,मान्य।

सं० गिरिजा (गिरि=पहाड़, जन्=पैदा होना) स्त्री० पार्वती, गौरी, उमा, हिमालय की बेटी।

सं० गिरिधर } गिरधारी } (गिरि=पहाड़,धर, वा धारी=उठानेवाला,धृ=रखना पु० श्रीकृष्ण, गु० पहाड़ को उठानेवाला।

प्रा०गिरिन्दा (सं० गिरीन्द्र) पु०बड़ा पहाड़, सुमेरु पहाड़,हिमालय पहाड़।

सं०गिरिराज (गिरि=पहाड़, राज=राजा) पु० पहाड़ों का राजा, गोवर्द्धन, हिमालय, सुमेरु, २ श्रीकृष्ण का नाम।

सं० गिरिवर (गिरि=पहाड़, वर=बड़ा) पु० बड़ा पहाड़।

सं०गिरिसुता (गिरि=पहाड़, सुता=बेटी) स्त्री०पार्वती, गौरी, गिरिजा, उमा।

सं० गिरीन्द्र (गिरि=पहाड़, इन्द्र=राजा) पु० हिमालय, सुमेरु, गिरीश।

सं० गिरीश (गिरि=पहाड़, ईश=स्वामी) पु० महादेव, शिव, २ हिमालय।

प्रा०गिलई–भा०स्त्री० निगलजाइ।

सं०गिलन (गृ=निगलना वा खाना) भा० पु० भक्षण, खाना।

अं०गिलन=छः बोतलका पैमाना।

सं० गिलित (गिल्+इत) क्र० स्त्री० खादित, भक्षित, खाई हुई।

सं० गीतिका=नाम एक छन्द का।

प्रा० गिलहरी–स्त्री० एक जानवर का नाम, रूखी चीखुर।

प्रा० गिलौरी–स्त्री०पान की बीड़ी।

सं०गीत (गै=गाना) पु० गान, भजन

सं० गीता (गै=गाना) स्त्री० एक पुस्तक का नाम जिस में श्रीकृष्ण और अर्जुन का संवादहै और उसको भगवद्गीता कहते हैं इसके सिवाय रामगीता, पांडवगीता, आदि और भी गीता हैं पर इन सब में भगवद्गीता बहुत प्रसिद्ध है।

प्रा० गीदड़–पु० शियाल, शृगाल।

प्रा० गीध (सं०गृध्र) पु०गिद्ध, गृध्र।

प्रा०गीला–गु०ओदा, भीगा, सीला।

सं०गु–स्त्री० विष्ठा, गलीज।

प्रा० गुंजान–गु० गहरा, सघन, घना, पासपास।

प्रा० गुजरात (सं०गुर्जर) स्त्री० एक देशकानाम, हिंदुस्तानका एकसूबा।

प्रा० गुजराती–गु० गुजरात का।

सं०गुञ्जन–भा० गूंजना।

सं० गुञ्ज (गुजि=गुजरना) ग० पुष्पस्तवक, गुलदस्ता, फूलोंका गुच्छा।

प्रा० गुञ्ज } (गुजि=शब्द करना) पु०
सं०गुञ्जा } घुंघची लाल, एक बेली का नाम।

सं०गुटिका (गु=शब्दकरना) स्त्री० दवाईकीगोली, २ चाहे जैसीगोली।

सं०गुड़ (गुड=चूर्णकरना) पु०मीठा, ऊखके रस से बनीहुई मीठी चीज।

सं० गुडाकेश (गुडाका+ईश) क० पु०=गुडाका=निद्रा+ईश=जीतने वाला निद्राजीतनेवाला, बेदार, नाम अर्जुन महाराज का।

प्रा०गुडंबा } (सं० गुड़ाम्र) पु०
गुडुंबा } केरी पाक, गुड़ के रस में पकाया हुआ कच्चा आम।

प्रा० गुड़गुड़ी—स्त्री० छोटा हुक्का ।

प्रा० गुड़िया—स्त्री० लड़कियों का खिलौना ।

[कनकौवा ।

प्रा० गुड्डी—स्त्री० पतंग, तिलंगी,

सं० गुण—(गुण्=बुलाना वा गुनना) पु० स्वभाव, विशेषण, २ हुनर, चतुराई, प्रवीणता, विद्या, ३ रस्सी, डोरी, ४ सत्त्व रज तम ये तीन गुण ५ कृपा, मिहरबानी, भला, भलाई, ६ गुना हुआ, बार ।

प्रा० गुणकरना—बोल० भला करना, भलाई करना ।

प्रा० गुणकापलटा देना—बोल० भलाई का बदला देना, भलाई के पलटे भलाई करना ।

प्रा० गुणमानना—बोल० भला मानना, अहसान मानना ।

सं० गुणक (गुण्=गुनाकरना) क० पु० वह अंक जिससे गुणा किया जाता है, मजरूबफीह ।

प्रा० गुणगाहक—(सं० गुण+ग्राहक) क० पु० गुण जाननेवाला, गुणग्राही, क़दरदान ।

सं० गुणग्राही, गुणग्राहक (गुण=विद्या, हुनर, ग्राही=लेने वाला, ग्रह्=लेना) क० पु० गुण को जाननेवाला, गुणग्राहक ।

सं० गुणज्ञ (गुण, ज्ञा=जानना) क० पु० गुण को जाननेवाला ।

सं० गुणन, गुणना (गुण्=गुनना) भा० पु० गुना करना, समझना, अभ्यासकरना ।

सं० गुणवान्, गुणवन्त (गुण=हुनर, वत्=वाला) गु० गुणी, चतुर, प्रवीण, पंडित ।

सं० गुणित (गुण्=गुणना) र्म० गुणा हुआ ।

सं० गुणी (गुण) गु० गुणवान्, विद्यावान्, निपुण, प्रवीण, हुनरमन्द ।

सं० गुण्य (गुण्=गुणना) र्म० पु० जो अंक गुणाजाय, मज़रूब ।

प्रा० गुन (सं० गुण) पु० (गुण शब्द को देखो)

प्रा० गुनगुना—गु० थोड़ा गर्म ।

सं० गुप्त, गोपित (गुप्=छिपाना वा बचाना) र्म० छिपाहुआ ढकाहुआ, लुका हुआ, २ बचा हुआ, रक्षित ।

सं० गुप्ति—भा० स्त्री० रक्षण, पोशीदगी ।

प्रा० गुप्ती (सं० गुप्त) स्त्री० छिपी हुई तलवार, लाठी के भीतर छोटी तलवार ।

सं० गोप्ता (गुप्+ता) क० पु० रक्षक, मुहाफ़िज़ ।

सं० गोप्य—र्म० गुह्य, छिपाने योग्य ।

प्रा० गुफा (सं० गुहा) स्त्री० खोह, कंदरा, गुहा, पहाड़के बीचकी जगह ।

सं० गुरु (गृ=निकालना) (अज्ञान को) वा गृ उपदेश करना (धर्मका)

पु० मंत्र देनेवाला, मंत्र उपदेशक, धर्म सिखानेवाला, आचार्य, उपदेशक, २ बाप, अथवा अपना और कोईबड़ा पुरुष, ३ शिक्षक, पढ़ानेवाला, ४ बृहस्पति, देवताओं का गुरु, ५ द्विमात्रिक अक्षर, दीर्घस्वर, अनुस्वार और विसर्गवालास्वर, संयोगी, अक्षरों के पहले का स्वर. गु० भारी, बड़ा, पूज्य, पूजनीय ।

सं० **गुम्फ** (गुफ्=गुहना, पिरोना) भा० पु० गूथना, ग्रंथन, बाहुभूषण ।

सं० **गुम्फित**—स्मं० ग्रंथित, गुहीहुई ।

सं० **गुरुतर**—गु० अतिगरुआ ।

सं० **गुरुतम**—गु० अत्यन्त गरुआ, बहुतही भारी ।

प्रा० **गुरुमुखहोना**—बोल० गुरु से मंत्र लेना, किसी का चेला होना ।

सं० **गुरुजन** (गुरु=बड़े, जन=मनुष्य) पु० बड़े लोग, बुजुर्ग लोग ।

सं० **गुरुत्व** (गुरु) भा० पु० बोझ, भार, २ बड़ाई, गंभीरता, हिल्म, बुर्दबारी ।

सं० **गुरुवार** (गुरु=बृहस्पति, बार=दिन) पु० बृहस्पतिवार, जुमेरात ।

सं० **गुर्विणी** / **गुर्वी** (गुरु=भारी, अर्थात जिसके गर्भहो) स्त्री० गर्भवती, गर्भिणी, हामिला ।

प्रा० **गुलाई** (सं० गोलता) भा० स्त्री० गोलाई, गोलापन, मुदौत ।

प्रा० **गुलाबजामन**—पु० एक तरह की मिठाई, एक तरह का फल ।

प्रा० **गुलेल** / **गुलैल** स्त्री० एक तरह का धनुष ।

सं० **गुल्फ**—पु० पैर की गांठ, टखना ।

सं० **गुल्म** (गुड्=रक्षा करना, लपेटना) पु० बायुगोला, प्लीहा, २ झाड़, लता, ९ गज ९ रथ २७ अश्व ४५ पदाति सेना की संख्या ४ विष्णु ५ आवरण ।

सं० **गुह** (गुह्=ढकना) पु० निषाद, शृंगवेरपुरका राजा और श्रीरामचन्द्र का मित्र, २ कार्त्तिकेय ।

प्रा० **गुहना** (सं० गुम्फन, गुम्फ्=गूंथना) क्रि० स० गूंथना, पिरोना ।

सं० **गुहा** (गुह्=ढकना) स्त्री० गुफा, खोह, कंदरा । [२ सहाय ।

प्रा० **गुहार**—स्त्री० पुकार, शोर, हाहू,

सं० **गुह्य** (गुह्=ढकना, छिपाना) स्मं० छिपाने योग्य, गुप्त, पु० शरीर के ढके हुये अंग ।

सं० **गुह्यक** (गुह्=छिपाना) पु० कुबेर के दूत, एक प्रकार के देवता ।

प्रा० **गुसांई** / **गोसाई** (सं० गोस्वामी) पु० मालिक, स्वामी, २ संन्यासी ।

प्रा० **गूंगा**—गु० मुंहबंधा, अनबोलता, मूक, मौन ।

प्रा० **गूंजना** (सं० गुञ्जन, गुजि=शब्द करना) क्रि० अ० भिनभिनाना, २ पीछी आवाज आना,

प्रतिध्वनि होना, गूंज रहना, ३ गर्जना, घुर्राना।

प्रा० गूंझा-पु०एकतरहकी मिठाई।

प्रा० गूंथना-(सं०गुम्फन, गुम्फ्=गूंथना) क्रि० स० पिरोना, लड़ियाना, गुहना।

प्रा० गूजर-(सं०गुर्जर=गुजरात)पु० एक जाति जिसका धंधा दूध बेंचने का है और जो गुजरात से फैली है, ग्वाला, गोप, अहीर—गूजरी =अहीरी, गोपी, गूजर की स्त्री।

प्रा० गूजरी-स्त्री० लुगाइयों के हाथ में पहनने का एक गहना।

सं० गूढ़-(गुह्=छिपाना) गु० सूक्ष्म, कठिन, २ छिपा, गुप्त।

प्रा० गूदा-(सं०गोर्द)पु०सार,भेजा।

प्रा० गूलर-पु० अंजीर, डूमर, एक फल का नाम।

सं० गृध्नु०-क०पु०लोभी,लालची।

सं० गृध्र-(गृध्=चाहना) पु० गीध, गिद्ध।

सं० गृध्रराज-(गृध्र=गीध, राज=राजा) पु० जटायु पक्षी जिसका वर्णन रामायण में है।

सं० गृह-(ग्रह वा गृह्=लेना) पु० घर, बासा, गेह, मकान, बासकरने की जगह, रहने की जगह, डेरा, २ स्त्री, घरवाली।

सं०गृहस्थ-(गृह=घर,स्था=ठहरना) पु० घरवाला, घरबारी, दूसरा आश्रम २ किसान।

सं० गृहस्थाश्रम-(गृहस्थ+आश्रम) पु० गृहस्थ का धर्म अथवा काम, दूसरा आश्रम (आश्रम शब्द को देखो)।

सं०गृहागत-(गृह+आगत, आ+गम्+त) क०पु० आगन्तुक, अतिथि, महमान, पाहुन, प्राघुण।

सं० गृहिणी-(गृह=घर) स्त्री०घर वाली, लुगाई, जोरू, भार्या, स्त्री, पत्नी। [गृहस्थ।

सं० गृही-(गृह) पु० घरवाला,

सं० गृहीत-(गृह्=लेना) र्म०पु० लियाहुआ, पकड़ाहुआ, स्वीकार कियाहुआ, ग्रहण कियाहुआ।

प्रा० गेंड़ा-(सं० गण्ड)पु० एक जानवर का नाम जिसके पुट्ठों पर के चाम की ढाल उत्तम बनती है।

प्रा० गेंद-(सं० गेण्डु, गम् वा गा=जाना)स्त्री०लड़कों के खेलनेकी कपड़ेकी या चमड़े की गोल चीज़, कन्दुक।

प्रा० गेंदतड़ी खेलना-बोल० डंडे से गेंद को मारके खेलना।

प्रा० गेंदा-(सं०गेण्डक, गम्, वा गा =जाना)पु०एकफूलकानाम,२गेंद।

सं० गेय -(गा=गाना) र्मि० गाने योग्य ।

प्रा० गेरू -(सं०गैरिक, गिरि=पहाड़) स्त्री० पहाड़ की लाल मिट्टी ।

प्रा० गेरुआ -(गेरू) गु० गेरू से अथवा गेरू जैसा रंगा हुआ ।

सं० गेह -(ग=गणेशजी, ईह्=चाहना अर्थात् घर की नेव डालने के दिन ही से घर में गणेशजी को स्थापन करते हैं) पु० घर, मकान ।

प्रा० गेहूं -(सं०गोधूम, गुध्=ढकना) पु० गोहूं, एक प्रकार का अनाज, गंदुम ।

प्रा० गेहुंआ, गेहुंवा -(गेहूं) पु० गेहूं का रंग, २ एक प्रकार की घास, गु० गेहूंवरणा, सांवला, गेहूं के रंग जैसा ।

प्रा० गेगली -स्त्री० बोदी, फूहड़, लुथरी, बेसलीका ।

प्रा० गैया, गइया -(सं० गौ, गम्=जाना) स्त्री० गाय ।

प्रा० गैल -पु०रस्ता, मार्ग, पैंड़ा, बाट ।

सं० गो -(गम्=जाना) पु० स्त्री०गाय, गैया, धेनु, २ स्वर्ग, ३ किरण, ४ पृथ्वी, धरती, ५पानी, ६ वाणी, बोली, ७ इन्द्रिय, ८ स्वर्ग, किरण ९ वज्र ।

प्रा० गोई -(सं०गुप्त) गु० छिपाहुआ, गुप्त, क्रि० स० छिपाया ।

सं० गोकर्ण -पु० पुरुषविशेष, मृग ।

सं० गोकुल -(गो=गाय, कुल=समूह वा घर) पु० व्रज, मथुरा के पास एक गांव जहां नन्दजी रहते थे और जहां श्रीकृष्ण ने अपना बालपन बिताया, श्रीकृष्ण का जन्म स्थान, २ गायोंका समूह, ३ गायों के रहने की जगह ।

प्रा० गोखुरू (सं०गोखुर, गो=गाय, खु=खुर) पु० एक पौधे का नाम, २ एक प्रकार का गहना ।

सं० गोचर -(गो=इन्द्रिय, चर=चलना जिसमें इन्द्रियां जाती हैं) पु० इन्द्रियों के विषय जैसे रूप, रस, गन्ध, शब्द और स्पर्श, गु० जो इन्द्रियों से जाना जाय ।

प्रा० गोट (सं०गुटिका) स्त्री० चौपड़ वा शतरंज की गोटी ।

प्रा० गोट -स्त्री० संजाफ, कोर ।

प्रा० गोटा -पु० सोना या चांदी के बुने हुए तार, किनारी, तागतोड़ ।

प्रा० गोटी (सं०गुटिका) स्त्री०शीतला का दाग, चेचक का दाग ।

प्रा० गोड़ -पु० पांव, पैर, पिंडली, टांग । [खुर्चना ।

प्रा० गोड़ना -क्रि० स० खोदना,

प्रा० गोण -(सं०गोड़ी, गुण=बढ़ा-

ना) स्त्री० थैला, बोरा, अनाज डालने का थैला। [जात, कुल।

प्रा० गोत-(सं० गोत्र) पु० वंश,

सं० गोतम-पु०एक ऋषिका नाम, जिसने न्यायशास्त्र बनाया।

सं०गोतमनारी-स्त्री० गोतम की स्त्री, अहल्या।

प्रा० गोतिया, गोती (गोत)पु० जातभाई सम्बन्धी, कुटुम्बी।

सं०गोत्र-(गो=पृथ्वी, त्र=बचाना) पु०गोत,कुल,वंश, जाति२पहाड़।

सं० गोत्रज (गोत्र=गोत, जन्=पैदा होना) पु० गोतिया, गोती, एक गोत का, संबंधी।

सं० गोतीत-(गो=इन्द्रिय, अतीत=परे) गु० जो इन्द्रियोंसे नहीं देखा-जाय, अगोचर।

प्रा० गोद, गोदी (सं०क्रोड़) स्त्री०अंकवार।

सं० गोदान-(गो=केश, गौ, दान=देना) पु० मुण्डन, केशान्तरूप, संस्कार भेद, अथास्य गोदान विधे रनन्तरमितिरघुः गौपुण्यकरना।

प्रा० गोदपसारना-बोल०मांगना, जांचना।

प्रा० गोदलेना-बोल० ले पालना, बेटा करलेना, पोस पूत करना।

सं० गोदावरी(गो=स्वर्ग,दा=देना) स्त्री० एक नदी का नाम जो दक्षिण में है।

सं०गोधन-(गो+धन)पु०गोरूपधन।

सं० गोधूम-पु० गेहूं।

सं० गोधूलि-(गो=गाय, धूलि,रज, अर्थात् जिस समय जंगल से शहर में आने से गायों के पैरसे रज उड़ती है) स्त्री० संध्या, सायंकाल, सूर्य के अस्त होने का समय।

प्रा० गोना, गोवना (सं०गोपन) क्रि०स० छिपाना।

सं० गोप-(गो=गाय, पा=पालना) पु० ग्वाला, अहीर, घोसी।

प्रा० गोप-पु० गले में पहनने का एक गहना।

सं० गोपन-(गुप्=छिपाना, बचाना) पु० छिपाव,लुकाव,दुराव, बचाव।

सं० गोपनीय (गुप्=छिपाना) म्मि० छिपाने योग्य, गुह्य।

सं गोपाल, गोपालक (गो=गाय, पाल्=पालना) पु० गोप, ग्वाला,अहीर,गायोंकोपालनेवाला।

सं०गोपी-(गोप) स्त्री० ग्वालिन, अहीरी।

सं० गोपीनाथ (गोपी=ग्वालिन, नाथ=स्वामी) पु० श्रीकृष्ण, गोपियों का पति।

सं०गोप्य-(गुप्+य,गुप्=छिपाना) म्मि० छिपानेयोग्य।

प्रा० गोबरगणेश-गु०मोटा,स्थूल।

प्रा० गोभी-स्त्री० एक तरकारी और पौधे का नाम।

सं० गोमती-(गो=गाय, वा पानी, मती=वाली) स्त्री० एक नदी का नाम।

सं० गोमय-(गो=गाय) पु० गोबर।

सं० गोमायु (गो=बुरी वाणी, मा=फेंकना, वा शब्द करना) पु० सियाल, गीदड़, शृगाल।

सं० गोमुखी-(गो=गाय, मुख=मुंह, जिसका मुंह गाय कैसा है) स्त्री० बनातकी बनीहुई थैली जिसमें हिंदू लोग माला डालकर जप करते हैं २ हिमालय पहाड़में एक गुफा जहां से गङ्गा निकली हैं गङ्गोत्तरी।

सं० गोमेध-(गो=गाय, मेध=यज्ञ) पु० गायकी बली, गोबध यज्ञ।

सं० गोरस-(गो+रस) पु०दूध दही मट्ठा आदि [श्वेत, गौर।

प्रा० गोरा-(सं० गौ) गु० उजला,

प्रा० गोरू-(सं० गौ) पु०बैल, बछड़ा, गौ।

सं० गोलक-(गुड्+अक) पु०विधवासे जार पुत्र, २ कन्दुक, ३ गोलोक, ४गुड़, ५ कलश, घड़ा जिस में महसूल के रुपये पैसे डाले जाते हैं ६ नेत्रस्थान।

प्रा० गोला-(सं० गोल, गुड्=बचाना) पु० घेरा, मंडल, वृत्त, २ तोप का गोला, लोहे का गोल गोल पिंडा, ३ नारियलका गूदा, ४ अनाज रखनेकाकोठा, खत्ता, अनाजकीमंडी।

प्रा० गोलाकार-(गोल+आकार) पु० गोलरूप। [गोला।

प्रा०गोली-(सं०गोल) स्त्री० छोटा

प्रा० गोलीमारना-बोल० गोली चलाना, बंदूक चलाना, बंदूक छोड़ना, मारना।

सं० गोवर्द्धन-(गो=गाय, बर्द्धन=बढ़ाने वाला) पु० वृन्दावन में एक पहाड़ है जिसको जब इन्द्रने कोप कर के मूसलाधार मेह बरषाया था तब श्रीकृष्णने सब ब्रजवासियों को बचाने के लिये अपनी छंगुनी अंगुली पर उठाया था।

सं० गोविंद-(गो=वेद की भाषा, विद्=पाना, अर्थात् जो वेदसे जाने जाते हैं अथवा गो=गाय, विद्=पाना अथवा गो=स्वर्ग, विद्=पाना अर्थात् जिसकी भक्ति करनेसे स्वर्ग पाते हैं) पु० श्रीकृष्ण का नाम, विष्णु, भगवान, वेद लभ्य।

सं० गोशाला-(गो=गाय, शाला=जगह) स्त्री० गाय बाँधने की जगह, खड़क, गाय का घर, गाय का बाड़ा।

सं० गोष्ठ–(गो=गाय,स्था=ठहरना) पु० गोशाला, गाय का बाड़ा ।

सं० गोष्ठी (गो=बोली, स्था=ठहरना, अर्थात् जहां बहुत बात चीत होती है) स्त्री० सभा ।

प्रा० गोसैंया } (सं०गो=स्वामी)
गुसैंयां } पु०ईश्वर,परमेश्वर।

सं० गोस्वामी–(गे =स्वर्ग,वा इंद्रिय वा गाय, स्वामी=मालिक,) पु० ईश्वर, २ गुरु, महन्त, ३ गुसांई ।

प्रा० गोह–(सं०गोधा,गुध्=ढकना) पु० विसखपरा, टिकटिकी ।

प्रा० गोहार–पु० हुल्लड़, रौला ।

प्रा० गोहूं–(सं० गोधूम) पु०गेहूं ।

प्रा० गौं–पु० अवसर,सुभीता, अवकाश, दांव, घात ।

सं० गौड़–पु० मध्य बंगाला २ एक पुराने शहर का नाम जो पहले बंगालेकी राजधानीथा,३ ब्राह्मणों की एक जात ।

सं० गौड़ी–(गुड़)स्त्री०गुड़कीबनीहुई मदिरा ।

सं० गौण–भा० पु० अमुख्य, जो ठीकनहीं ।

प्रा० गौन–(सं०गमन) पु० जाना, गवन, गमन, कूच, बदाई ।

प्रा० गौना–(सं०गमन) पु०ब्याह के कुछ महीने अथवा बरस के पीछे दुलहिनकोअपनेघरलाना,रुखसती।

सं० गौर–(गु० अथवा गुर्=जाना अर्थात् जिस में मन जाता है) गु० गोरा, श्वेत, उजला ।

सं० गौरव–(गुरु=बड़ा) भा० पु० बड़ाई, गुरुत, मान ।

प्रा० गौरिया–स्त्री० चिड़िया ।

सं० गौरी (गौर) स्त्री० पार्वती, गिरिजा, २ आठ बरस तक की कन्या, ३ एक रागिणी का नाम, ४ गोरेरंग की, ५ तुलसी ६ गोरोचन ।

सं० गौरीश–(गौरी=पार्वती,ईश=पति) पु० महादेव, शिव ।

प्रा० ग्यारह } (सं० एकादश) गु०इ
इगारह } ग्यारह,एकादश, ११ ।

सं० ग्रथित–(ग्रन्थ्=गूंथना) र्म्म० गूंथा हुआ, बँधा हुआ, पिरोया हुआ, मुन्सलिक ।

सं० ग्रन्थ–(ग्रन्थ्=जोड़ना,इकट्ठा करना) पु० पुस्तक, शास्त्र, २ गुरु नानक की बनाई हुई सिक्खों की धर्म पुस्तक ।

सं० ग्रन्थकर्त्ता } (ग्रन्थ=शास्त्र, कर्त्ता वा कार=बनाने वाला, कृ=करना) पु० शास्त्र बनानेवाला, पुस्तक बनानेवाला ।
ग्रन्थकार }

सं० ग्रन्थि–(ग्रन्थ्=जोड़ना,बांधना) स्त्री० गांठ, सन्धि, जोड़ ।

सं० ग्रस्त–(ग्रस=खाना) र्म्म०खायाहुआ, लियाहुआ, पकड़ाहुआ ।

सं० ग्रह–(ग्रह्=लेना) पु० सूर्य्य, चांद, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनीचर, राहु और केतु, ये नवग्रह, नौग्रह, २ घर, ग्रहदशा=शनीचरी, बुरे दिन, ग्रहपीड़ा।

सं० ग्रहण–(ग्रह्=लेना) पु० लेना, पकड़ना, २ गहन, सूर्य्य और चांदको राहु के ग्रसन का समय—सूर्य्य और चांदके बीच में धरती के आने से जब धरती की छाया चांदमें पड़ती है तब चन्द्रग्रहण होता है, और जब धरती और सूर्य्य के बीच में चांद आ जाता है तब उसको सूर्य्य ग्रहण कहते हैं।

सं० ग्राम–(ग्रस्=खाना, अर्थात् जहां खाने पीने के लिये कुछ मिले) पु० गांव, बस्ती, खेड़ा, पुरा, २ समूह, बहुतायत।

सं० ग्राम्य–(ग्राम=गांव) गु० गांव का बासी, गंवार, असभ्य, मूर्ख, ग्राम्य भाषा–गंवारू बोल चाल, गांव की बोली।

सं० ग्रास–(ग्रस्=खाना) पु० कवल, कौर, कवा, लुक़मा।

सं० ग्राह–(ग्रह्=लेना) पु० हांगर, मगर मच्छ, घड़ियाल, कुम्हीर।

सं० ग्राहक–(ग्रह्=लेना) क० पु० लेने वाला, मोल लेनेवाला, गाहक, खरीददार। [दार।

सं० ग्राही–क० पु० लेनेवाला खरीद

सं० ग्राह्य–(ग्रह्=लेना) गु० लेनेयोग्य, ग्रहण करने योग्य।

सं० ग्रीवा–(गॄ=निगलना) स्त्री० गरदन, गला, कंठ।

सं० ग्रीष्म–(ग्रस्=खाना, वा पकड़ना) स्त्री० गर्मी की ऋतु (ऋतु शब्द को देखो)।

सं० ग्लानि–(ग्लै=मलीन होना, वा हर्ष का नाश करना) स्त्री० घिन, नफ़रत, घृणा, २ थकावट, मांदगी।

प्रा० ग्वाल, ग्वाला } (सं० गोपाल) पु० अहीर, गोप।

प्रा० ग्वालिन (ग्वाल) स्त्री० गोपी, अहीरी।

प्रा० ग्वैंड़, ग्वैंड़े } क्रि० वि० पास, समीप, निकट।

प्रा० ग्वैंड़ा–पु० नगर का आसपास।

सं० ग्लौ–पु० प्रकाश, कपूर, चन्द्रमा, हर्ष, आनन्द।

—:o:—

घ

सं० घ–पु० घंटा, २ घर्घरशब्द ३ मेघ, घाम।

प्रा० घघरा–पु० घाँघरा, लहँगा, साया।

सं० घट–(घट्=बनाना) पु० घड़ा, २ देह, कूट, कपट, कुम्भराशि।

सं० घटक–(घट्+अक) क० पु० मध्यस्थ, दलाल, बिचवैया, फलोत्पत्ति, कार्यकर्त्ता, योगक, मिलाने वाला।

प्रा० घट-पु० मन, जी, अन्तःकरण।

सं० घटज (घट=घड़ा, जन्=पैदा होना) पु० अगस्त्यऋषि, कुंभज।

सं० घटयोनि (घट=घड़ा, योनि=पैदा होनेकी जगह) पु० अगस्त्यऋषि जो घड़े में पैदा हुआ।

प्रा० घटती (घटना) स्त्री० कमती, घटी, टोटा।

प्रा० घटना-क्रि० अ० कम होना, कमती, न्यून होना, २ योजना, हादसा, वाक़िया, संयोग।

प्रा० घटाव } घटनि } (घट्=इकट्ठा होना) स्त्री० बादलोंकासमूह, बादलोंका उमंडना, बादल, २समूह आडम्बर।

सं० घटाटोप (घटा=समूह, आटोप=ढकना) पु० पालकी अथवा रथके ढकनेका कपड़ा, बहुत बादल। [थोड़ाकरदेना।

प्रा० घटाना-क्रि० स० कम करना,

प्रा० घटाव-भा० पु० कमती, न्यूनता, उतार, २ घटाने का चिह्न, ऋण।

प्रा० घटिया-गु० थोड़े मोल का, सस्ता। [सान।

प्रा० घटी-स्त्री० घाटा, हानि, नुक़-

सं० घटी } घटिका } (घट्=बनाना) स्त्री० घड़ी, साठ पल, मुहूर्त, २ छोटा घड़ा।

सं० घट्ट-(घट्=बनाना) पु० घाट, २ रस्ता।

प्रा० घड़घड़ाना-क्रि० अ० गर्जना, कड़कड़ाना।

प्रा० घड़ना-क्रि० स० गढ़ना, बनाना, गहना बनाना या और कोई धातु को गढ़ना।

प्रा० घड़ा (सं० घट) पु० मिट्टी का बरतन, गगरा, कलश, कुम्भ।

प्रा० घड़ियाल (सं० घटिका, वा घटी) स्त्री० घण्टा, २मगरमच्छ, कुंभीर।

प्रा० घड़ी (सं० घटी) स्त्री० साठ पल का समय, चौबीस मिनट, २ समय जानने की कल।

प्रा० घड़ीमेंतोला घड़ीमेंमाशा-बोल० यह उस आदमी के लिये बोला जाता है जिसका स्वभाव या मन घड़ी घड़ी में बदलता हो।

सं० घण्टा-(हन्=मारना) पु० घड़ी, घड़ियाल।

सं० घण्टाली-(घण्टा) स्त्री० छोटी घण्टी जो बैलों के गले में डालते हैं, घण्टी।

सं० घन (हन्=मारना) पु० बादल, घटा, बादलों का समूह, २ हथौड़ा, निहाई, ३ हिसाब में एकही अंक को उसी से तीन बार गुणने को घन कहते हैं जैसे ३ का घन २७

४ रेखागणितमें ऐसी चीज़ जिसमें लंबाई, चौड़ाई और मुटाई ये तीनों पाई जायँ, गु० ठोस, दृढ़, निविड़, गहरा, घना।

सं० घनघोर (घन=बादल, घोर=डरावना) पु० गहरा बादल, घटा, घनगर्ज, डरावना शब्द।

सं० घननाद (घन=बादल, नाद=शब्द) पु० रावण का बेटा, मेघनाद, इन्द्रजित्।

सं० घनमूल (घन+मूल) पु० घन का मूल, जिस संख्या का घन किया गया, जैसे २७ का घनमूल ३।

सं० घनरस-पु० सघन, गोंद, अवलेह, द्रव, गुर्च, कपूर, जल, सिद्धरस।

सं० घनश्याम (घन=बादल, श्याम=काला) पु० श्रीकृष्ण, २ काली घटा, गु० बादल जैसा काला।

सं० घनसार-पु० कपूर, पारा, जल।

प्रा० घना (सं० घन) गु० गहरा, सघन, २ बहुत, ढेर।

प्रा० घनेरा, घनेरी (सं० घन) गु० बहुत, घनेरी, अधिक, गुंजान, बहुतघनी।

प्रा० घबराना-क्रि० अ० व्याकुल होना, हड़बड़ाना।

प्रा० घबराहट (घबराना) भा० स्त्री० हड़बड़ी, झंझट, धड़का, व्याकुलता, बेकली, उलझेड़ा, हलचल।

प्रा० घवरि-पु० गुच्छा।

प्रा० घमंड-पु० अहंकार, गर्व, अभिमान, दर्प, गरूर।

प्रा० घमंडी-गु० अभिमानी, गर्वीला।

प्रा० घमसान (सं० घोरश्मशान) पु० लड़ाई, युद्ध, संग्राम, बड़ीलड़ाई।

प्रा० घमोई-स्त्री० नरसल, नरकट, बेत, सरकण्डा, नल।

प्रा० घर (सं० गृह) पु० मकान, रहने की जगह, वास, बासा, डेरा, २ खाना, खन।

प्रा० घरघालना-बोल० उजाड़ना, नाश करना, घरनाश करना।

प्रा० घरचलाना-बोल० घरकाखर्च चलाना, घरका काम चलाना।

प्रा० घरजाना-बोल० घरका नाश होना, उजड़ना, बिगड़ना।

प्रा० घरडुबोना-बोल० किसीका घर बिगाड़ना, किसी के घराने का नाश करना।

प्रा० घरडूबना-बोल० नाशहोना, घरका नाश होना, उजड़ना।

प्रा० घरबैठना, घरबैठजाना बोल० सर्वस्वनाश होना, सर्वनाशहो जाना, घर डूबना, घरजाना।

प्रा० घरहोना-बोल० स्त्री और पुरुषके आपसमें प्रीतिहोना या मन मिलना।

प्रा० घरणी, घरनी (सं० गृहिणी) स्त्री० घरवाली, लुगाई, यों, पत्नी, स्त्री।

प्रा० घरनई (सं० घटनौका, घट= घड़ा, नौका=नाव) स्त्री० घड़ोंसे बनाई हुई नाव,चौघड़ा, बेड़ा ।

प्रा० घरबार-पु० घराना, कुनबा ।

प्रा० घरबारी-गु० गृहस्थी, कुटुंबी ।

प्रा० घराना-पु०कुटुम्ब, घरके लोग।

प्रा०घरी-स्त्री०तह,घड़,चुनत,२घड़ी ।

प्रा० घरेला (घर) गु०घरका,पालतू ।

सं० घर्म्म (घृ=सींचना) पु० गर्मी, घाम, धूप । [नेवाला, घिसैया ।

सं० घर्षक (घृष्+अक) क०पु०घिस-

सं० घर्षित (घृष्+इत) कर्म० गु० घिसा हुआ । [सना, रगड़ना ।

सं० घर्षण (घृष्=रगड़ना) पु० घि-

प्रा० घसना } घिसना } (सं०घर्षण) क्रि०स० रगड़ना, मलना ।

प्रा० घसियारा (सं० घासहारक) पु० घास काटनेवाला ।

प्रा० घसीटना (सं० घृष्=रगड़ना) क्रि० स० खींचना, खींचलेजाना ।

प्रा० घांटी-स्त्री० टेंटुवा, नरेटी ।

प्रा० घाघ-गु० बूढ़ा, जिसने बहुत देखा सुना हो ।

प्रा० घाघरा (सं० घर्घर, घृ=सींचना) स्त्री० सरयू नदी का नाम, २ पु० लहँगा ।

प्रा० घाट (सं० घट्ट) पु० नदी या तालाव आदि में न्हाने की अथवा उतरने की जगह ।

प्रा० घाट पु० डौल, रूप, सूरत, २ घटी, कमी, गु० कम ।

प्रा० घाटा पहाड़का चढ़ाव, पहाड़ में रस्ता, २ घटी, कमी, नुकसान ।

प्रा० घाटिया (घाट) पु० घाटपर रहनेवाला, ब्राह्मण, गङ्गापुत्र ।

प्रा० घाटी (सं० घट्ट) स्त्री० पहाड़ में गली, पहाड़ में तङ्ग रस्ता, दर्रा ।

सं० घात (हन्=मारना)पु० मारना, चोट, प्रहार, हत्या, दांव, मौक़ा ।

प्रा० घात-स्त्री० दांव, विचार, इरादा, दांव की जगह, पेच ।

प्रा० घातकरना-बोल० घातलगाना, घातमें रहना, छिपके बैठना ।

प्रा० घातताकना-बोल० गौंतकना, अवसर देखना, दांव पाना ।

सं० घातक } घातुक } (हन्=मारना) क०पु० मारनेवाला, हत्यारा ।

सं० घाती (हन्=मारना) क० पु० मारनेवाला——घातिनी=नाश करनेवाली, मारनेवाली ।

प्रा० घानी-स्त्री० कोल्हू, तिलसेतेल निकालने की कल, २ ऊख से रस निकालने की कल । [गर्मी ।

प्रा० घाम (सं० घर्म्म) स्त्री०, धूप,

प्रा० घामड़-गु० भोला, सीधा, उल्लू ।

प्रा० घायल (घाव=चोट, सं० ला= लेना) गु० घाव लगा, जखमी ।

प्रा० घालक क० पु० नाशकरनेवाला

प्रा० घालना क्रि० स० उजाड़ना, नाशकरना, २ डालना, घुसेड़ना ।

प्रा० घाला-स्त्री० नाशक्रिया ।

प्रा० घाव-पु० चोट, व्रण, जखम ।

सं० घास (घस्+खाना) पु० तृण, फूस, चारा, गोरू, गाय आदि का खाना ।

प्रा० घिघियाना-डरसे या खुशी से बोल नहीं निकलना, २ फुसलाना, बहलाना, ३ लड़खड़ाना, तुतलाना, हकलाना, ४ लल्लोपत्तो करना, गिड़गिड़ाना, बहुतगरीबी से प्रार्थना करना, बिनती करना ।

प्रा० घिघीबंधजाना-बोल० तुतलाना, हलकाना, २ मारे लाजके या डरके मुँहसे बोलनहीं निकलना ।

प्रा० घिण, घिन (सं० घृणा) स्त्री० नफरत, गलानि, अवज्ञा, घिन्ना ।

प्रा० घिया स्त्री० घियातुरई, एक तरकारी का नाम ।

प्रा० घिरना क्रि० अ० घिरजाना, बन्द होजाना, घेरे में आजाना, बादलों का उमड़ना ।

प्रा० घिरनी (सं० घूर्ण=घूमना) स्त्री० चरखी, छोटा पहिया, बल दिया में एक कल का नाम, २ रस्सी बटने की कल, ३ लोटन कबूतर, एक तरह का कबूतर ।

प्रा० घिरनीखाना-बोल० लोटन खाना, गोलगोल जाना, गोलघूमना ।

प्रा० घी (सं० घृत) पु० घृत, घी ।

प्रा० घुंडी स्त्री० बटन, बूताम ।

प्रा० घुटना-पु० ठेवना, गोड़ा, जानू ।

प्रा० घुटनोंचलना-बोल० टेवने से चलना, (जैसे बालक) खिसकना ।

प्रा० घुड़ (घोड़ा) पु० घोड़ा ।

प्रा० घुड़चड़ा-पु० घोड़े पर चढ़ने वाला, सवार ।

प्रा० घुड़दौड़-स्त्री० घोड़ों का दौड़ना, वह जगह जहां शर्त करके दो दो आदमी घोड़ा दौड़ाते हैं ।

प्रा० घुड़बहल-चार पहियों का रथ जिसमें घोड़े जुतते हैं ।

प्रा० घुड़मुँहा-गु० जिसका मुँह घोड़े कैसा हो ।

प्रा० घुड़साल पु० तबेला, अस्तबल ।

सं० घुण (घुण=घूमना) पु० एक कीड़ा जो लकड़ी को और अनाज को खाकर थोथा कर डालता है ।

प्रा० घुणा (सं० घुण) गु० घुणका खाया हुआ, थोथा, पोला ।

सं० घुणाक्षरन्याय (घुण+अक्षर+न्याय) पु० घुनके खाने से

जो लकड़ी में कभी अक्षर का सा रूप बन जाता है तात्पर्य्य यह है कि कोई वस्तु अकस्मात् संयोग से प्राप्त होजाय तो इस स्थल पर कहा जाता है ।

प्रा० घुप-पु० अन्धेरा ।

प्रा० घुमंडना-क्रि० अ० बादलों का घिरना ।

प्रा० घुमाना (घूमना) क्रि० स० गोल गोल फिराना, फिराना, २ बहकाना ।

प्रा० घुरकना } (सं० घुर=डरना)
घुरकाना } क्रि० स० धमकाना, झिड़की देना, डराना ।

प्रा० घुरकी (घुरकना) स्त्री० धमकी, झिड़की ।

प्रा० घुरनाना—क्रि० स० खर्राटा मारना, नाकखरखराना । [जाना ।

प्रा० घुसना-क्रि० अ० पैठना, भीतर

प्रा० घूंगर } पु० लहरायेहुये बाल,
घूंघर } मुड़ेहुये बाल, अंगूठिये बाल ।

प्रा० घूंघची } (सं० गुञ्जा) स्त्री०
गुंघची } लाल चिरमी, रत्ती ।

प्रा० घूंघट--पु० अचले की आड़, बुरका, ओढ़नी के अंचले से मुँह ढांकना ।

प्रा० घूंघटकाढ़ना--बोल० ओढ़नी से मुँह ढांकना, लाजकरना ।

प्रा० घूंघटकरना—बोल० ओढ़नीसे मुँह ढांकना, बुरका डालना, मुँह छिपाना, लाजकरना ।

प्रा० घूंघरू } (सं० घर्घरा) पु०
घुंघरू } छोटी घंटी, क्षुद्रघंटिका, पांव में पहनने का एक प्रकार का गहना ।

प्रा० घूंस--स्त्री० बड़ामूसा, बड़ाचूहा ।

प्रा० घूंसा-पु० मुक्का, मुक्की, धप्पा, मूका ।

प्रा० घूघू-पु० उल्लू एक जानवरका नाम ।

प्रा० घूमघुमाला-बोल० घेरदार ।

प्रा० घूमना (सं० घूर्ण=घूमना) क्रि० अ० फिरना, गोल गोल फिरना, चक्कर खाना ।

प्रा० शिरघूमना-बोल० सिरमें कुछ दर्द होना, सिर फिरना, सिरचकराना ।

प्रा० घूरना-क्रि० स० ताकना, ताक लगाना, २ कोपकी आंखसे देखना, क्रोध से देखना ।

सं० घूर्णन (घूर्ण=घूमना) भा० पु० भ्रमण, घूमना ।

सं० घूर्णित-क० पु० भ्रमित ।

प्रा० घूस-स्त्री० बड़ामूसा, २ रिशवत, अकोर, मुँहभरी, मुँहतोपी ।

सं० घृणा (घृ=सींचना) स्त्री० घिन, ग्लानि, नफ़रत, अवज्ञा, २ धिक्कार, ३ करुणा, दया ।

सं० घृणित (घृण+इत) म्मी० निन्दित, अनादरित, गन्दा, मकरूह।
सं० घृत (घृ=सींचना) पु० घी, घिउ, सर्पिष्।
सं० घृष्ट (घृष्=घिसना) म्मी० घर्षित, घिसा हुआ।
सं० घृष्टि (घृष्+ति) भ० पु० घिसना, मारना, शूकर, स्त्री० विष्णु क्रान्ता, शूकरी, शुअरी।
प्रा० घेंटा-पु० सूअरका बच्चा।
प्रा० घेगा } पु० गलगण्डरोग, गले
घेघा } का रोग।
प्रा० घेर (घेरना) पु० घेरा, मंडल।
प्रा० घेरा (घेरना) पु० मण्डल, गोलाकार, २ नाकाबन्दी, छेकना, क़िलाबन्दी, बेढ़, अहाता।
प्रा० घेराडालना-बोल० चारोंओर से छेकना, घेरलेना, रोकलेना, नाकाबन्दी करना, अहाताकरना।
प्रा० घेरे में पड़ना-बोल० घिरजाना, घेरेमें आजाना, बन्द होजाना।
प्रा० घेवर-पु० एकतरहकी मिठाई।
प्रा० घोंघा-पु० एक जानवर का नाम, शम्बूक।
प्रा० घोंटना } क्रि० स० साफ़ क-
घोटना } रना, चिकना करना, ओपना, रगड़ना, मलना, २ पु० लोढ़ा, पत्थर जिससे चीज घोटी जाती है।
प्रा० घोंसला-पु० खोंता, पखेरुओं का बासा, पखेरुओं का घर।
प्रा० घोखना (सं० घुष्=शब्द करना क्रि० स० दोहराना, पाठ सुनाना, बराबर कहना, चिन्तना, ज़ोर से बोलना।
प्रा० घोटन-भा० घोटना, हलकरना।
प्रा० घोटा (घोटना) पु० घोटने की लकड़ी।
प्रा० घोड़ा (सं० घोटक, घुट्=रोकना वा फिरना) पु० एक जानवर का नाम, अश्व, तुरंग, बाजि, घोटक, २ बंदूक की टोंटी।
प्रा० घोड़े को सरपट हांकना-बोल० घोड़े को बहुत जल्दी से दौड़ाना।
सं० घोर (घुर्=डरावना होना) गु० डरावना, भयानक, २ गहरा, पु० शिव, महादेव, २ डरावनाकाम—३ ढोल का शब्द।
सं० घोरनिद्रा (घोर=गहरी, निद्रा =नींद) स्त्री० गहरी नींद।
सं० घोल (घुड्=रोकना) पु० मट्ठा, छांछ, मही। [बहाना, छल।
प्रा० घोलघुमाव-पु० टालमटोल,
सं० घोष (घुष्=उच्चस्वर से बोलना) धि० पु० अहीरों का ग्राम, आभीरपल्ली, शब्द, अहीर, गोपाल।
सं० घोषक-क० पु० विलापकर्ता, शब्द-

कर्ता, बुलानेवाला, रटनेवाला।

सं० घोषण-भा० पु० यादकरना, रटना, प्रचार करना।

सं० घोषणपत्र-पु०एलान,इश्तिहार।

प्रा० घोसी (सं० घोस) पु० मुसलमान ग्वाला।

सं० घ्राण (घ्रा=सूंघना) पु० सुगन्ध, गन्ध, बू, बास, सूंघना, २ नाक, नासिका।

सं० घ्राणेन्द्रिय (घ्राण+इन्द्रिय) ण० स्त्री० सूंघने की इन्द्री, नाक, नासिका। [वाला।

सं० घ्रायक-क०पु० गंधग्राहक, सूंघने

च

सं० च-पु० शिव, २ चांद, ३ चौर, ४ कछुवा, ५ दुष्ट, ६ निर्बीज-समुच्च० और, फिर, पुनि।

फ़ा० चंग-स्त्री० गुड्डी, पतंग, २ बीन, किंगरी, मुरचंग। [भलाचंगा।

प्रा० चंगा-गु० निरोगी,निरोग,सुखी,

प्रा० चंगाकरना-बोल० अच्छा करना, बीमारी से अच्छा करना।

प्रा० भलाचंगा-बोल० निरोग, अच्छा, सुखी।

प्रा० चंगेर-पु० फूलरखनेका बरतन।

प्रा० चंगेरा-पु० खांचा, कठरा, टोकरा, चंगेरी=स्त्री० टोकरी, खचिया, कठरी।

प्रा० चंचनाना-क्रि० अ० टीसमारना, सनसनाना, २ चनचन ऐसा शब्द करना।

प्रा० चंडोल-पु० डोला, पालकी, डोली, चौपाला, २ एक पखेरू का नाम, ३ एक खिलौने का नाम।

प्रा० चंदला-गु० गंजा। [याना।

प्रा० चंदवा-पु० चांदनी, छोटासामि-

प्रा० चंदा (सं० चन्द्र) पु० चांद।

प्रा० चंदा—पु० बाछ, उगाही लगती, लगान, बिहरी

प्रा० चंदेला (सं०चंद्र) पु० राजपूतों की एक जात जो अपने तई चंद्रवंशी बतलाते हैं।

प्रा० चंवर (सं० चमर) पु० सुरहगाय की पूंछ का बनाहुआ चमर जो राजाओं के सिरपर मक्खी आदिको दूर करनेके लिये हिलाया जाताहै।

प्रा० चक (सं० चक्र) पु० जागीर, इजारा, जोती बोई हुई धरती।

प्रा० चकई (सं० चक्रवाकी) स्त्री० चकवी, २ (सं० चक्र) एक खिलौने का नाम।

प्रा० चकनाचूर--पु० टुकड़ा, टूक, छोटेछोटे टुकड़े, करतल।

प्रा० चकनाचूरहोना-बोल० टूक टूकहोना, चूरचूरहोना, टुकड़े२ होना।

प्रा० चकनाचूरकरना--बोल० चूर

चूर करना, टुकड़े २ करना, टूक २ करना। (कपड़ा, २ मोज़ा।

प्रा० **चकमा**-पु० एक भांतिका ऊनी

प्रा० **चकरवा**-पु० धूमधाम, चकरग।

प्रा० **चकरबामचाना**—बोल० धूम धाम करना।

प्रा० **चकरा**-पु० दाल का बड़ा।

प्रा० **चकराना**-क्रि० अ० अचंभे में होना। [दासी।

प्रा० **चकरानी**(चाकर)स्त्री०टहलवी,

प्रा० **चकला**-(सं० चक्र) पु० पतुरिया का घर, वेश्यालय, २ एक भांतिका कपड़ा जो रेशम और रूई से बनाया जाता है, गु० चौड़ा।

प्रा० **चकला** (सं० चक्रल)पु० देश का एकभाग जिसमें बहुतसे परगने होते हैं, मंडल, प्रदेश। [हाकिम।

प्रा० **चकलेदार**-पु० चकले का

प्रा० **चकवा** (सं० चक्रवाक) पु० एक पखेरू का नाम, २ (सं० चक्र) भँवर।

प्रा० **चकाचौंध** } स्त्री० तिरमिरी,
चकाचौंधी } अँधियारी।

प्रा० **चकावी**-स्त्री० भंसियादाद।

सं० **चकित** (चक्=अचंभा करना, वा भ्रान्ति करना) पु० अचंभित, अचंभे में विस्मित, २ व्याकुल, घबरायाहुआ, डरा हुआ।

प्रा० **चकोत्रा**-पु० एक फलकानाम।

सं० **चकोर** (चक्=तृप्तहोना, प्रसन्न-होना) पु० एक पखेरू का नाम जो चांद को देखकर बड़ी प्रसन्नता से आकाश में ऊंचा उड़ता है।

प्रा० **चकौंदा** } (सं० चक्रमर्दक,
चकौंड़ } चक्र=गोल २ दाद, मर्दक=नाश करनेवाला) पु० एक पौधा जो दाद की दवाई में काम आता है।

प्रा० **चक्का**(सं०चक्र=गोल) पु० दही जमाहुआ, दूध, २ गाड़ी का पहिया, ३ घेरा, गु० गोल, गाढ़ा, २ जमा हुआ (जैसे दही)।

प्रा० **चक्की** (सं० चक्र=गोल) स्त्री० पाट, जांता, चाकी, २ खुरिया, चपनी, घुटने की ढकनी, ३ गाज, बिजली, ४ लड़कों के एक खिलौने का नाम।

प्रा० **चक्कू**-पु० छुरी, चाकू।

प्रा० **चक्कर**-(सं० चक्र) पु० भँवर, २ बगुला, बवंडर, ३ एक गोल शस्त्र जिसको विशेष करके सिख लोग रखते हैं, ४ गोलचाल, कावा, ५ विपत्ति जंजाल, घबराहट, ६ ओर, तरफ, दिशा।

प्रा० **चक्करदेना**-बोल० फिराना,

घुमाना, २ठगना, छलना, धोखादेना।

प्रा० चक्करखाना—बोल० फिरना, घूमना, २ धोखे में आना, ठगा जाना।

प्रा०चक्करमारना—बोल० गोलगोल घुमाना, फिराना।

प्रा०घोड़ेकोचक्करदेना—बोल०कावादेना, घोड़ेको गोल २ फिराना।

सं० चक्र (कृ=करना) पु० पहिया, २ कुम्हार का चाक, ३ विष्णु का अस्त्र, ४ घेरा, वृत्त, ५ व्यूहरचना, सेना को चक्रके आकार पर सजाना, ६ हाथ में एक चिह्न जो भागमानीका लक्षण है, ७भीड़, ८ सेना ९ भूमंडल, देश, मुल्क, राज, १० चकवा पक्षी, वज़ीर।

सं० चक्रपाणि (चक्र=सुदर्शनचक्र, पाणि=हाथ) पु० विष्णु जिनका अस्त्र सुदर्शनचक्र।

सं० चक्रवर्ती (चक्र=सारी पृथ्वी, वर्त्ती=होनेवाला, वृत्=होना) क० पु० सार्वभौम, सबपृथ्वीका राजा, २ बंगालेके ब्राह्मणोंकी एकपदवी।

सं०चक्रवाक (चक्र=इसशब्दकरके, वाक=कहा जावे, वच्=कहना) पु० चकवा, एक तरह का पखेरू।

प्रा० चक्रित (सं० चकित) गु०अचंभित, विस्मित, अचंभे में।

सं० चक्षुः (चक्ष=देखना) पु० आंख।

प्रा० चख } (सं० चक्षु) स्त्री० आंख,
चषु } नेत्र, नयन, लोचन।

फ़ा० चखाचखी—स्त्री० बिगाड़, विरोध। [कादेना।

प्रा० चखाना—पु० खिलाना, चस-

प्रा०चखना } (सं० चषण, चष्=
चाखना } खाना) क्रि०स० स्वा-
चीखना } द लेना, रसलेना, थोरा २ खाना।

प्रा०चङ्गा—गु०अच्छा, नीरोग, सुखी।

प्रा० चचेरा (चचा) गु० चचा का, जैसे चचेराभाई=चचेका बेटा भाई, चचेरीबहन=चचेकी बेटी बहन।

प्रा० चचोरना—क्रि० स० चूसना, लोहू चूसना, निचोड़ना। [भ्रमर।

सं०चञ्चरीक (चर=जाना) पु०भौंरा।

सं० चञ्चल (चंच=चाल, ला=लेना वा, चञ्च् अथवा चल्=चलना) गु० उतावला, चपल, अस्थिर, २ खेलवाड़ी।

प्रा० चञ्चलाई (सं० चञ्चलता) भा० स्त्री० उतावली, चपलता, अस्थिरता। [मिन्कार, ठोंठ।

सं० चञ्चु (चञ्च्=जाना) स्त्री०चोंच,

प्रा० चट (सं० झटिति) क्रि० वि० झटपट, तुरंत, उसीदम, स्त्री० रगड़, घिसाव, २ तोड़ने का शब्द तड़ाका, धड़ाका।

प्रा० चटदे तोड़ना } बोल० चटकाना, तड़-
चटसे तोड़ना } काना, तोड़ना।

प्रा० चट (चाट) स्त्री० चाट, स्वाद, खाना।

प्रा० चटकरना—बोल० खाजाना, उड़ादेना। [खायाजाना।

प्रा० चटहोना—बोल० पूरा होना,

प्रा० चटक—स्त्री० कड़क, कड़ाका, २ फुरती, जल्दी, चमक, भड़क, शोभा, पिपरामूल।

सं० चटक (चट्=तोड़ना) पु० चिड़ा, गौरैया।

प्रा० चटकना } क्रि० अ० तड़कना
चटखना } (जैसे कोयले अथवा जलती हुई लकड़ी का) फटना, टूटना, चिरना। [इकीला।

प्रा० चटकीला—गु० चमकीला, भ-

प्रा० चटपट (सं० झटिति=जल्दी, पट्=जाना) क्रि० वि० झटपट, तुरंत।

प्रा० चटपटाना (चटपट) क्रि० अ० घबराना, व्याकुलहोना, फड़फड़ाना, तड़फड़ाना।

प्रा० चटपटी (चटपट) स्त्री० उतावली, जल्दी, हड़बड़ी, घबराहट।

प्रा० चटशाल (सं० चटु=शाला वा छात्रशाला, चटु वा छात्र=लड़का, शाल=जगह) स्त्री० पाठशाला, पढ़ने की जगह, मदर्सा।

प्रा० चटाई—स्त्री० बोरिया पाटी।

प्रा० चटाका—पु० धड़ाका, कड़ाका।

प्रा० चटान } स्त्री० शिला, पत्थर,
चट्टान } पाषाण।

प्रा० चटिया (सं० छात्र) पु० विद्यार्थी, शिष्य, छात्र, चेला, शागिर्द।

सं० चटु—पु० सुन्दर, मनोहर, प्रिय, चीखना, गर्जना, चिल्लाना, चिग्घारना, पेट, तोंद।

सं० चटुल—पु० मनोहर, सुन्दर, प्रिय, रूपवान्, पूर्ण, प्रसन्न, कम्पित, पथिक, स्त्री० ज्योति, विद्युत्, बिजली।

प्रा० चटोरा (चाटना) गु० पेटू, जीभचला, खाऊ।

प्रा० चट्टा (सं० चटु, वा छात्र, पु० विद्यार्थी, पाठशाला का लड़का, स्कूल का लड़का। [फटना।

प्रा० चड़चड़ाना—क्रि० अ० तड़कना

सं० चड़ (चड़=कोप करना) पु० क्रोध, कोप, गु० क्रोधी गुस्सेवर।

प्रा० चढ़ती (चढ़ना) स्त्री० बढ़ती, लाभ।

प्रा० चढ़ना—क्रि० अ० ऊपरजाना, २ आग बढ़ना, धावा मारना, चढ़ाई करना, ३ सवार होना।

प्रा० चढ़न्दार पु० चढ़नेवाला, चढ़नेहार, वा कर्णधार।

प्रा० चढ़ाई (चढ़ना) भा० स्त्री०

धावा, चढ़ाव, हल्ला, हमला, २ चढ़ने का भाड़ा।

प्रा० चढ़ाना-क्रि०स० सवारकरना, २ भेंट करना, बलिदान कराना, ३ तारचढ़ाना, डोरीलगाना, ४ ढोल कसना, ५ ऊंचाकरना, खड़ाकरना, ६ कपड़े पर रंग चढ़ाना।

प्रा० चढ़ाव (चढ़ना) भा० पु० ऊँचाव, उँचाई, उठाव, पहाड़ में ऊपर रस्ता, २ चढ़ाई, धावा, ३ बढ़ती, ४ समुद्र की बाढ़। [बूट।

सं० चणक (चण्=देना) पु० चना,

सं० चण्ड (चडि=क्रोधकरना) गु० डरावना, भयानक, क्रोधित, तेज, उग्र, तीखा, तीव्र, तीक्ष्ण, गर्म, पु० एक दैत्य का नाम।

सं० चण्डाल, चाण्डाल (चडि=क्रोधकरना) पु० नीच, कुजात, नीच जात का मनुष्य जिसका बाप शूद्र और मा ब्राह्मणी हो, वर्णसंकर, श्वपच, निठुर, निर्दयी, पापी, दुराचारी।

सं० चण्डांशु (चण्ड+अंशु) क० पु० सूर्य, आफ़ताब।

सं० चण्डिका, चण्डी (चडि=क्रोधकरना) स्त्री० दुर्गा, देवी, काली, २ क्रोध करनेवाली स्त्री।

सं० चण्डिल (चण्ड्+इल) क० पु० शिव, रुद्र, क्रोधी, नापित, नाई।

सं० चण्डु (चण्ड्+उ) पु० मूषक, मर्कट, छोटाबन्दर।

सं० चतुर (चत्=मांगना) गु० निपुण, प्रवीण, स्याना, सियाना, बुद्धिमान्, २ छली, कपटी, धूर्त्त, चालाक, नटखट।

सं० चतुर-(चर्=मांगना) गु० चार।

सं० चतुरस्र-गु० चौखुंटा, चौकोण।

प्रा० चतुर-पु० बुद्धिमान्, होशियार।

प्रा० चतुराई (स० चतुरता) भा० स्त्री० निपुणता, प्रवीणता, स्यानपन, बुद्धिमानी, २ धूर्त्तता, कपट, नटखटी, चालाकी।

सं० चतुरंगिनी (चतुर्=चार, अङ्गिनी=अंगवाली) स्त्री० सेना जिसमें हाथी, रथ, घोड़े और पैदल चारों हों।

सं० चतुरानन-(चतुर्=चार, आनन=मुँह) पु० ब्रह्मा।

सं० चतुर्थ=(चतुर्=चार) गु० चौथा।

सं० चतुर्दशी-(चतुर्=चार, दश=दश) स्त्री० चौदस, चौदहवींतिथि।

सं० चतुर्भुज (चतुर्=चार, भुज=भुजा) पु० विष्णु, चारभुजा, २ चौखूँटा खेत, चौकोर, गु० चार हाथवाला।

सं० चतुर्मुख, चतुर्वक्त्र (चतुर=चार, मुख ना वक्त्र=मुँह, पु० ब्रह्मा।

सं० चतुर्वर्ग (चतुर्=चार, वर्ग=समूह) पु० धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष।

सं० चतुल-पु० विश्वस्त, विश्वासी, निष्कपट, मनोहर, सुन्दर।

सं० चतुष्क-स्त्री० मशकहरी अर्थात् मसहरी, नदी विशेष, झील।

सं० चतुष्पद-(चतुर्=चार, पद=पांव) पु० पशु, चौपाया, मवेशी।

सं० चतुष्पदी (चतुर्=चार, पद =चरण) स्त्री० चारपदवाला छंद।

सं० चतुष्षष्टि (चतुर्=चार, षष्टि= साठ) स्त्री, चौंसठ।

प्रा० चना (सं० चणक) पु० बूट, छोला, चणा।

प्रा० चन्द-(सं० चन्द्र) पु० चांद।

सं० चन्दन-(चदि=प्रसन्नहोना) पु० एक सुगन्धित लकड़ी, मलयागिरि का सुगंधितकाठ, गन्धसार, श्रीखंड।

सं० चन्द्र-(चदि=प्रसन्न होना, वा चकमना) पु० चांद, चन्द्रमा, चन्द्र, सोम, २ कपूर।

सं० चन्द्रकला-(चन्द्र=चांद, कला अंश) स्त्री० चांद का सोलहवां अंश, १ अमृता, २ मानदा, ३ पूषा, ४ पुष्टि, ५ तुष्टि, ६ रति, ७ धृति, ८ शशिनी, ९ चन्द्रिका, १० कान्ति ११ ज्योत्स्ना, १२ श्री, १३ प्रीति १४ अङ्गदा, १५ पूपणा, १६ पूर्णा।

सं० चन्द्रगुप्त-पु० नाम राजा का महानन्द राजा का पुत्र जो मुरा नामा नाइन से उत्पन्न हुआ चाणक्य ब्राह्मण ने महानन्द को पुत्रों सहित नाश करके चन्द्रगुप्त को राज्यगद्दी दी।

सं० चन्द्रमणि-(चन्द्र=चांद, मणि =रत्न) स्त्री० चन्द्रकांति, मणि, एक रत्न का नाम।

सं० चन्द्रमण्डल-(चन्द्र=चांद, मंडल =घेरा) पु० चांदकाघेरा, चन्द्रलोक।

सं० चन्द्रमा-(चन्द्र=कपूर, मा=मापना वा बराबर करना अर्थात् जो अपने प्रकाशसे सब चीजोंको कपूरके बराबर साफ़ कर दिखाता है) पु० चांद, २ एक ऋषिका नाम।

सं० चन्द्रमुखी } (चन्द्र=चांद, मुख=मुंह) स्त्री०
प्रा० चन्दमुखी }

जिस स्त्रीका मुंह चांद कैसाहो, चन्दवदनी, सुमुखी, सुन्दरी।

सं० चन्द्रमौलि-(चन्द्र=चांद, मौलि= शिर वा शिखा) पु० शिव, महादेव।

सं० चन्द्रलौह-पु० चांदी, रांगा, कुल।

सं० चन्द्रवंशी-(चन्द्र=चांद, वंश= घराना) पु० क्षत्रियों की एकजाति जो अपने को चांदसे पैदा हुये बतलाते हैं पुरूरवा से हुआ वंश।

सं० चन्द्रवदनी } (चन्द्र=चांद, बदन=मुंह) स्त्री०
प्रा० चन्दवदनी }

चन्द्रमुखी, सुन्दरी।

सं० चन्द्रशाला (चन्द्र+शाला) स्त्री० अट्टालिका, अटारी, गृहशिखर ।
सं० चन्द्रशेखर (चन्द्र=चांद, शेखर=शिरकागहना) पु० शिव, महादेव ।
सं० चन्द्रहार (चन्द्र=चांद, हार=माला) पु० गले में पहननेकी माला ।
सं० चन्द्रहास (चन्द्र=चांद, हास=चमक, हस्=हसना अर्थात् जिसकी चमक चांद कैसी हो) स्त्री० तलवार खड्ग, चमेली, कुमुदिनी ।
सं० चन्द्रायत (चन्द्र+आयत) पु० गृहशिखर, छत, चांदनी छप्पा ।
सं० चन्द्रापीड़ – पु० शिव, महादेव ।
सं० चन्द्रिका (चन्द्र) स्त्री० चांदनी, चांद का उजाला, चांद की जोत, कौमुदी, ज्योति, प्रकाश ।
सं० चन्द्रिकापायिन (चन्द्रिका+पायिन) कृ० पु० चकोर, पर्वत ।
सं० चन्द्रिल – पु० शिव । [गरखा ।
प्रा० चपकन – स्त्री० एक तरहका अं-
प्रा० चपकना – क्रि० अ० चिपटना, मिलना, जुड़ना ।
सं० चपट (चप्=लगना) स्त्री० चपेट, धक्का । [बराबर ।
प्रा० चपटा – गु० चौरस, सब ओरसे
प्रा० चपत – स्त्री० थपेड़, धौल ।
प्रा० चपना – क्रि० अ० शरमाना, लज्जित होना, २ दबना, दबजाना ।
प्रा० चपनी – स्त्री० ढकनी, ढपनी, घुटने की ढकनी ।
प्रा० चपरासी – पु० चपरास रखने वाला, नौकर ।
सं० चपरि – स्त्री० तुरंत, शीघ्र ।
सं० चपल (चप=जाना) गु० चंचल, उतावला ।
सं० चपला (चपल) स्त्री० लक्ष्मी, २ बिजली, चंचला ।
प्रा० चपाती – स्त्री० रोटी, फुल्का ।
प्रा० चपाना – क्रि० स० दबाना, दाबना, २ लजाना ।
सं० चपेट } चपेटिका } (चप्=जाना) स्त्री० थप्पा, थप्पड़, धौल हथेली ।
प्रा० चप्पा – पु० चार अंगुलका नाप ।
प्रा० चबाना (सं० चर्वण) क्रि० स० चाबना, दांत से कुचलना, २ होंठ काटना ।
प्रा० चबूतरा – पु० चौतरा, अथाई, चौपाड़, बैठक, २ चौकी, ३ थाना ।
प्रा० चमक – पु० डंक ।
प्रा० चमक (चमकना) स्त्री० झलक, भड़क, चटक, दमक, शोभा ।
प्रा० चमकतमक } चमकदमक } बोल० शोभा, भड़क, झलक ।
प्रा० चमगादड़ } चमगीदड़ } चमगुदड़ी } पु० स्त्री० एक पखेरू जो रातको दीखता है और

दिन को नहीं दीखता, गादुर, चमचड़ख।

प्रा० चमचमाहट–भा० स्त्री० चमकाहट, चमक, भड़क। [खाल।

प्रा० चमड़ा (सं० चर्म) पु० चाम,

प्रा० चमड़ा उधेड़ना, चमड़ा छुड़ाना, चमड़ा निकालना } बोल० खाल खींचना, चमड़ा खींचना।

सं० चमत्कार (चमत्=अचंभा, कार=करना) पु० अचंभा, विस्मय, २ प्रकाश।

सं० चमर, चामर } (चमू=खाना) पु० चमरीगाय, सुरह गाय, २ चँवर, सुरहगायकी पूंछ।

प्रा० चमार (सं० चर्मकार) पु० मोची, जूता बनानेवाला।

सं० चमस पु० चमचा, चम्मच।

सं० चमू (चमू=खाना) स्त्री० सेना, कटक, दल, फ़ौज जिस में ७२ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ घोड़े और ३६४५ पैदल हों।

प्रा० चमेटा (सं० चपेट) पु० थप्पड़, धप्पा, चपेटा।

प्रा० चमोटा, पु०, चमोटी स्त्री० } (सं० चर्म) चमड़ेकी पट्टी जिसपर उस्तरा तेज़ करते हैं।

सं० चम्पक (चपि=जाना) पु० चंपा जिसके फूल पीले रंग के और सुगंधित होते हैं।

प्रा० चम्पत–क्रि० वि० छिपा अंतर्धान, अदृश।

प्रा० चम्पतहोना–बोल० छिपजाना, भाग जाना, चला जाना, अलख होना।

प्रा० चम्पा (सं० चम्पक) पु० एक पेड़का नाम जिसके फूल पीले और सुगंधित होते हैं।

प्रा० चम्पाकली (चम्पा+कली) स्त्री० एक प्रकारकी माला जिसका हरएक दाना चम्पाकी कली सा होता है।

प्रा० चम्बू पु० एक तरह का पानी का बरतन। [फूल।

प्रा० चम्बेली–स्त्री० एक प्रकार का

सं० चय (चि=इकट्ठा करना) पु० ढेर, समूह, राशि।

सं० चर (चर्=चलना, खाना) पु० दूत, धावन, २ खाना, भक्षण, गु० चलनेयोग्य, चलनेवाला, जङ्गम।

सं० चरक (चर्=जाना, व खाना) क० पु० वैद्यकशास्त्रका बनानेवाला, २ वैद्यकशास्त्रका नाम, ३ कोढ़, ४ मुखबिर।

फ़ा० चरखा (पु० सूतकातनेकी कल) रहँटा, घिरना।

फ़ा० चरखी–स्त्री० घिरनी, २ रहँटी

प्रा० चरचना (सं० चर्चा) क्रि० स० शरीर में चन्दन लगाना, चंदन से शरीर को लेपनां।

सं० चरण (चर्=चलना) ण० पु० पांव, पैर, २ श्लोक का एक पद, मिसरा।

सं० चरणायुध (चरण + आयुध, युद्ध=लड़ना) पु० मुर्गा कुक्कुट।

प्रा० चरणपीठ (सं० चरणपृष्ठ, चरण=पांव, पृष्ठ=पीठ) स्त्री० खड़ाऊं।

सं० चरणामृत-(चरण=पांव, अमृत=अमी) पु० देवता की मूरत अथवा साधुजनके के पैरों का पानी, पानी जिससे देवताकी मूरत वा साधुजनके पैर धोये हों, चरणोदक।

सं० चरणारविन्द-(चरण=पांव, अरविन्द=कमल) पु० चरणकमल, कमल जैसे पांव, मुबारक क़दम।

सं० चरणोदक-(चरण=पांव, उदक=पानी) पु० चरणामृत, पैरों का पानी।

प्रा० चरना-(सं० चरण, चर्=खाना) क्रि० स० चुगना, घासखाना।

प्रा० चरपरा-गु० तीता, कड़ुवा, तेज़, २ फुर्तीला।

सं० चरम गु० पिछले, परे, पीछेके।

प्रा० चरवाई-(चरना) स्त्री० चराई, चराने का दाम।

प्रा० चरवाहा (चराना) पु० भेड़ बकरी का चरानेवाला, गड़रिया, रखवाला।

प्रा० चरस-पु० एक नशेकी चीज़, २ चमड़े की मोट, चमड़े का बड़ा डोल।

प्रा० चरसा-पु० अधौड़ी, खाल।

प्रा० चराई-(चराना) स्त्री० चराने की मजदूरी, चरवाई।

सं० चराचर-(चर्=चलनेवाला, अचर=नहीं चलनेवाला) पु० जीव जन्तु वृक्ष पत्थर आदि सब पदार्थ जो सृष्टि में हैं, स्थावर जंगम, संसार सृष्टि।

प्रा० चराना-(चरना) क्रि० स० चुगाना, घास खिलाना, खिलाना।

सं० चरित / चरित्र (चर्=जाना) पु० कथा वार्त्ता, वृत्तांत, हाल, शील स्वभाव, चाल चलन, व्यवहार, आचार, लीला, काम।

सं० चरित्रबन्धक-स० पु० भाट कवि, पिंगलज्ञ।

सं० चरु-स्त्री० खीर, हव्यान्न, नाजरि।

प्रा० चरुवा (सं० चरु, चर्=खाना) पु० भांडा, हांडा।

सं० चर्चरी-स्त्री० उत्सव, गानविशेष, केशरचना, शाक, महाकाल।

सं० चर्चरीक-पु० महाकाल केश विन्यास, बाल सम्हारना, शाक, साग।

सं० चर्चा (चर्च्, पढ़ना, बोलना वा, अर्च्=पूजना) स्त्री० प्रस्ताव, ज़िक्र

बतकहाव, तर्क, २ पूजा, ३ शरीर में चन्दन लगाना ।

सं० चर्चित (चर्चा) म्म० चरचाहुआ, चन्दन लगाया हुआ ।

सं० चर्म्म (चर्=जाना) पु० चमड़ा, अजिन, खाल, २ ढाल ।

सं० चर्म्मकार (चर्म्म=चमड़ा, कार =करनेवाला) पु० चमार, मोची ।

सं० चर्म्मज (चर्म्म+जन्=पैदाहोना) पु० रुधिर, केश, बाल, चमड़े से बनी हुई ।

सं० चर्वण (चर्व्=खाना) पु० चाबना, दांत से पीसना ।

सं० चलचित्त (चल=चलाहुआ, चित्त=मन) गु० चंचल, चपल, स्थिर ।

सं० चलत—कृ० पु० चलन शील, चलनेहार ।

सं० चलन (चल्=चलना) भा० पु० चलना, जाना, चाल, गति, २रीति, व्यवहार, चालचलन, ३ रिवाज, प्रचार, चाल, चर्चा, गु० प्रचलित ।

प्रा० चलना (सं० चलन) क्रि० अ० जाना, गमन करना, आगे बढ़ना, हिलना, सरकना, फिरना, २ प्रचलित होना, रिवाज होना, प्रचार होना, फैलना (जैसे सिक्का) ३ छूटना (जैसे बंदूक) ४ बहना (जैसे हवा) ५ व्यवहार होना ।

प्रा० चलदेना—बोल० कूच करना, भागजाना, चलाजाना ।

प्रा० चलनिकलना—बोल० निकल चलना, हद से बाहर निकलना, खराब अथवा व्यसनी होना ।

प्रा० चलेचलना—बोल० आगेबढ़ना, चलेजाना ।

प्रा० चलनी (सं० चालनी, चल्=चलना) स्त्री० पीतलकी लोहे की अथवा चमड़ेकी बनी हुई एक चीज़ जिसमें बहुत छेद होते हैं और उस में आटा छानते हैं ।

सं० चलपूंजी—स्त्री० जायदाद मन्कूला, जो चीज एक जगह से दूसरी जगह चल सके ।

सं० चलित (चल्=चलना) गु० चलाहुआ, प्रचलित, व्यवहारिक, हिलता हुआ ।

प्रा० चवाई (सं० चर्वणावादी) पु० निंदक, लाबालुतरा, चुगलीखोर ।

प्रा० चवाव (सं० चर्वणावाद) पु० निंदा, चुगली, झूठा, कलंक, लिप्त ।

सं० चष (चष्=भक्षण, वध) गु० भोजन, खाना, मारण, मारना, क्लेश ।

सं० चषक (चष्+अक) कृ० पु० जलपात्र, आबखोरा, पानपात्र, मदिरापात्र, मयजाम, शहद, मदिरा ।

सं० चषति—पु० भोजन, मारण, स्त्री० मूर्च्छा, मदान्धता ।

सं० चषाल पु० यज्ञके खंभा का कड़ा, यूपकटक, होमकुण्ड, कुशा ।

प्रा० चसका-पु० प्यार, लालसा, चाट, स्वाद, चाल, टेव ।

सं० चह (चह=छलना, धतारण) पु० अहंकार, पाखण्ड, परिकल्कन, गु० अहंकारी, दम्भकृत, छली ।

प्रा० चहकना-क्रि० अ० चहचहाना, चिड़ियों का बोलना ।

प्रा० चहचहा-गु० गहरा रंगाहुआ,

प्रा० चहचहाना-क्रि० अ० पखेरुओं का बोलना ।

प्रा० चहलपहल-स्त्री० आनन्द, हँसी खुशी, चुहल, रंग रस ।

प्रा० चहला } पु० कीचड़, काँदा, चिहला } पांका, पंक, दलदल ।

प्रा० चहुं } (सं० चतुर) गु० चार, चहूं } चारों-चहुंओर=चारों तरफ़, सब तरफ़ ।

प्रा० चहुंचक } (सं० चतुश्चक्र, चतु चहुंचक्र } र्=चार, चक्र=देश) क्रि० वि० चारों ओर, सब ओर, चारों खूंट में, चहुंदिश ।

प्रा० चहुंदिस (सं० चतुर्दिश, चतुर्=चार, दिश=ओर) क्रि० वि० सब ओर, चारों ओर, चहुं ओर, चहुं चक्र ।

प्रा० चाकी-स्त्री० बिजली ।

प्रा० चांद (सं० चन्द्र) पु० चन्द्रमा, चन्द्र, सोम, चन्द, २ एक गहने का नाम ।

प्रा० चांदरात-स्त्री० महीने का अन्त पूनों की रात [मारना ।

प्रा० चांदमारना-बोल० निशाना-

प्रा० चांद ने खेतकिया- बोल० चांद उगा ।

प्रा० चांदना (सं० चन्द्र) पु० प्रकाश, ज्योति, तेज ।

प्रा० चांदनापख-पु० उजाला पख, शुक्ल पक्ष, सुदी ।

प्रा० चांदनी (सं० चांद्री, चंद्र =चांद) स्त्री० चांदकी उजियाली चांद का प्रकाश, अँजोरी, चंद्रिका, २ एक फूल का नाम, ३ सफ़ेद कपड़ा जो दरी पर बिछाया जाता है, ४ सफ़ेद और चमकीली चीज ।

प्रा० चांदनीचौक-बोल० चौड़ा बाजार, वा गली, चौक ।

प्रा० चांदी (सं० चांद) स्त्री० अच्छा रूपा, २ टटरी, टांट, खोपरी ।

प्रा० चांपना-क्रि० स० दाबना, दबाना, ठांसना, २ जोड़ना ।

फ़ा० चा-स्त्री० एक पौधे की पत्ती जिसको पीनेसेशरीरमेंफुर्तीरहती है ।

प्रा० चाक (सं० चक्र) पु० कुम्हार की चकी अथवा पहिया जिसपर बरतनबनायेजाते हैं, २ पाट, चकी ।

प्रा० चाका (सं० चक्र) पु० पहिया।
प्रा० चाकी (सं० चक्र) स्त्री० चक्की जांता, बिजली।
प्रा० चाचा-पु० चचा, काका।
प्रा० चाट (चाटना) स्त्री० चसका, स्वाद, रस, लालसा, उत्कण्ठा, रुचि, २ स्वभाव।
प्रा० चाटना-क्रि० स० स्वादलेना लपलप खाना, चबड़चबड़ खाना।
सं० चाटु-प्यारीबात, चापलोसी लल्लोपत्तो, खुशामद। [खुशामदी
सं० चाटुपटु-पु० भाण्ड, मशखरा,
सं० चाटु लक्ष्मी-रू०पु० खुशामदी बातें, चिकनी चुपड़ी बातें।
प्रा० चाड़-स्त्री० चाह, २ चोट, ३ ढेंकली, उठंगन।
सं० चाणक्य-पु० चाणक मुनि के गोत्र का, विश्वगुप्त।
सं० चाणूर-पु० कंस का प्रधान मल्ल, बड़ा पहलवान। [नीच।
सं० चाण्डाल-पु० श्वपच, डोम,
सं० चातक (चत्=मांगना, अर्थात् बादलों से पानी मांगना) पु० पपीहा।
सं० चातुर (चतुर) गु० चतुर, प्रवीण, बुद्धिमान्, २ धूर्त, ३ चार।
सं० चातुरी (चातुर) स्त्री० चतुराई, निपुणता २ धूर्तता।
सं० चातुर्वर्ण्य-ब्राह्मण २ क्षत्री ३ वैश्य ४ शूद्र चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टमिति गीता।
प्रा० चातृक (सं० चातक) पु० पपीहा।
सं० चान्द्रायण (चंद्र=चांद, अयन =चाल, वा चांद्र=चंद्रलोक, अय्=पाना (जिस व्रत से) पु० एक व्रत जिसमें अंधेरे पक्ष में जब चांद की कला घटती है, हर एक दिन खाने में एक ग्रास घटाते हैं और चांदने पक्ष में ज्यों चंद्रमा की कला बढ़ती है त्यों हर एक दिन एक एक ग्रास बढ़ाते हैं, रोजा कमरी।
सं० चाप (चप्=बांस अर्थात् बांस का बना हुआ, चप्=जाना) पु० धनुष्, कमान।
सं० चापखण्ड (चाप+खण्ड) धनुष् के टुकड़े।
प्रा० चापी स्त्री० दबाई।
प्रा० चाबना (सं० चर्वण) क्रि० स० चबाना, दांत से कुचलना, चिकलना।
प्रा० चाबी-स्त्री० कुंजी, ताली।
प्रा० चाम (सं० चर्म) पु० चमड़ा, खाल।
सं० चामुण्डा (चम्=खाना, वा चमू=सेना, ला=लेना अर्थात् खा जाना) स्त्री० दुर्गा, देवी, काली, योगिनी, चण्ड मुण्ड राक्षसों की मारनेवाली देवी।

सं० चार (चर्=चलना) पु० दूत, जासूस [दुगुना, ४ ।

प्रा० चार (सं० चतुर्) गु० दो का

प्रा० चारआंखें-बोल० चौनजर, मिलना, भेंट होजाना । [डे टुकड़े ।

प्रा० चारटूक-बोल० टूक टूक, टुक-

प्रा० चारण (चर्=लेजाना, अर्थात् जो यश को फैलाता है) पु० भाट, यश बखाननेवाला ।

प्रा० चारा (सं०चर्=खाना) पु० पशुओं का खाना, घास ।

सं०चारु (चर्=चलना) गु० सुन्दर, मनोहर, सुहाना, मनभावन ।

प्रा० चाल (सं० चल्=चलना) भा० स्त्री० चलना, चलन, गति, गमन, २ रीति रसम, रीति भांति, ढंग, राह, ३ चालचलन ।

प्रा० चालपकड़ना-बोल० फैलना, चलना, प्रचलित होना ।

प्रा० चालचलना-बोल० निबाहना, व्यवहार करना । [रीति भाँति ।

प्रा० चालढाल-बोल० चालचलन,

प्रा० चालना (सं०चालन, चल्=चलना) क्रि० स० छानना (जैसे आटा) झारना, फटकना, देखना ।

सं० चालनी (चल्=चलना) स्त्री० चलनी ।

प्रा० चालीस (सं० चत्वारिंशत) गु० दो बीसी, ४० ।

प्रा० चाव } चाय } (स० इच्छा) पु० बड़ीचाह, उत्कण्ठा, रुचि, अभिलाष, चोंप, शौक़, २ चारअंगुल, ३ एक तरह का बांस ।

प्रा० चावचोचला-बोल० प्यार, दुलार, अनुराग, प्रेम, स्नेह, किलोल ।

प्रा०चावल } चंवल } पु० एक प्रकार का अनाज ।

प्रा० चापु (सं० चाष, चष=भक्षण करना) पु० नीलकण्ठ, कटनाश ।

प्रा० चासा-पु० किसान, जोतहा, हल चलानेवाला ।

प्रा० चाह (सं०इच्छा) स्त्री० चाहना, अभिलाष, इच्छा, प्यार, प्रेम, प्रीति, पसंद ।

प्रा० चाहना-क्रि० स० इच्छाकरना, मांगना, याचना, प्यारकरना, प्रेमकरना, मानना, पसंदकरना, मनमें भाना, आवश्यकताहोना, प्रयोजन पड़ना ।

प्रा० चिंघाड़ (सं० चित्कारचित् ऐसा शब्द कार=करना) स्त्री० हाथी का शब्द ।

प्रा० चिंघाड़मारना-बोल० चित्कारना चिंघाड़ना, हाथी का शब्द करना ।

प्रा० चिक-पु० परदा, जवनिका, २ कमर में दर्द ।

प्रा०चिकना (सं० चिक्कण) गु०

घोटाहुआ, साफ़, २ सुन्दर, ३ चपड़ा हुआ, तिलहा, तेलसा, तेलमय, चिक्कण, ४ निर्लज्ज, बेशरम लंपट, चंचल।

प्रा० चिकनाघड़ाबनना-बोल० किसी की कुछ शिक्षा नहींमानना, निलज्ज होना।

प्रा० चिकनाचांदा (सं० चिक्कणचन्द्र) बोल०सुन्दर, मनोहर, सुहावना।

प्रा० चिकनाई (सं० चिक्कणता) भा० स्त्री० ओप, घोट, संवार, सफ़ाई, चिकनाहट, २ चर्बी, ३ चंचलता, चंचलाई।

सं० चिकित्सक (कित्=इलाज करना, चंगाकरना) कृ० पु० वैद्य, हकीम, डाक्टर।

सं० चिकित्सा (कित्=इलाजकरना चंगाकरना) भा० स्त्री० औषधकरना, इलाज, वैदाई, रोग प्रतीकार।

सं० चिकित्सालय (चिकित्सा+आलय) षि० पु० शिफ़ाखाना, हास्पिटल।

सं० चिकित्साशास्त्र-पु० इल्म=डाक्टरी, तिब्बावत।

सं० चिकीर्षा (कृ=करना) स्त्री० करनेकी इच्छा, आकांक्षा।

सं० चिकीर्षु कृ० पु० आकांक्षी।

सं० चिकुर-(चि=इकट्ठा करना, चाचि=ऐसा शब्द, कुर=शब्द करना) पु० बाल, केश, घूंघर।

प्रा० चिकुला=बच्चा, बालक।

प्रा० चिट-स्त्री० टुकड़ा, लीर, धज्जी।

प्रा० चिट्टा-पु० गोरा, श्वेत, सफ़ेद, पु० रुपया, मुद्रा।

प्रा० चिट्ठी-स्त्री० पाती, पत्री, पीत्रका, खत, काग़ज़।

प्रा० चिट्ठीपत्री, चिट्ठीपाती } पु० लिखापढ़ी, चिट्ठीका आना जाना खत किताबत।

प्रा० चिड़चिड़ा-पु० खुन्साहा, झनझना, कर्कश, रिसाहा, पु० एक पेड़ का नाम।

प्रा० चिड़ना-क्रि० अ० खुनसाना झुझलाना, कुढ़ना, खिसियाना, झट क्रोध करना।

प्रा० चिड़िया, चिड़ी } (सं० चटक) स्त्री० गौरिया, पखेरू, पक्षी।

प्रा० चिड़ीमार-पु० चिड़िया पकड़ने और मारनेवाला, बहेलिया, ब्याधा।

प्रा० चित (सं० चित्त) पु० मन, बुद्धि, हृदय, अन्तःकरण, हिया, हियजो, सुध, स्मरण, स्मृति, याद।

प्रा० चितचाय-बोल० मनभावन जो मनको अच्छालगे।

प्रा० चितचेता-बोल० मनमाना, स्वछंद आना ।

प्रा०चितचोर-बोल० मन हरनेवाला ।

प्रा० चितदेना-बोल० ध्यानदेना, मन लगाना ।

प्रा० चितलगना-बोल० मनोरंजन मनभावन ।

प्रा० चितलाना-बोल० सचेत होना, तत्पर होना, मन लगाना, ध्यानदेना ।

प्रा० चित-(सं०चित्=जानना) स्त्री० चितवन, दृष्टि, दीठ, नज़र, अवलोकन, २ समझ, बूझ, बोध, ज्ञान, विचार, गु० पट, सीधा, अन्ताचित, चितांग ।

प्रा० चितकरना-बोल० उलटाना, चित गिराना (जैसे कुश्तीमें) जीतना, मात करना, हराना, परास्त करना ।

प्रा० चितकबरा (सं० चित्र कर्बुर) गु० कबरा, रंगरंग का, चितला ।

प्रा० चितरना सं०चित्र) क्रि०स० चीतना, रंगदेना, रंगना, चित्रकरना

प्रा० चितला (सं० चित्रल, चित्र=रंग, ला=लेना) गु० चितकबरा ।

प्रा० चितवन-स्त्री० दृष्टि, नज़र, अवलोकन, चित्त, झांक, कटाच ।

प्रा० चितवना }
चितना } क्रि०स०देखना ।

सं० चिता (चि=इकट्ठा करना) स्त्री० जगह जिसपर मुर्दा जलायाजाता है चिताखा, मसान, मरघट ।

प्रा० चिताना }
चितावना- } (सं०चेतन, चित् याद करना, सोचना) क्रि० स० जताना, जतलाना, जनाना, चौकसकरना, खबरदार करना, सूचितकरना, याददिलाना, बताना ।

प्रा० चितेरा (सं० चित्रकार) पु० लकड़ी पर अथवा दीवार पर बेल बूटे खैंचनेवाला, चित्रखैंचनेवाला ।

सं० चिति स्त्री० समूह, ढेर, राशि, जमघट ।

सं० चित्त (चित्=जानना, वा याद करना) पु०मन, अन्तःकरण, बुद्धि, हृदय, जी, चित, ज्ञान ।

सं० चित्तताप }
चित्तोत्ताप } पु० मनका खेद, दिलीरंज ।

प्रा० चितौनी-स्त्री० सूचना विज्ञापन, जताना ।

सं० चित्कार-पु० रेंकना, विलाप, चिल्लाहट, चीखमारना, चूहा, निउला, छछूंदर ।

सं० चित्र (चित्र=कई प्रकारके रंगों से रंगना, वा चित=मन त्रै=बचाना) पु० तसवीर, बेल बूटे, छबि, रूप, सूरत, लेख, लिपि, २ यम, गु० अद्भुत, अनोखा, रंगरंगका रंगारंग, भांति भांति का ।

सं० चित्रकण्ठ (चित्र=रंगरंग का कण्ठ=गला)पु०कबूतर, कपोत ।

सं० चित्रकर }
चित्रकार } (चित्र=तसवीर कृ=करना) पु० चितेरा, मुसव्विर ।

सं० चित्रकारी (चित्रकार) स्त्री० चितेरे का काम, बेलबूटे बनाना, तसवीर बनाना, चित्र लिखना ।

सं० चित्रकूट (चित्र=अनोखी, वा भांति भांतिकी, कूट=चोटी) पु० एक पहाड़ का नाम जो बुन्देल खंड में है जहां श्रीरामचन्द्र अपने बनवास के समय पहलेही पहल रहे थे ।

सं० चित्रगुप्त (चित्र=लेख, गुप्त= बचाना वा चित्र लिखना, गुप्त छिपी हुई बात को) पु० यम का नाम, २ यमराज का लेखक जो मनुष्यों के पाप पुण्य को लिखता है, कायस्थों का पुरखा ।

सं० चित्ररेखा }
चित्रलेखा } (चित्र=तसवीर, लिख्=लिखना) स्त्री० ऊषा की सहेली, बाणासुर के प्रधानकूष्माण्ड की बेटी ।

सं० चित्रलिखित (चित्र=तसवीर, लिखित=लिखाहुआ) म्पं० तस- बीर में लिख हुआ ।

सं० चित्रविचित्र (चित्र=रंग, वि- चित्र=रंग रंगका) गु० रंग रंगका नाना वर्णका, अनेक रंगका ।

सं० चित्रा (चित्र्=रंगना) स्त्री० चौदहवां नक्षत्र, २ श्रीकृष्ण की सखी ।

सं०चित्राक्षी }
चित्रनेत्रा }
चित्रलोचना } (चित्र=रंगरंग की, अक्ष, वा नेत्र, वा लोचन=आंख)स्त्री० मैना पक्षी ।

सं० चित्र विद्यासार, बसूल नक्क़ाशी, चित्र खींचने का मूल ।

सं० चित्राङ्ग (चित्र=रंग रंग का, अङ्ग शरीर) पु० चितकबरा सांप २ एक पौधेकानाम, ३ एकप्रकार का रंग, गु० चितकबरा चित्रित, चित्र विचित्र ।

सं० चित्रिणी (चित्र्=रंगना) स्त्री० दूसरे प्रकार की स्त्री, चार प्रकार की स्त्रियों में की एक प्रकार की स्त्री, (१ पद्मिनी, २ चित्रिणी, ३ हस्तिनी, ४ शङ्खिनी, ये चार प्र- कार की स्त्रियां होती हैं)

सं० चित्रित (चित्र्=रंगना) म्पं० रंगा रंग, रँगा हुआ, चित्र किया हुआ, नाना वर्ण का, तसवीर खिंचा हुआ, २ अद्भुत, अनोखा ।

प्रा० चिथड़ा-पु०फटा कपड़ा, लत्ता गुदड़ा ।

सं० चिदाकाश (चित्=चैतन्य,

आकाश अर्थात् आकाश के समान निर्विकार वा सब का आधार) पु० ब्रह्म, शुद्ध स्वरूप।

सं० चिदात्मा-पु० परमात्मा।

सं० चिद्रूप (चित्+रूप) पु० चैतन्य स्वरूप, तेजरूप।

सं० चिदानन्द (चित्=ज्ञान वा चैतन्य आनंद=हर्ष) पु० चैतन्य, ज्ञानानंद, परमानन्द, ब्रह्म, परमेश्वर परमात्मा।

प्रा० चिनचिनाना-क्रि० अ० चिल्लाना, चीखना।

सं० चिन्तन (चिति=याद करना, सोचना) भा० पु० याद, स्मरण, सोचना, ध्यान, चिंता, विचार।

सं० चिन्ता (चिति=याद करना, सोचना) भा० स्त्री० सोच, विचार भावना, ध्यान, याद, स्मरण, स्मृति २ फ़िक्र खटका, दुविधा, संदेह, सोच, डर।

सं० चिन्ताकीमुद्रा-स्त्री० शोच की दशा, फ़िक्रकी हालत।

सं० चिन्तामणि (चिन्ता=सोची हुई (वस्तु देनेवाली) मणि=रत्न स्त्री० एक प्रकार की मणि, पारस।

सं० चिन्तित (चिति=सोचना) र्म० चिन्ता करता हुआ, सोची, भावित, फ़िकरमन्द, चिंता करने योग्य, उदास, व्याकुल।

सं० चिह्न (चिह्न=चिह्न करना) पु० संकेत, निशान, पहचान, लक्षण अंक, दाग़। [दाग़ी।

सं० चिह्नित-र्म० अङ्कित, संकेतित,

सं० चिबुक } (चीब्=ढकना वा
चिवुक } बोलना) स्त्री० ठुड्डी, ठोढ़ी। [चिपकना।

प्रा० चिमटना-क्रि० अ० लिपटना

प्रा० चिमटा-पु० चुमटा, मुचना, स्यूठा। [मन्द।

सं० चिरबाधित-र्म० इहसान-

सं० चिर } (चि=इकट्ठा करना) गु०
चरम } बहुत काल, बहुत कालीन बहुत दिनका, बहुत, दिनतक।

प्रा० चिरंजी (सं० चिरंजीवी) गु० बहुतसमयतक जीनेवाला, दीर्घायु।

सं० चिरजीवी } (चिर, बहुतसमय
चिरंजीवी } तक, जीवी=जीनेवाला जीव्=जीना) गु० चिरंजी।

सं० चिरात-अव्य० अर्सा से बहुत काल से।

सं० चिरना-पु० पुराना प्राचीन, स्त्री० चिरानी=पुरानी।

सं० चिरस्थायी-पु० दवामी हमेशगी, चिरकाल तक रहनेवाली।

प्रा० चिरौंजी स्त्री० एक प्रकार की मेवा।

प्रा० चिलकना-(सं० ज्वल्=चमकना) क्रि० अ० चमकना, झलकना।

प्रा० चिलम-स्त्री० मिट्टी की बनी हुई चीज़ जिसमें तमाकू डाल के पीते हैं।

प्रा० चिलमची स्त्री० हाथ धोने का बरतन।

प्रा० चिल्लाना (सं० चित्कार) क्रि० अ०पुकारना,ज़ोरसे बोलना, चीखना।

प्रा० चींटी
चींवटी } (सं० चिट्टकी) स्त्री० कीड़ी, चेंवटी।

प्रा० चीखुर, स्त्री० गिलहरी।

प्रा० चीतना (सं० चित्र) क्रि० स० चित्र करना, रंगना, चित्रकारी करना, चित्र उतारना, रंग देना, २ (सं० चिन्तन) चाहना,सोचना।

प्रा० चीतल (सं० चित्रल, चित्र= रंग, ला=लेना)पु० तेंदुआ, चीता, गु० चितकबरा।

प्रा० चीता (सं० चित्रक, चित्र= रंग) पु० तेंदुआ, चीतल, २ एक पौधे का नाम, ३ (सं० चेतना) चाह, ४ समझ, बुद्धि, विचार, ५ (चीतना) रंगना, रंगदेना।

सं० चीन (चि=इकट्ठा करना) पु० एक देश का नाम, २ एक प्रकार की घास, ३ एक प्रकार का कपड़ा।

प्रा० चीनी (सं० चीनीय चीनदेश की, अर्थात् जो कदाचित् चीन देश से इस देश में पहलेही पहल आई हो) स्त्री० बहुत अच्छी और साफ़ शक्कर, गु० चीन देश का, चीन देश सम्बन्धी।

प्रा० चीन्हना (सं० चिह्न=चिह्न करना) क्रि० स० पहचानना, जानना।

सं० चीय (चि=इकट्ठाकरना) पु० प्राप्ति, ग्रहण, धारण, गु० लेने-वाला, पहरनेवाला, स्त्री० झिल्ली झींगुर।

सं० चीर (चि=इकट्ठाकरना) पु० कपड़ा, वस्त्र, साड़ी।

प्रा० चीर-(चीरना) पु० खोंच, चीरना, फाड़ना।

प्रा० चीर निकलना-बोल०सेनाके बीच में होके निकल जाना, सेना की कतार को तोड़ डालना।

प्रा० चीरना-क्रि० स० फाड़ना, टुकड़े टुकड़े करना, मसकना, विदारना।

प्रा० चीरा (सं० चीर)पु०पगड़ी, २ काट, फाड़, घाव।

सं० चीरि-पु० रींवा जन्तु, झींगुर, पलक, घोड़ोंके आंखपर बांधने की अंधियारी।

सं० चीर्ण-गु० प्राचीन, प्रवीण पुराना, फटाहुआ।

सं० चीर्णपर्ण-पु०नींबवृक्ष,प्राचीन पत्र, पुरानापत्ता, खजूरवृक्ष।

सं० चीवर—पु० प्राचीनवस्त्र, जीर्ण वस्त्र, फटावस्त्र, चिथड़ा, प्राचीन, पुराना ।

प्रा० चील (सं० चिल्ल, चिल्ल्=ढीला होना) स्त्री० एक पखेरू का नाम ।

प्रा० चीलझपट्टामारना—बोल० छीनना, छीन लेना, झपट लेना ।

प्रा० चीलर } चील्हड } स्त्री० जूं, जूंई, ढील ।

प्रा० चुआन (सं० च्यु=जाना, घूमना) स्त्री० कोट के आस पास की गहरी खाई जिस में पानी भरा रहता है, २ कुंड, जलाशय ।

प्रा० चुंगी—स्त्री० महसूल का इतना अनाज जितना कि हाथ में समावे जो कि अनाज के ब्यौपारियों से सदा उगाहा जाता ।

प्रा० चुकाना (चुकना) क्रि० स० निपटाना, पूराकरना, मोलठहराना ।

सं० चुक्र—पु० खट्टा का वृक्ष, चूक, सिरका, गु० खट्टा, अम्ल, अमलबेत ।

प्रा० चुगना—क्रि० स० चोंच से खाना, चरना, खाना, २ चुनना, बीनना, ढूंगना ।

प्रा० चुगलेना—बोल० छांटना, बराय लेना, चुनलेना, पसंद करना ।

सं० चुचि—पु० स्तन, कुच, चूंची ।

सं० चुचक—पु० स्तनाग्रभाग, कुचाग्रभाग, चूंची की घुण्डी ।

प्रा० चुटकुला—पु० चुहुल, परिहास, हँसी, ठठोली, हँसी की बात, आनन्द, रस ।

प्रा० चुड़ैल—स्त्री० डायन, प्रेतनी, डाकिनी, २ फूहड़ स्त्री, मैली कुचैली स्त्री ।

प्रा० चुनत—(चुनना) स्त्री० चुनन, परत, उत्तू, घड़ी, पुट, तह ।

प्रा० चुनरी—स्त्री० एक तरह का रंगा हुआ कपड़ा जिस में कई तरह के रंग होते हैं । [चूंधा ।

प्रा० चुंधला—गु० तिरमिरा, चक-

प्रा० चुनना—क्रि० स० चुगना, इकट्ठा करना, बीनना, छांटना, बराय लेना, पसंद करना, २ अपनी अपनी जगहपर रखना, सजाना, ठीकठाक करना, ३ तह जमाना, कपड़ों की घड़ी बनाना ।

प्रा० चुनौती—सौगन्द, कसम ।

प्रा० चुन्नी—स्त्री० लाल ।

प्रा० चुप—गु० मौन, अनबोल, अवाक्, वि० बो० चुप रहो, मत बोलो ।

प्रा० चुपचाप—बोल० चुप, अनबोल ।

प्रा० चुपड़ना—क्रि० स० चिकना करना, चिकनाना, घी अथवा तेल लगाना, २ तेल मलना ।

प्रा० चुभकी—डुबकी, गोता ।

प्रा० चुभना—क्रि० अ० छिदना, घुसना, पैठना, पारहोना, धसना, गड़ना ।

सं० चुम्बक } (चुबि=चूमना) क्र०
चुम्बकी } पु० चुम्बक पत्थर जो लोहेको खींचताहै, २चूमनेवाला, थोड़ा थोड़ा पढ़के छोड़नेवाला ।

सं० चुम्बन—(चुबि=चूमना) भा० पु० चूमना, चूमा, बोसा, चूमालेना ।

सं० चुम्बित—र्म० पु० चूमा हुआ, बोसा लियागया ।

प्रा० चुराना—(सं० चोरण चुर्=चुराना) क्रि० स० चोरीकरना ।

प्रा० चुरी—(सं० चूड़ा स्त्री० चूड़ी ।

प्रा० चुलबुला—बोल० चंचल, रंगीला । [टपकाना ।

प्रा० चुलाना—क्रि० स० चुवाना,

सं० चुल्ल (चुल्ल्=चालना, चलना) पु० प्रकाश, उजाला जिसके नेत्र में कीचर भरा है, चूल्हा, स्त्री० चिता उद्धारना ।

सं० चुल्लि—स्त्री० चूल्हि, चूल्हा ।

प्रा० चुल्लू (सं० चुलुक, चुल्=इकट्ठा करना वा होना) पु० लपभर, मुट्ठीभर, बुक्का, दोनों हाथोंको इसतरहमिलाना कि उसके बीचमें पानी रह सके ।

प्रा० चुल्लूभरपानीमेंडूबमरना—बोल० बहुतही बहुत लजाना ।

प्रा० चुल्लू में उल्लूहोना—बोल० चुल्लू भर नशे में मस्त होना ।

प्रा० चुसकी—स्त्री० पानी का घूंट, मुँहभर पानी ।

प्रा० चुहल—स्त्री० हँसी, विनोद, हर्ष, हुलास, ठट्ठा ।

प्रा० चुहुलकरना—बोल० आनन्द करना, हँसी खुशी करना, विनोद करना ।

प्रा० चूंची } (सं० चूचुक, चूष्=दूध
चूची } पीना वा चूसना) स्त्री० स्तन, थन, कुच छाती ।

चुकौता—पु० निपटारा, फ़ैसला ।

प्रा० चूक—(चूकना) स्त्री० भूल, खोट, दोष, भ्रम, अपराध ।

प्रा० चूक—(सं० चुक्र, चुक्=तृप्तहोना) गु० खट्टा ।

प्रा० चूकना—क्रि० अ० भूलना, भूल करना, बिसरना, अशुद्ध करना ।

सं० चूड़ा—स्त्री० चोटी, चुटिया, शिखा, झुटैया ।

सं० चूड़ाकरण—(चूड़ा=चोटी, करण, करना) पु० मुंडन ।

सं० चूड़ामणि—(चूड़ा=चोटी, मणि=रत्न) स्त्री० स्त्रियों के चोटी में पहनने का गहना, चोटी की मनी ।

प्रा० चूड़ी } (सं० चूड़ा, चुल्=इक-
चूरी } ट्ठा होना) स्त्री० स्त्रि—

यों के हाथ में पहनने की काच आदि की बनी हुई चीज़ ।

सं० चूत } पु० आम्रवृक्ष, क्षरण,
चूतक } स्राव, बहन, टपना ।

प्रा०चुनना–क्रि० स०बीनना, बटो-रना, इंतिखाब करना ।

प्रा० चुनाहुआ–मुन्तखिब ।

प्रा० चून (सं० चूर्ण) पु० आटा, २ चूना ।

प्रा०चूना–(सं० च्यवन,च्यु=जाना) क्रि० अ० टपकना, रसना, झरना, (सं० चूर्ण) पु० चून, एक चीज जिससे मकान बनाये जाते हैं ।

प्रा० चूनालगाना–बोल० बदनाम करना, लिम लगाना ।

प्रा० चूमना (सं० चुम्बन) क्रि० स० चूमा लेना । [बोसा ।

प्रा०चूमा–(सं० चुम्बन) पु० चुम्बा

प्रा० चूमाचाटी–बोल० दुलार, प्यार, रंग, रस, रावचाव ।

प्रा० चूर–(सं० चूर्ण)पु०बुकनी,भुर-भुरा, चूर्ण, रेतन, गु० चूर किया हुआ ।

प्रा० चूरचूर–बोल० टूक टूक, खण्ड खण्ड । [डूबा रहना ।

प्रा० चूर रहना–बोल०मस्त रहना,

प्रा० चूर करना–बोल० टुकड़े २ करना ।

प्रा० चूर होना–बोल० टुकड़े २ होना, २ किसी के प्यार में फँसना, अत्यन्त प्यार वा स्नेह करना, ३ थकना ।

प्रा० नशे में चूर होना–बोल० मस्तहोना, मतवाला होना ।

प्रा० चूरण } (सं० चूर्ण) पु०
चूरन } पाचक औषध जिससे खाना पचता है ।

प्रा० चूरा–(सं०चूर्ण) पु०रेतन,चूर ।

सं० चूर्ण– (चूर्ण=पीसना, बुकनी करना) पु० बुकनी, रेतन, चूर, चूरा, धूल, २ चूरन, एक पाचक औषध ।

सं० चूर्णन–भा० पु० पीसना ।

सं० चूर्णक–(चूर्ण्+अक)क०पु० पीसनेवाला ।

सं०चूर्णित–(चूर्ण्+इत) कर्म०पु० पीसा हुआ ।

प्रा० चूर्नी–(सं० चूर्ण) क्रि० स० टुकड़े २ करना ।

प्रा० चूर्मा–(सं० चूर्ण=चूरना) पु० एकप्रकार का मीठा खाना ।

प्रा०चूल–पु० लकड़ी का जोड़ वा कील जिसपर किंवाड़ फिरता है ।

प्रा०चूल्हा–(सं० चुल्ली) पु० आग रखने की जगह ।

सं०चूषक-(चूष्+अक,चुष्=चूसना) क० पु० चूसनेवाला ।

सं० चूषण-भा० पु० चूसना ।

सं० चूषित-कर्म० चूसा हुआ ।

प्रा०चूसना-(सं० चूष्=चूसना) क्रि० स० पी लेना, सोखना, चचोड़ना ।

प्रा० चूहा-पु०मूसा, मूषिक ।

प्रा० चेत-(सं० चेतस् चित्=सोचना) पु० सुध, याद, स्मरण, विचार, बोध, ज्ञान, अनुभव, सावधानी, चौकसी ।

सं०चेतन-(चित्=सोचना)पु०जीव, आत्मा, प्राण, २ ज्ञान, बुद्धि, विचार, विवेचना, समझ, गु० चैतन्य, जीताहुआ, सचेत, प्राणी ।

सं०चेतना-(चित्=सोचना) स्त्री० बुद्धि, ज्ञान, चेत ।

प्रा०चेतना-(सं०चेतन) क्रि० स० याद करना, स्मरण करना, सुध करना, मन में रखना, सोचना, २ चेत में आना, होश में आना ।

प्रा० चेता-(सं० चित्त) पु० चित्, चेत, मन, २ उपदेशक, ज्ञानदाता ।

प्रा०चेपना-क्रि० स० साटना, लगाना, चिपटाना ।

प्रा०चेरा-(सं० चेड़ वा चेट, चिट्= भेजना)पु०नौकर, दास, चाकर ।

प्रा० चेरी-स्त्री० दासी ।

प्रा० चेला-(सं०चेड़ वा चेट,चिट्= भेजना) पु० शिष्य, विद्यार्थी, २ दास ।

प्रा० चेवली-स्त्री० एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

सं० चेष्टक-(चेष्ट्+अक)क० पु० यत्नकारी, उपायी, तदबीरी ।

सं०चेष्टा-(चेष्ट्=परिश्रम वा यत्न करना) भा० स्त्री० यत्न, उद्यम, परिश्रम, उद्योग, काम, शरीर का व्यापार ।

प्रा० चैत- (सं० चैत्र) पु० एक महीने का नाम ।

सं०चैतन्य-(चेतन)भा०पु०जीवात्मा, परमात्मा, ब्रह्म, २ बुद्धि, ज्ञान, विचार, विवेचना, चेत, चेतना, गु० सचेत, चेत में, चौकस, सज्ञान, चेतन, सचेत, सुचेत ।

सं० चैत्र-(चित्रा एक नक्षत्र का नाम, पु० चैत, हिंदुओं के बरस का बारहवां महीना जिसमें पूरा चांद चित्रा नक्षत्र के पास रहता है और उस महीने की पूर्णमासी के दिन चित्रा नक्षत्र होता है ।

सं० चैत्ररथ-पु० कुबेर का बाग़ ।

प्रा० चैन-पु० सुख, आराम, आनन्द, हर्ष ।

प्रा० चोंगा–पु० नली, नलुवा, नल ।

प्रा० चोंच–(सं० चञ्चु) स्त्री० ठोंठ, पखेरुओं की चंचु ।

प्रा० चोंडा–(सं० चूड़ा) पु० चोटा, बाल का जूड़ा ।

प्रा० चोंप, चौंप, चोप } स्त्री० इच्छा, चाह, रुचि, उछाह, लालसा, फुर्ती, २ स्त्रियों के दांतों में पहननेका सोनेका गहना ।

प्रा० चोआ, चोवा } पु० सुगन्धित चीज, अर्गजा ।

प्रा० चोखा–पु० साफ़, सच्चा, खरा, अच्छा, तीखा, तीक्ष्ण ।

प्रा० चोचला–पु० खिलाड़पन, मान, नखरा, मीठीबातें, प्यारीबातें, भोलीबातें, हावभाव ।

प्रा० चोट–पु० मार, पीट, चपेट मुका, घूंसा, धका, आघात, पछाड़ ।

प्रा० चोटपरचोट–बोल० दुख पर दुख, एक विपत् पर दूसरी विपत् का आना ।

प्रा० चोटखाना–बोल० पिटना, मा रखाना, २ नुकसान उठाना ।

प्रा० चोटी–(सं० चूड़ा, चुल्=इकट्ठा होना) स्त्री० शिखा, शिरके पिछले बाल, २ शिखर, पहाड़ का शृंग ।

प्रा० चोटीआस्मानपरघिसना–बोल० बहुत घमंडी होना, बहुत अभिमान करना ।

प्रा० चोटीकट–बोल० दास, २ शिष्य ।

प्रा० चोटीकटवाना–बोल० दास होना, २ शिष्य होना ।

प्रा० चोटी किसी की हाथ में आना–बोल० किसी पर अधिकार रखना, किसी को वश में करना, दबाना, नवाना ।

प्रा० चोट्टा–(सं० चोर) पु० चोर ।

सं० चोर–(चुर्=चोरी करना) पु० चोट्टा, चोरी करनेवाला, ठग, लुटेरा, तस्कर ।

प्रा० चोरचकार–बोल० चोर ।

प्रा० चोरखाना, चोरघर } बोल० छिपा हुआ मकान, एकान्त घर, गुप्तघर ।

प्रा० चोररस्ता–बोल० छिपी राह गुप्तराह, पगडंडी, लीक ।

प्रा० चोरलगना–बोल० बिगाड़ होना, हानिहोना, नुकसान उठाना ।

प्रा० चोरी–(सं० चौर्य्य, चोर, चुर् =चोरी करना) स्त्री० चुराने का काम, डकैती, ठगी ।

सं० चोली–(चुल्=इकट्ठाहोना) स्त्री० अँगिया, कांचुली ।

प्रा० चौ–(सं० चतुः=चार) गु० चार पु० हल का फाल ।

प्रा० चौअन्नी–(चौ=चार, आना) स्त्री० चारआनी, सूकी, चारआना ।

प्रा० चौंकना—क्रि०अ० झिझकना, भड़कना, डर उठना, ठठकना, चमकना, नींदटूटना, नींदउचटना।

प्रा० चौंकउठना-बोल० भड़क उठना, झिझक उठना, चमक उठना।

प्रा० चौंकपड़ना-बोल० उछल पड़ना, चौकड़ी भरना, भड़कजाना, चमक जाना।

प्रा० चौंतरा—पु० (चबूतरा) शब्द को [देखो।

प्रा० चौंतीस } (सं० चतुस्त्रिंशत्)
चौतीस } गु० तीस और चार, ३४।

प्रा० चौंधियाना—क्रि०अ० घबराना, व्याकुल होना, डरना, अचंभे में होना, तिरमिराना।

प्रा० चौंसर } (सं० चतुश्शारिः
चौसर } चतुः=चार, शारि=गोटी) पु० एक खेल का नाम जो पांसों से खेला जाताहै, चौपड़, २ फूलों की माला।

प्रा० चौक—पु० बाजार, हाट, गुदड़ी, आटेकीबेदी, पेठ २ नगर का चौराहा, चौहट्टा, २ आंगन, अंगना।

प्रा० चौकड़ा-पु० दो मोतीका बाला।

प्रा० चौकड़ी—स्त्री० कूद, फांद, फलांग, उछल।

प्रा० चौकड़ी भरना-बोल० कूदना, फांदना, उछलना।

प्रा० चौकड़ी भूलना-बोल० मोह जाना, मोह में आना, भूलासा रहजाना, होश ठीक न रहना,

प्रा० चौकड़ी मार बैठना-बोल० उकड़ू बैठना, सिमट बैठना, सुकड़ बैठना, चार जानू बैठना।

प्रा० चौकन्ना—गु० सावधान, सुचेत, चौकस, फुर्तीला।

प्रा० चौकस—गु० सावधान, सुचेत, चलाक, फुर्तीला।

प्रा० चौका-पु० रसोई, वह जगह जहां हिन्दू खाना पकाते और खाते हैं, २ चौकोनी चीज़, चौकोनी जगह, ३ आगे के चार दांत।

प्रा० चौकी-कुरसी, पीढ़ा, चौकोनी काठकी बनी हुई चीज़, २ रखवाली, चौकसी, पहरा, ३ थाना जहां चौकीदार और पहरादार रहते हैं, ४ एकगहना जिसकोगलेमें पहनतेहैं।

चौकीदार-गु० चौकी देनेवाला, पहरा देनेवाला, पहरुआ।

प्रा० चौकीदारी-स्त्री० चौकीदार का काम, २ चौकीदार की मजदूरी, चौकीदारी, टिकस।

प्रा० चौकीदेना-बोल० रखवाली देना, पहरा देना।

प्रा० चौकीमारना-बोल० चोरी से महसूली वस्तुलाना वा भेजना, घाट मारना, महसूल चुराना।

प्रा० चौकोना } (सं० चतुष्कोण)
चौकोर } गु० चौखूंटा, चार
कोना ।

प्रा० चौखट } (सं० चतुष्काष्ठ) स्त्री०
चौकट } दरवाजे का ढांचा ।

प्रा० चौखूंटा (सं० चतुष्कोण) गु०
चौकोर, चौकोना ।

प्रा० चौगुणा } (सं० चतुर्गुण) गु०
चौगुना } चारगुना, चारबार
लिया हुआ ।

प्रा० चौड़ा—गु० फैलाहुआ, विशाल।

प्रा० चौड़ाचकला—बोल० चिपटा,
फैलाऊ, विस्तृत, फैला हुआ, चौड़ा ।

प्रा० चौतनी—चौगोशिया टोपी ।

प्रा० चौतारा-पु० चारतारका बाजा ।

प्रा० चौताल— स्त्री० एकरागिणी
का नाम ।

प्रा० चौथ (सं० चतुर्थी) स्त्री० चौथी
तिथि, २ (सं० चतुर्थांश) चौथा हि-
स्सा, कर अथवा खिराज जो मरहटे
उगाहा करते थे । [चौथा ।

प्रा० चौथा (सं० चतुर्थ) गु० चारहवां,

प्रा० चौथेपन } (चौथा चारहवां)
चौथापन } पु० बुढ़ापा, मनुष्य
के उमरका चौथा
अथवा सब से पिछला हिस्सा ।

प्रा० चौदस (सं० चतुर्दशी, चतुर्=
चार, दश=दस) स्त्री० चौदहवीं
तिथि चतुर्दशी । [चार, १४ ।

प्रा० चौदह (सं० चतुर्दश) गु० दस और

प्रा० चौदानिया-पु० } (चौ=चार
चौदानी—स्त्री० } दाना)
चार मोती का बाला ।

प्रा० चौधरी—पु० पञ्च, प्रधान, जमीं-
दार की पदवी ।

प्रा० चौपट—गु० उजाड़, बरबाद,
नष्ट, बराबर किया हुआ, चपटा ।

प्रा० चौपटकरना-बोल० उजाड़ना,
नष्ट करना, बरबाद करना, ढहादेना-
विनाश करना, बराबर करना ।

प्रा० चौपड़ (सं० चतुष्पुटी, वा
चतुष्पादिका, चतुर्=चार, पुट=तह-
वा पद पैर) स्त्री० पांसोंकाखेल, २ कप-
ड़ा जिसपर यह खेल खेलाजाताहै ।

प्रा० चौपाई (सं० चतुष्पदी) स्त्री०
चार पद का छन्द ।

प्रा० चौपाड़ (सं० चतुष्पाटिका) पु०
बैठकघर, २ (सं० चतुष्पाद) चौपाया ।

प्रा० चौपाया-(सं० चतुष्पाद) पु०
चारपाया, पशु, जानवर ।

प्रा० चौपाला-(सं० चतुष्पाद) पु०
पालकी, डोली ।

प्रा० चौबारा—(सं० चतुष्पाटिका)
पु० ऊपर का कोठा, उसारा ।

प्रा० चौबीस-(सं० चतुर्विंशति) गु०
बीस और चार ।

प्रा० चौबे—(सं० चतुर्वेदी) पु० ब्राह्मण जो चारों वेद जानता हो, अब एक जाति के ब्राह्मणों को चौबे कहते हैं चाहे वेद पढ़े हों वा न पढ़े हों ।

प्रा० चौमासा—(सं० चतुर्मास, चतुर्=चार, मास=महीना) पु० बरसात, वर्षाऋतु, असाढ़ से कुँवार तक के चार महीने ।

प्रा० चौमुखा—(सं० चतुर्मुख) पु० चौमुहा दीया ।

प्रा० चौमुखी—(सं० चतुर्मुखी) स्त्री० देवी, चारमुहँवाली दुर्गा, २ रुद्राक्ष का दाना ।

प्रा० चौरस—(चौ=चार, रस=बराबर) गु० चारों ओर से बराबर, समान, सब ओर से बराबर ।

प्रा० चौरानबे—(सं० चतुर्नवति, चतुर्=चार, नवति=नब्बे) गु० नब्बे और चार ।

प्रा० चौरासी—(सं० चतुरशीति, चतुर्=चार, अशीति=अस्सी) गु० अस्सी और चार ।

प्रा० चौवन } (सं० चतुष्पञ्चाशत्)
चव्वन } गु० पचास और चार ।

प्रा० चौवाई—(सं० चतुर्वायु, चतुर्=चार, वायु=हवा, अर्थात् चारों दिशा से हवा का बहना) स्त्री० आंधी, अन्धड़, झक्कड़ ।

प्रा० चौसठ—(सं० चतुःषष्टि) गु० साठ और चार ।

प्रा० चौहटा } (सं० चतुर्हट्ट, चतुर्
चौहट्टा } =चार, हट्ट=हाट) पु० चौराहा, चौक, चौराहा बाजार ।

प्रा० चौहत्तर—(सं० चतुःसप्तति) गु० सत्तर और चार ।

प्रा० चौहान—(सं० चाहुवान) पु० राजपूतों की एकजाति ।

सं० च्युत—(च्युत=गिरना) कृ० पु० च्युत, गिरा, टपकपड़ा, पतित, आर्द्र, नष्ट ।

सं० च्युति—(च्युत+इ) भा० स्त्री० पतन, हानि, खिन्नता ।

—०—

छ

सं० छ—(छो=काटना) गु० काटने वाला, २ निर्मल, ३ चंचल, छेदक, नाशक ।

प्रा० छः—(सं० षट्) गु० दुगुना तीन ६ ।

प्रा० छई—(सं० क्षय) स्त्री० एक रोग का नाम ।

प्रा० छई—(सं० छदिः, छद्=ढकना) स्त्री० नाव का छप्पर ।

प्रा० छकड़ा—(सं० शकट) गु० गाड़ी रहड़ू, अरावा ।

प्रा० छकना—क्रि० अ० अघाना, तृप्त होना, संतुष्ट होना, २ व्याकुल होना, अचंभे में होना, ३ मस्त होना ।

प्रा० छकाना—क्रि० स० अघाना, तृप्त करना, २ ठीक करना, सीधा करना ।

प्रा० छका-(सं० षट्क, षष्=छः) पु० छः का समूह, २ एक तरहका पिंजरा ।

प्रा० छकापंजाकरना-बोल० ठगना, छलना, धोखादेना, जुआ खेलना ।

प्रा०छकेछूटजाना-बोल० घबराना, हका बका रहजाना ।

सं० छग, छगल (छो=काटना) पु० बकरा, छाग, भेड़ा, स्त्री० भेड़ी, बकरी ।

प्रा० छटाक-(सं० षट्टङ्क, षट्=छः टङ्क एक प्रकार का तोल) स्त्री० सेर का सोलहवां भाग, कनवा ।

सं० छटा-(छो=काटना) स्त्री० चमक भड़क, शोभा, दमक, चमचमाहट, उजाला ।

सं० छटाफल-पु० नारियल वृक्ष, [तालवृक्ष ।

सं० छटाभा-स्त्री० बिजली ।

प्रा० छट्ठी, छठ (सं०षष्ठी) स्त्री० पक्षकी छठवीं तिथि ।

प्रा० छट्ठी, छठी (सं० षष्ठी) स्त्री० छठवीं, लड़काके पैदाहोने के पीछे छठे दिनकी रीति ।

प्रा० छड़ा-पु० पैरका गहना, मोती की लड़ी, गु० अकेला ।

प्रा० छड़ी-स्त्री० बेत, हाथ में रखने की लकड़ी, २ फूलों का गुच्छा ।

प्रा० छण-(सं० क्षण) स्त्री० पल, दम, क्षण, छिन ।

प्रा० छत, छात (सं० छत्र, छद्=ढकना) स्त्री० घर के ऊपर का पटाव, गच, पु० फोड़ा, घाव ।

प्रा० छत्ता-(सं० छत्र, छद्=ढकना) पु० मधुमक्खियों का छाता ।

प्रा० छत्तीस-(सं० षट्त्रिंशत्, षट्=छः, त्रिंशत्=तीस) गु० तीस और छः ।

सं० छत्र- (छद्=ढकना) पु० राजाओं के शिरपर रखने का छाता, छतरी ।

सं० छत्रक-(छत्र)क० पु० भुइँफोर, कुकुरमुत्ता, धरती का फूल ।

सं० छत्रधारी-(छत्र=छाता, धारी =रखनेवाला, धृ=रखना) क० पु० राजा, महाराज, छत्रपति ।

सं० छत्रपति-(छत्र=छाता, पति= मालिक) पु० राजा, महाराज, छत्रधारी ।

सं० छत्रभङ्ग-(छत्र=छाता, भङ्ग=टूटना) पु० पति का मरना, रंडापा, विधवापन, २ राजा का मरण ।

प्रा० छत्री-(सं० छत्र) स्त्री० छोटा छाता, २ चंदवा, ३ बैठनेकी जगह ।

प्रा० छत्री-(सं० क्षत्री) पु० राजपूत ।

सं० छत्वर-पु० गृह, कुंज, कोठरी, खोड़र ।

सं० छद-(छद=ढापना) पु० पंख, आच्छादन, पत्ताढांक, तमालवृक्ष ।

सं० छदन-भा० पु० पत्ता, आच्छादन, छान, छत, मियान, गिलाफ़ ।

प्रा० छदाम-स्त्री० पैसेका चौथा भाग, दो दमड़ी, ६ दाम।

सं० छद्मन-पु० कपट, छप्पर, पत्ता, अपदेश या हुज्जत, उजर, दलील।

प्रा० छनाक-पु० गर्म चीज पर पानी के गिरने का शब्द।

सं० छन्द-(छदि=ढकना, और चाहना) पु० श्लोक, काव्य, पद्य, मात्राओं का मिलाव, २ वेद, ३ वेदका छंद जैसे गायत्री आदि, ४ इच्छा, अभिलाषा।

सं० छन्दपातन-(छन्द+पातन, पत्=गिरना) पु० कपट, कुटिलता, मक्कर, बहाना।

सं० छन्दोग-पु० कवि, सामवेद का गानकर्ता, वेदपाठी।

सं० छन्न-र्म० पु० एकान्त, गुप्त, छिपा हुआ, रूखा।

प्रा० छन्ना-पु० पानी छाननेका कपड़ा, कोई चीज छाननेका कपड़ा।

प्रा० छपना-क्रि० अ० छापा होना, मुद्रित होना।

प्रा० छपाई-स्त्री० छापनेकी मजदूरी, छापने का काम।

प्रा० छप्पन-(सं० षट् पञ्चाशत्, षट्=छः पञ्चाशत्=पचास) गु० पचास और छः।

प्रा० छप्पय-(सं० षट्पदी, षट्=छः पद=चरण) छः पदका छन्द।

प्रा० छप्पर-पु० फूस की छावनी।

प्रा० छप्परखट-पु० पलंग, खाट।

प्रा० छबीला-गु० सुन्दर, सुहावना।

प्रा० छब्बीस-(षट्विंशति, षष्=छः विंशति=बीस) गु० बीस और छः।

प्रा० छयासठ, छियासठ-(सं० षट्+षष्टि, षट्=छः षष्टि=साठ) गु० साठ और छः।

प्रा० छरे-गु० छर्रे, चुने सुबुक।

सं० छर्द=(छर्द=वमन करना, कय करना) पु० वमन, कय।

सं० छर्दन-(छर्द+अन) भा० पु० छांट, वमन, कय, अलंबुष।

सं० छर्दि-स्त्री० छांट, कय।

प्रा० छर्रा-पु० छोटी २ गोली।

सं० छल-(छो=काटना) पु० कपट, धोखा, फरेब, बहाना, मिष, जाल, ठगाई। [छलछिद्र।

प्रा० छलबल-बोल० कपट, धोखा,

प्रा० छलकना-(सं० उच्चलन, उत्=ऊपर, चल्=चलना) क्रि० अ० उमंडना, ढलकना, बहचलना, फूट निकलना, बोरना।

सं० छलछिद्र-(छल+छिद्र) पु० छलबल, कपट, धोखा।

सं० छलविनय-स्त्री० कपटसे बड़ाई, फरेब के साथ तआरीफ।

प्रा० छलांग-स्त्री० फलांग, फांद, कूदफांद ।

प्रा० छलांगें मारना-बोल० कूदना, उछलना, झपटना, कुलाच मारना ।

प्रा० छलिया } (सं० छल) गु०
छली } कपटी, दग़ाबाज, धोखा देनेवाला ।

प्रा० छल्ला-पु० मुंदरी, अंगूठी ।

सं० छवि (छो=काटना, अंधेरेको) स्त्री० शोभा, सुन्दरता, चमक, प्रकाश ।

प्रा० छां-(सं० छाया) स्त्री० छाया, आड़, प्रतिबिम्ब, परछाईं ।

प्रा० छांटना-क्रि० स० वमनकरना, उलटी करना, कै करना, २ अनाज से भूसा अलग करना, फटकना, ३ काटना, कतरना, काट कूट करना, ४ सँवारना, साफ़ करना, ५ चुनलेना, पसंद करना ।

प्रा० छांटकरना-बोल० वमन करना, कै करना ।

प्रा० छांटलेना-बोल० चुन लेना, बराय लेना, पसंद करना ।

प्रा० छाड़ना-क्रि० स० उगेलना, निकालना, २ छोड़ना ।

प्रा० छांव } (सं० छाया) स्त्री०
छांह } छाया, छां, प्रतिबिम्ब, परछाईं ।

प्रा० छाक-पु० कलेवा, जलखाना ।

सं० छाग } (छो=काटना) पु० ब-
छागल } करा, खस्सी ।

प्रा० छाछ }
छाछी } स्त्री० मट्ठा, मही ।

प्रा० छाज-पु० सूप, डगरा ।

प्रा० छाजना-(सं० छदन, छद्=ढकना) क्रि० स० छाना, २ फबना, सोहना, छजना, खुलना, योग्य होना ।

प्रा० छांड़ना-क्रि० स० छोड़ना, त्यागना, तजना ।

प्रा० छाता-(सं० छत्र) पु० छतरी, २ मधुमक्खियों का छत्ता ।

प्रा० छाती-स्त्री० हिरदा, उर, वक्षस्थल, २ चूंची, कुच ।

प्रा० छातीभर-बोल० छाती जितना ऊंचा, छाती तक ।

प्रा० छाती भर आना-बोल० रोना, आंसू ढालना, मोह आना ।

प्रा० छाती पर पत्थर रखना-बोल० संतोष करना, सबर करना, धीरज धरना, सहलेना ।

प्रा० छाती पर मूंग दलना-बोल० किसी के सामने ऐसा काम करना कि जिस से वह दुखपावे, किसीकोकुढ़ाना, खिझाना, सताना ।

प्रा० छाती फटना-बोल० दुख अथवा फ़िक्रसे घबराना, गमखाना ।

प्रा० छातीपीटना-बोल० रोना, विलापकरना, शोककरना, बिलखना।

प्रा० छाती ठोकना-बोल० साहस देना, हिम्मत बांधना, भरोसादेना।

प्रा० छाती ठंढी होना-बोल० प्रसन्न होना, बहुतही बहुत आनंदित होना।

प्रा० छातीकापत्थर } बोल० दुःखदायी, कंटक।
छातीकाजम }

प्रा० छाती खोलकर मिलना-बोल० सच्चे मनसे मिलना, सरलता से मिलना, निष्कपट होकर मिलना।

प्रा० छातीलगाना } बोल० प्यारकरना, दुलारना।
छातीसेलगाना }

प्रा० छाती निकालकर चलना-बोल० अकड़ कर चलना, ऐंठकर चलना।

सं० छात्र- (छद्=ढकना, गुरुके दोषोंको) पु० विद्यार्थी, शिष्य, चेला।

सं० छात्रवृत्ति-स्त्री० वज़ीफ़ा, पारितोषिक, स्कालरशिप।

सं० छादन-(छद्=ढकना) पु० ढकने का कपड़ा, ढकना, २ पत्ता।

प्रा० छान-(सं० छादन) स्त्री० छप्पर, ठठरी।

प्रा० छानबिनान } बोल० खोज, ढूंढ़, परीक्षा, विचार, विवेचना।
छानबीन }

प्रा० छानबे } (सं० षण्णवति) गु० नब्बे और छः।
छियानबे }

प्रा० छानन-(छानना) पु० चोकर, भूसी, तुस, बूर।

प्रा० छाना-(सं० छादन, छद्=ढकना) क्रि० स० छाया करना, पाटना, ढकना।

प्रा० छाजाना-बोल० ढकजाना, छाया होना, पटजाना, घिरजाना,

प्रा० छालेना-बोल० अंधेराकरना, ढकलेना।

प्रा० छान्ना-क्रि० स० निखारना, गारना, झारना, चालना, फटकना २ खोजना, ढूंढ़ना, ढूँढ़ मारना।

प्रा० छानमारना-बोल० खोजना, ढूँढ़ना, ढूँढ़मारना।

प्रा० छाप (छापना) स्त्री० ठप्पा, मुद्रा, छापीहुई वस्तु, अंक, चिह्न, २ मोहर, ३ अंगुलीमें पहनने का गहना।

प्रा० छापना-क्रि० स० छापाकरना, मुद्रित करना।

प्रा० छापा-(छापना) पु० ठप्पा, मुद्रा, छापी हुई वस्तु, अंक, चिह्न, २ शंख, चक्र, गदा, पद्म आदिका चिह्न जिसको वैष्णवलोग अपने शरीर पर लगाते हैं।

प्रा० फ़ा० छापाखाना-पु० छपनेका घर, छापाकी जगह, यन्त्रालय, मतबअ, प्रिंटिंगप्रेस।

सं०छाया–(छो=काटना, अर्थात् उजालेको रोकना) स्त्री० छांह, छांव, छां, परछाईं, प्रतिबिम्ब, २ अंधेरा, ३ भूत, प्रेत, ४ शनैश्चर की माता, सूर्य्य की स्त्री ।

सं० छायापथ–पु० आकाश, पोला, अवकाश, आसमान ।

सं० छायामृत–(छाया+अमृत) पु० चन्द्रमा ।

प्रा० छार–(सं० क्षार) स्त्री० राख, भस्म, धूलि, खाक ।

प्रा० छाल–(सं० खल्ल, वा छल्ली, छद्=ढकना) स्त्री० छिलका, बकला, पोस्त ।

प्रा० छाला–पु० फुनसी, फुंसी, फफोला, फुलका ।

प्रा० छालिया–स्त्री० एक प्रकारकी सुपारी ।

प्रा०छावनी–(छाना) स्त्री० पलटन के रहनेकी जगह, सिपाहियों के रहने के घर, छाने का काम ।

प्रा० छिंगुली-स्त्री० छोटी अंगुली, कन अंगुली ।

प्रा० छिछला-गु० उथला, पैतला, अगंभीर ।

प्रा० छिछोड़ा-पु० हलका, ओछा, चिबिल्ला ।

प्रा० छिटकना-क्रि० अ० बिखरना, फैलना, छितरना, बिथरना ।

प्रा० छिटकनाचादनीका-बोल० चांदनी का फैलना ।

प्रा०छिटकाना-क्रि० स० बिखेरना, फैलाना, छितराना, बिथराना ।

प्रा० छिड़कना–क्रि० स० छींटना, तरकरना, सींचना ।

प्रा०छिड़काव-(छिड़कना) पु० पानी का छिड़कना, सिंचाई, सींचना ।

प्रा० छितरना-क्रि० अ० बिखरना, फैलना, पसरना, छिटकना, बिथरना ।

प्रा०छिति-(सं० क्षिति) स्त्री० धरती, जमीन, पृथ्वी, भूमि, धरणी ।

प्रा० छिदना–(सं० छेदन, छिद्=काटना) क्रि० अ० बिंधना, पार होना, धसना, चुभना ।

सं०छिद्र-(छिद्=भेदना, वा छिद्=छेदना) पु० छेद, गढा, रंध्र, विवर बिल, २ दोष, दूषण ।

सं०छिद्रित-(छिद्र+इत) कर्म० पु० बेधित, छेद किया गया ।

प्रा० छिन-(सं० क्षण) स्त्री० पल, क्षण, निमेष ।

प्रा० छिनभरमें-बोल० एक पल में पल भर में ।

प्रा० छिनाल-स्त्री० बेश्या, व्यभिचारिणी ।

प्रा०छिनाला–(छिनाल) पु० छिनालपन, व्यभिचार ।

सं० छिन्न-(छिद्=काटना) कर्म० टूटा हुआ, खंडित, भाग किया हुआ, टुकड़े किया हुआ ।

सं० छिन्नभिन्न (छिन्न+भिन्न) कर्म०